ॐ श्री भीडभञ्जन महादेव पञ्चाङ्गम् ॐ

विक्रम सम्वत् 2083 * ईस्वी सन् 2026–2027

'रौद्र' नाम सम्वत्सर

राजा – गुरु **मन्त्री – मंगल**

तपोनिष्ठ परमादरणीय 108 श्रीमत्स्वामी
विश्वात्मानन्द गिरि जी महाराज
संस्थापक व अध्यक्ष - तत्त्वमसि आश्रम

❊ ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः॥ ❊

❊ ॥ ॐ श्री भीडभञ्जन महादेवाय नमः॥ ❊

❊ ॥ ॐ श्री सदुरुदेवाय नमः॥ ❊

ॐ श्री भीडभञ्जन महादेव पञ्चाङ्गम्

'रौद्र' नाम सम्वत्सर

राजा – गुरु **मन्त्री – मंगल**

विक्रम सम्वत् 2083, शाङ्कराब्द 1239

कलिवर्ष 5127, शक सम्वत् 1948

ईस्वी सन् 2026–2027

'रौद्र' नामक इस सम्वत्सर के दशाधिकारी

राजा–गुरु, मन्त्री–मंगल, सस्येश–गुरु, धान्येश–बुध,

मेघेश–चन्द्र, रसेश–शनि, नीरसेश–गुरु,

फलेश–चन्द्र, धनेश–गुरु, दुर्गेश–चन्द्र

तत्त्वमसि आश्रम

पीपलवाली गली, रानी गली,

भूपतवाला, हरिद्वार–249410

उत्तराखण्ड, भारत

www.tattvamasi-ashram.org

सम्पादक – स्वामी परमानन्द गिरि

संकलनकर्ता – आचार्य रवीन्द्र किशोर शास्त्री

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पूज्य महाराज श्री के आशीर्वचन

अक्षय अन्नक्षेत्र सेवा

हमारे शास्त्रों में "अन्नदानं परं दानं..." अर्थात् अन्नदान को अन्य दानों की अपेक्षा महान कहा गया है, तथा वेदों में अन्यत्र भी कहा हैं -

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेता: सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।

जो बुद्धिहीन व्यक्ति केवल स्वयं के लिए ही खाता है और किसी को अन्न नहीं देता, उसका अन्न व्यर्थ होता है; वह न पत्नी, न मित्र, किसी का हित कर पाता है, केवल अपने पाप को बढ़ाता है।

भगवान् भीड़भञ्जन महादेव की प्रेरणा से आश्रम के भक्तों द्वारा पिछले दो वर्षों से अक्षय अन्नक्षेत्र सेवा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें प्रतिदिन प्रातःकाल लगभग 150 साधुओं के लिए सादगीपूर्ण, सात्त्विक और पौष्टिक अन्न परोसा जाता है। भोजन के साथ यह भावना की जाती है कि प्रत्येक साधु हमारे लिए चलती-फिरती देवमूर्ति हैं, जिनकी सेवा करना ही हमारा परम सौभाग्य और कर्तव्य है।

अन्नदान के साथ-साथ आश्रम द्वारा प्रत्येक साधु को विनम्रता से यथाशक्ति दक्षिणा भी प्रदान की जाती है। यह दक्षिणा केवल धनराशि न होकर, गुरु-परंपरा के प्रति कृतज्ञता और संत समाज के प्रति सम्मान का प्रतीक मानी जाती है। श्रद्धालु भक्तगण भी अपनी मनोकामनाओं और संकल्पों के साथ अन्न तथा दक्षिणा में सहयोग करते हैं, जिससे आश्रम में सेवा, त्याग और करुणा का सतत वातावरण बना रहता है।

इच्छित भक्तगण इस सेवा में सहयोग हेतु आश्रम में सम्पर्क कर सकते हैं।

॥ इत्यों शम् ॥

विषय सूची

पूज्य महाराज श्री के आशीर्वचन 2
निर्देश 5
सम्वत् एवं दशाधिकारी फल 6-10
द्वादश राशि फल 11-14
प्रमुख व्रत-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ 15-19
संदिग्ध प्रमुख व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय 20-22
ज्येष्ठ अधिक मास 23
हरिद्वार अर्धकुम्भ मेला 24
श्री अम्बे जी की आरती 25-26
महिषासुरमर्दिनी-स्तोत्रम् 27-29
श्री शिव जी की आरती 30
श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम् 31-36
रुद्राष्टकम् 37
बिल्वाष्टकम् 38
लिङ्गाष्टकम् 39
श्री शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् एवं द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणम् 40
शिवताण्डवस्तोत्रम् 41
श्री गङ्गाष्टकम् 42
वर्गीकृत तिथि सूचना (दिनाङ्क अनुसार) 43
तिथि वारादि पञ्चाङ्ग 44-95
ग्रह राशिगोचर 96
शुभ व्यापार आरम्भ मुहूर्त्त 97-98
यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त्त 98
चूडाकर्म मुहूर्त्त 99
शुभ विवाह मुहूर्त्त 100-107
गृहारम्भ मुहूर्त्त 108
नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त 109
राहु काल / यम काल / सर्वार्थ सिद्धि योग / अमृत सिद्धि योग 110
सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल 111-113
गुप्त नवरात्रि / कलंक चौथ चन्द्रदर्शन दोषनिवारक मन्त्र 113
अमृत सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल 114
गण्डमूल के नक्षत्र / गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल 115-116
शनि की साढ़ेसाती, ढ़ैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार 116-117
कुम्भ एवं मकर राशि में शनि का गोचर फल 117-118

विषय सूची

पाद (पाया) फल विचार एवं शनि शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय 119
नामाक्षरानुसार नक्षत्र राशिज्ञान चक्र 120
यात्रा विचार प्रकरण / राहु वास चक्र 121
दिक्शूल परिहार / यात्रा में चन्द्रमा विचार 122
सूर्योदय से चौघड़िया दिन के प्रति अंश में यात्रा का फल 122
सूर्यास्त से चौघड़िया रात्रि के प्रति अंश में यात्रा का फल 123
भद्रा लोक वास / भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल 124-126
यज्ञोपवीत धारण करने एवं त्यागने का मन्त्र 126
पञ्चक नक्षत्र विचार / पञ्चकारम्भ एवं समाप्तिकाल 127
दीपावली (श्री महालक्ष्मी पूजन) 128-129
अथ संक्षिप्त-सन्ध्योपासना-विधिः 130-133
देवपूजा सम्बन्ध में कुछ शास्त्रोक्त बातें 134-137
विविध द्रव्यों द्वारा शिवपूजन से अभीष्ट प्राप्ति 138-139
नव ग्रहों के जपार्थ वैदिक मन्त्र 139
51 शक्तिपीठ 140-144
18 पुराण (एक परिचय) / 84 लाख योनियाँ 145
भारत के चार धाम / उत्तराखण्ड के चार धाम 145
14 लोक / सप्तर्षि / दशावतार 146
षोडश संस्कार (एक संक्षिप्त परिचय) 147
आध्यात्मिक जीवन में गुरु का महत्त्व 148
गुरु से मन्त्र ग्रहण तथा जप विधि (संक्षिप्त) 148
होमादि में अग्निवास 149
होमादि में शिववास 150
चतुर्युगों की व्यवस्था का वर्णन 151
आपको किस दिन क्या करना शुभ है 152
अन्य विविध मुहूर्त 153-154
ग्रह राशि सम्बन्धी रत्न विचार 155
ग्रह कृत अनिष्ट फल निवारण हेतु सूर्यादि ग्रहों के दानादि पदार्थ 156
ग्रह दोष निवारण हेतु बीज मंत्र 157
नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम् / नवग्रहस्तोत्रम् 158
वास्तु प्रकरण 159-162
प्राकृतिक उपचार 163-167
मेथी के गुणकारी लाभ 167

निर्देश

- यह पञ्चाङ्ग 30:44 अक्षांश के आधार पर है। तिथि, नक्षत्र की समाप्ति का काल घण्टा, मिनट के अनुसार है।
- दोपहर 12 बजे के बाद 1 बजे का मान पाठकों की सुविधा के लिये 13 दिया गया है। उसी प्रकार दोपहर 2 बजे के लिये 14।
- जहाँ पर 24, 25, 26 आदि अंक लिखे हैं, वहाँ 24 रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26 को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंको में भी 24 घटाकर अर्धरात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक **भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार पिछली तारीख का दिन ही माना जाता है।**
- तिथि एवं नक्षत्र का समय समाप्ति-काल में दिया गया है।
- करण तथा योग प्रातःकालीन सूर्योदय के ही लिखे गये हैं।
- पूर्णिमा के लिये 15 और अमावस्या के लिये 30 लिखा गया है, गते को सौरमास की प्रतिष्ठा जानें।
- भद्रा तथा सर्वार्थ सिद्धियोग पर्वनाम में दिये गये हैं। कहीं-कहीं उनका मान 24 घण्टा 30 मिनट लिखा हो तो उसका अर्थ हैं रात्रि के 12 बजकर 30 मिनट।
- मुहूर्त्त जिस दिन के शुभ हैं उसी दिन के दिये गये हैं।
- **हवन करते समय अग्निवास का बड़ा महत्त्व है तथा जिस दिन अग्निवास पृथ्वी पर हो उसी दिन हवन किया जाता है अतः जिस दिन अग्निवास पृथ्वी पर है उस दिन के पर्वनाम में का चिह्न दिया गया है।**

❊ सम्वत् एवं दशाधिकारी फल वि.सं. 2083 ❊
॥ सम्वत्सर – रौद्र, राजा – गुरु, मन्त्री – मंगल ॥

नव विक्रमी संवत् 2083 के आरम्भ (19 मार्च, 2026 ई.) में बार्हस्पत्यमान (गुरुमान) से शिव (रुद्र) विंशति के अन्तर्गत '**एकादश युग**' का चतुर्थ '**रौद्र**' नामक (सम्वत्सरों में 54वाँ) सम्वत्सर का प्रारम्भ हो चुका होगा। (रौद्र-संवत्सर का आरम्भ लगभग 11 मार्च, 2026 ई.से हो चुका होगा)

संवत् 2083 मध्ये मेषऽर्के समय संवत्सर के भुक्त मासादि $1/03^{0}/35'/25''$, भोग्य मास दिनादि $10/26^{0}/24'/35''$ हैं। अर्थात् '**रौद्र**' नामक सम्वत्सर का काल लगभग 6 मार्च, 2027 ई. तक रहेगा।

ध्यान दें, इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि का क्षय होने से '**रौद्र**' नामक' नव विक्रमी संवत् का प्रवेश 19 मार्च, 2026 ई., वृहस्पतिवार(6 चैत्र प्रविष्टे), उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, शुक्ल-योग कालीन मीन लग्न में होगा। शास्त्र एवं प्रचलित परम्परानुसार नवसंवत् का प्रारम्भ तथा राजा का निर्णय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वार-अनुसार ही किया जाता है। '**गुरुवार**' से नवसंवत् का प्रारम्भ होने के कारण आगामी वर्ष (संवत्) का राजा '**गुरु**' होगा। संवत्सर का निर्णय भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (संवत् के आरम्भ) में विद्यमान् सम्वत्सर को ही लिया जाता है। तदनुसार '**रौद्र**' नामक नव वि. संवत् 2083 (जोकि 11 मार्च, 2026 ई. से प्रारम्भ हो चुका है) तथा चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 19 मार्च, गुरुवार, 2026 ई. (6 चैत्र, प्रवि.) उत्तराभाद्रपद नक्षत्रकालीन होगा।

चैत्र (वासन्त) नवरात्र अर्थात् 19 मार्च, गुरुवार से जप, पाठ, पूजन, दान, व्रतानुष्ठान यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठान कृत्यों के आदि में, संकल्पादि कार्यों में 6 मार्च, 2027 ई. तक '**रौद्र**' नामक नव संवत्सर का प्रयोग होगा। ता. 7 मार्च, 2027 ई. के बाद सभी प्रकार के संकल्प कार्यों में संवतारम्भे '**रौद्र**' परं वर्तमाने '**दुर्मति**' नाम सम्वत्सरे का प्रयोग (उच्चारण) करना चाहिए। '**रौद्र**' नामक सम्वत्सर का फल शास्त्रों में इस प्रकार वर्णित है-

मध्यसस्या भवेद्धात्री सामान्येन प्रवर्तनम्। दुर्मतीनां महत्वं स्याद् दुर्मतौ वर्णसंक्रमः॥

अर्थात् '**रौद्र**' नामक सम्वत्सर में वर्षा कम होती है। फलतः कम एवं प्रतिकूल वर्षा होने से कृषि उत्पादन में कमी रहती है तथा धान्यादि फसलों के मूल्यों में विशेष वृद्धि होगी। जिसके प्रभावस्वरूप महँगाई में विशेष वृद्धि होगी। राजा अर्थात् राष्ट्राध्यक्ष एवं मन्त्री निर्दयी होकर जनविरोधी निर्णय एवं बातें करेंगे। पृथ्वी पर क्लिष्ट रोग अधिक होंगे। कहीं छत्रभंग अर्थात् शासन-परिवर्तन हो। विभिन्न देशों के राष्ट्रध्यक्षों में वाद-विवाद एवं विरोध

भावना रहे। जंगलों या खलियानों में आग लगने से भयंकर हानि हो।

❊ रोहिणी का वास- वि. संवत् 2083 में मेष संक्रान्ति का प्रवेश **'शतभिषा नक्षत्र'** नक्षत्रकालीन हुआ है। अतएव **'वर्षप्रबोध'** ग्रन्थानुसार रोहिणी का वास **'समुद्र'** में होगा। शास्त्र में इसका फल इस प्रकार लिखा गया है-

यदा पयोनिधि स्थले गतो विरंचिभं तदा। अतीव वर्षणं भवेत् समस्त धान्य वर्द्धनम्॥

अर्थात् जिस वर्ष रोहिणी का वास **'समुद्र'** पर हो तो उस वर्ष वर्षा अधिक होती है। गेहूँ, धान्यादि सभी की पैदावार भी अच्छी होगी। परन्तु मध्य भारत (जैसे-विहार, मध्य प्रदेश,उड़ीसा, उ.प्रदेश आदि) के कुछ स्थलों पर बाढ़ आदि प्रकोपों के कारण जन, धन, कृषि आदि फसलों की हानि होने के संकेत हैं। परन्तु देश के अन्य भागों में धान्य, मक्का, चावल, तृण, फल-फूलों आदि की पैदावार अच्छी होगी।

❊ संवत् (समय) का वास- रोहिणी का वास **'समुद्र'** पर होने से संवत् का वास 'माली' के घर में होगा। फलस्वरूप वर्षा विपुल मात्रा में होगी। ईख, धान्य, चावल, तृण, घास, फल व फूलों की पैदावार अच्छी होगी। पर्वतीय प्रदेशों में कृषि व फूलों का उत्पादन अच्छा होगा। परन्तु इन सबके बावजूद सब प्रकार के कृषि उत्पाद, घी, तैल, दैनिक उपभोग्य वस्तुएँ, दालें, दूध, तथा सोना, ताँबा, चाँदी आदि धातुएँ तेज भाव में होंगी।

मालिने प्रचुरा वृष्टिः। सर्ववस्तु समर्घं स्यान्मालाकारगृहे॥

❊ संवत् (संवत्सर) का वाहन- वि. संवत् 2083 का राजा **'गुरु'** होने से सम्वत् का वाहन **'चातक'** के घर होगा। इसके प्रभावस्वरूप देश के कुछ भागों में वर्षा की कमी रहेगी। कहीं अनावृष्टि के कारण दुर्भिक्ष, सूखा, पेयजल की कमी रहेगी। विशेषकर देश के पूर्वी, पश्चिमी एवं दक्षिणी क्षेत्र के कुछ भागों में उपर्युक्त वर्षा की कमी एवं जलापूर्ति की कमी होने से कृषक वर्ग व सामान्य लोग परेशान व व्याकुल होंगे। सर्वप्रकार के खाद्यान्न, तिल, तेल, ईख, फल-फूल, सब्जियों के मूल्यों में अत्यधिक तेजी होने से सामान्य लोग व्याकुल होंगे।

(1) राजा गुरु का फल -

गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्च धेनवः।
यजन्ति विप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवः सर्वजनेषु वर्तते॥

अर्थात् संवत् का राजा **'गुरु'** (बृहस्पति) हो, तो उस वर्ष कृषि/फसलों के लिए पर्याप्त वर्षा होगी। गाय-भैंस आदि चौपाय समुचित मात्रा में दूध देंगे। ब्राह्मण एवं धर्मपरायण लोग यज्ञ, होमादि शुभ कार्यों में संलग्न होंगे। संभ्रान्त एवं उच्चवर्ग के लोग

उत्सवों में व्यस्त रहेंगे। व्यापार के लिए भी अनुकूल वातावरण रहे। नए उपभोक्ता पदार्थों के बाजारों की खोज, नए-नए वाहनों का उत्पादन होगा। वाहन व ऋण-बाजार में बड़ी प्रतिस्पर्द्धा भी रहेगी। अच्छी वर्षा व आर्थिक उन्नति होने से लोगों की क्रयशक्ति भी बढ़ेगी। शासन तन्त्र ठीक चलता है। विरोधी राष्ट्रों के मध्य भी शान्ति वार्ताएँ समायोजित होंगी। अनाज व कृषि का उत्पादन तथा मौसमी फलों की पैदावार अच्छी होगी।

(2) मन्त्री मंगल का फल -

अवनिजो ननु मन्त्रिकतां गतो भवति दस्युगदादिज वेदना।
जनपदेषु जयः सुख संचयो न बहुगोषु पयो द्विज कर्म च॥

अर्थात् संवत् का मन्त्री '**मंगल**' हो, तो उस वर्ष देश में जनता चोरों, लुटेरों, तस्करों आदि के आतंक एवं विविध रोगों के कारण परेशान एवं पीड़ित रहे। अग्निकाण्ड, दुर्घटनाएं एवं हिंसक घटनाएं अधिक हों। सामान्यतः वातावरण अशान्त रहे। अधिकांश लोग सुख-सम्पन्नता की आकांक्षा से महानगरों की ओर जाने में अग्रसर होंगे। देश के कुछ विशेष (सीमित) भागों (क्षेत्रों) में ही जनता सुखी रहे। गाय, भैंस आदि के दूध में कमी होगी। ब्राह्मण लोग यज्ञ, कर्मकाण्ड आदि धार्मिक कृत्यों में कम प्रवृत्त हों। सोना, तांबा, पीतल, जूट-पटसन, लाख, लाल-मिर्च आदि लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज भाव होंगी।

(3) सस्येश गुरु का फल -

कणपतौ सुरराज पुरोहिते सकल सौख्यकरः श्रुतिपूर्वकः।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहुनि वसूनि वै॥

अर्थात् गुरु (बृहस्पति) सस्येश हो, तो वेदों द्वारा निर्धारित धर्म-मार्ग का अनुसरण करने से ही लोगों को सुख-शान्ति एवं कल्याण की प्राप्ति हो। वर्षा पर्याप्त होगी। गेहूँ, धान्य, ईख, गोरस, दूध, घी एवं फलों आदि की पैदावार अधिक होगी। सर्वप्रकार की कृषि आदि का उत्पादन भी अच्छा होगा। खेतीकर एवं कृषि सम्बन्धी वस्तुओं का व्यवसाय करने वाले व्यापारी अच्छा मुनाफा प्राप्त कर सकेंगे। धनसमृद्धि से जन-जीवन आनन्दित रहे।

(4) धान्येश बुध का फल -

बहुसस्य-युता पृथ्वी रसानां च महर्घता।
नीतियुक्ताः सदा भूपाः बुधे धान्याधिपि सति॥

अर्थात् जिस वर्ष धान्यपति '**बुध**' हो, उस वर्ष अच्छी वर्षा होने से धान्यादि का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में हो, परन्तु सभी प्रकार के रसादि पदार्थों (दूध, गुड़, तेल, ऑयल, आदि) के मूल्यों में विशेष तेजी होगी। शासन-तन्त्र जनानुकूल नीतियां बनायेगी तथा उनका समुचित क्रियान्वयन का प्रयास भी करेगी। वर्ष-प्रबोध अनुसार-'**सैन्धवे**

लाटदेशे च माधवोऽल्पं च वर्षति।' इस वर्ष सिन्ध तथा लाट-प्रदेश (पंजाव, हरियाणा आदि) में अपेक्षाकृत वर्षा की कमी एवं फलस्वरूप कृषि का उत्पादन कम होगा।

(5) मेघेश (वर्षा का स्वामी) चन्द्र का फल -

शशिनि तोयदपे यदि गोमहिष्यज्-खरादिषु दुग्धरसं तदा।
फलवती धन-धान्यवती विविध भोगवती ननु भामिनी॥

अर्थात् -मेघेश (वर्षा का स्वामी) यदि **'चन्द्रमा'** हो, तो गाय, भैस, बकरी, गधी आदि चौपाय अधिक मात्रा में दूध देंगे। उस वर्ष पृथ्वी पर गेहूँ, धान्य, चावल आदि की फसलें अच्छी होंगी। वृक्षों पर फल, फूल आदि अधिक होंगे। पृथ्वी पर विविध प्रकार के उपभोग्य, सुख-साधन एवं ऐश्वर्य के स्रोतों में वृद्धि होगी। स्त्रियों को भी सुख, मान-सम्मान तथा ऐश्वर्य के विभिन्न साधनों की प्राप्ति होगी।

(6) रसेश शनि का फल -

रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः।
अजगवां गजवाजि खरोष्ट्रहा जनपदेषु नरा न रसैर्युताः॥

अर्थात् रसों का स्वामी **'शनि'** होने से वर्ष में अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। भूगर्भ गत जलस्तर भी नीचे की ओर जाएगा। गाय, भैंस, बकरी, हाथी, घोड़े, ऊँट आदि चौपायों की संख्या में कमी हो, इसके फलस्वरूप रसदार वस्तुओं जेसे-ईख, गुड़, चीनी, दूध, घी, मक्खन आदि वस्तुओं की पैदावार में कमी किंवा इन वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी होगी। बेमौसमी एवं प्रतिकूल वर्षा के कारण अनेक क्लिष्ट रोगों से लोग परेशान रहें। गाय, भैंस, घोड़े, हाथी, बकरी आदि चतुष्पदों में रोगादि के कारण प्राणभय हो। अधिकांश लोगों में परस्पर प्रेमभाव की कमी रहे। सामान्यतः लोगों के व्यवहार में बनावटीपन अधिक रहे।

(7) नीरसेश (धातुओं के स्वामी) गुरु का फल -

हरिद्रा पीतवस्तूनि पतिवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा॥

नीरसेश अर्थात् ठोस धातु पदार्थों का स्वामी गुरु (बृहस्पति) होने से हल्दी, पीले वस्त्र, पीतल, सोना (स्वर्ण) आदि पीले वर्ण की वस्तुओं एवं धातुओं के प्रति लोगों की विशेष रुचि एवं आकर्षण रहने से इन वस्तुओं की माँग विशेष अधिक बढ़ जायेगी। फलस्वरूप इनके मूल्यों में भी अत्यधिक वृद्धि होगी। लोगों की अभिरूचि धार्मिक विषयों की ओर एवं पारस्परिक प्रीति तथा सहयोग बढ़ेगा।

(8) फलेश चन्द्र का फल –

यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता व्रततीकुसुमैर्युताः।
द्विजमुखा वरभोगसमन्विता नृपतयो नयपालन तत्पराः॥

फलों का स्वामी चन्द्रमा हो, तो उस वर्ष राजनेता प्रजा को न्याय एवं सुशासन प्रदान कराने में प्रवृत्त होंगे। विद्वान्-ब्राह्मण भी विविध प्रकार के धन-धान्य एवं भोग्य पदार्थों से समन्वित होंगे। वृक्षों एवं लताओं पर विभिन्न प्रकार के मौसमी फल, फूलों एवं अन्य वनस्पतियों की पैदावार अच्छी होगी। राजनेता देश-विदेश में भ्रमण करने के लिए उत्सुक रहेंगे अर्थात् भ्रमणशील रहेंगे। फिर भी शासन-व्यवस्था सम्यक एवं सुचारु रूप से चलेगी।

(9) धनेश गुरु का फल –

सुमनसां च गुरुः द्रविणाधिपो वणिज-वृत्तिपराः सुखभाजिनः।
फलित पुष्पित-भूमिरुहाः सदा विविध द्रव्ययुताभुवि मानवाः॥`

अर्थात् धनेश (कोष-स्वामी) बृहस्पति (गुरु) हो, तो शासन-व्यवस्था व्यापारियों के लिए बहुत अनुकूल वातावरण एवं नीतियां बनाने में प्रयासरत रहेगी। व्यापारी अर्थात् वणिज वृत्ति वाले व्यापारी लोग व्यापार में लाभान्वित होकर सुखी एवं प्रसन्नचित हों। (वृक्षों पर फुलों, फलों आदि की पैदावार अच्छी हो)। जनता की जीवनशैली एवं आर्थिक स्तर में सुधार होगा। परन्तु कुछ विशिष्ट वर्ग के लोग ही धन-सम्पदा एवं भौतिक सुखों से सम्पन्न हो पायेंगे।

(10) दुर्गेश (सेनापति) चन्द्र का फल –

अथ च दुर्गपतिर्मृगलांछनो नरवराः सुखिनः शुभशासनात्।
बदुधनेक्षुजगोरसभोगिनो नृपतयो नरगीत पराक्रमाः॥

अर्थात् **`चन्द्रमा`** दुर्गेश (सेना का स्वामी) हो, तो उस वर्ष गणमान्य लोगों को समाज के प्रति उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं के कारण मान-सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। राजनेता (प्रशासक) प्रजा में सुचारु ढ़ंग से शासन करने तथा जनता को सुख-सुविधाएँ प्रदान करने की चेष्टा करेंगे। साधारण लोगों (जनता) की भी जीवनशैली एवं जीवनस्तर उन्नत एवं सुव्यवस्थित होगा। गुड़, चीनी, ईख (गन्ना), दूध, गोरस, मिष्ठान्न आदि के क्रय-विक्रय (व्यापार) करने वाले व्यापारियों को अच्छा (समुचित) लाभ प्राप्त हो। जनता शासन-तंत्र की सुव्यवस्था एवं नीतियों की प्रशंसा भी करेंगे।

नोट- वर्ष के उपरोक्त **दशाधिकारियों** का फल यद्यपि सर्वत्र होता है, परन्तु **राजा का फल** विशेष रूप से कश्मीर, बांग्लादेश, अफ़गानिस्तान, चीन, तिब्बत एवं हिमालय के निकटवर्ती क्षेत्र, **मन्त्री का फल** आन्ध्र प्रदेश, मालवा, उज्जैन आदि मध्य प्रदेशों में विशेष फल होता है। वैसे सामान्यतः राजा व मन्त्री का फल देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में होता है।

मेष-चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।
वर्षारम्भ से वर्षान्त तक इस राशि पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहने से मानसिक तनाव, गुप्त चिन्ताएं तथा धन सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी। ता. 2 अप्रैल से 11 मई तक मंगल द्वादश (व्यय) भाव में शनियुक्त होकर संचार करने से व्यर्थ यात्रा, खर्च के कारण तनाव रहे, फिज़ूलखर्ची से बचें। इसी मध्य 14 अप्रैल से 14 मई तक सूर्य इस राशि पर उच्चस्थ संचार करने से अकस्मात् धन लाभ भी होगा। ता. 11 मई से 20 जून तक मंगल का संचार इसी राशि पर होने से अकस्मात् धन-लाभ के अवसर मिलेंगे। ता. 31 अक्टूबर से वर्षान्त तक गुरु की शुभ दृष्टि इस राशि पर रहने से गुरुकृपा से सभी परेशानियां दूर होंगी। **उपाय – (1) 21 शनिवार सरसों के तेल में अपना मुख देखकर शनि का बीजमन्त्र पढ़ते हुए शनिदेव की मूर्त्ति के चरणों में चढ़ाते रहें। शनि बीज मन्त्र – 'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः॥' श्रीहनुमान चालीसा का पाठ करें।**

वृष-ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो, ब।
वर्षभर वृष राशि पर शनि की तृतीय परन्तु मित्र दृष्टि रहने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। कार्य-व्यवसाय में संघर्ष अधिक होगा। कार्यों में विघ्न/बाधाओं के पश्चात् सफलता मिलेगी। ता. 19 अप्रैल से 14 मई तक शुक्र स्वराशिगत (वृष) रहने से कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। 15 मई से 14 जून के मध्य इस राशि पर सूर्य तथा फिर 20 जून से 2 अगस्त तक मंगल का संचार रहने से क्रोध, उत्तेजना से बचना चाहिए। ता. 1 अगस्त से 2 सितम्बर, पुनः 5 नवम्बर से 22 नवम्बर के मध्य राशिस्वामी शुक्र नीचराशि में होने से किसी दुष्ट व्यक्ति द्वारा हानि होने के संकेत मिलते हैं। ता. 3 अक्टूबर से 14 नवम्बर तक शुक्र वक्री रहने से बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। आय के साधनों में भी विघ्न उत्पन्न होंगे। **उपाय - वर्षभर काले वर्ण की वस्तुओं का प्रयोग न करें तथा हर शुक्रवार का व्रत विधिपूर्वक रखें।**

मिथुन-का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह।
वर्षारम्भ से 1 जून तक गुरु इस राशि पर संचार करने से मानसिक तनाव एवं घरेलु उलझने अधिक रहेंगी। यद्यपि विद्यार्थियों को विद्या में सफलता के अवसर बनेंगे। सन्तान, पति/पत्नी के भाग्य में वृद्धि होगी। ता. 30 अप्रैल से बुध लाभ स्थान में आने से बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। अकस्मात् धन लाभ हो, गृह में कोई मंगल कार्य आयोजित होगा। ता. 29 मई से 22 जून तक, पुनः 7 जुलाई से 5 अगस्त तक बुध इसी राशि में संचार करने से व्यापार/नौकरी में लाभ, नई-नई योजनाएँ बनेंगी, मकान बनाने या कुछ परिवर्तन करने की योजना भी बनेगी। ता. 5 दिसम्बर से राहु अष्टमस्थ आने से स्वास्थ्य एवं धन सम्बन्धी समस्याएँ तनाव का कारण बनेंगी। आत्मबल बनाएँ रखें। **उपाय - प्रत्येक बुधवार को गौशाला में गौओं को मीठी चपातियां और हरा चारा खिलाना शुभ रहेगा। सायं तुलसी के आगे दीप जलाना शुभ होगा।**

कर्क-ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो।
वर्षारम्भ से 5 दिसम्बर तक राहु अष्टम भाव में संचार करने से स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। पेट, वायु (गैस) सम्बन्धी रोगों का भय है। व्यर्थ के वाद-विवाद एवं तनाव अधिक रहेगा। ता. 11 मई से 20 जून तक मंगल की नीच दृष्टि तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य सूर्य का संचार होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी (पेट सम्बन्धी, ब्लड-प्रैशर, रक्त सम्बन्धी रोग) तथा निकट भाई-बन्धुओं से मन-मुटाव एवं विरोध बढ़ेंगे। ता. 1 जून से 31 अक्टूबर तक गुरु इसी राशि में उच्चस्थ होकर संचार करने से मान-सम्मान में वृद्धि, शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्ति तथा किसी मंगल कार्य की योजना भी बनेगी। ता. 18 सितम्बर से 12 नवम्बर तक मंगल इस राशि पर नीचावस्था में संचार करेगा।। **उपाय - वर्षभर संकल्पपूर्वक 'श्रीगणेश चतुर्थी' का व्रत विधिपूर्वक रखें। इसदिन श्रीगणेश जी का पूजन लड्डुओं के साथ करें तथा श्रीगणेश सहस्रनाम से उपासना करनी चाहिए।**

सिंह-मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टू, टे।
सिंह राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव वर्षपर्यन्त रहेगा। स्वास्थ्य हानि, सिर-पीड़ा, पेट एवं हृदय सम्बन्धी रोग, बनते कार्यों में अड़चनें रहेंगी। वर्षारम्भ से सूर्य पंचम में होने से कार्यक्षेत्र में कुछ नवीन योजनाएं बनेंगी तथा गुप्त चिन्ताएं भी रहेंगी। 14 अप्रैल से सूर्य भाग्यस्थान में उच्चस्थ होने से आय के स्रोतों में वृद्धि तथा धन लाभ के अवसर बनेंगे। जून-जुलाई में सूर्य-शनि में दृष्टि सम्बन्ध होने से आय कम व खर्च बढ़ेंगे। जुलाई-अगस्त में सूर्य द्वादशस्थ होने से संघर्ष बढ़े तथा धन हानि होने के संकेत हैं। 17 अगस्त से 16 सितम्बर के मध्य सूर्य सिंह राशि में ही संचार करने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। 17 अक्टूबर से 16 नवम्बर के मध्य सूर्य नीच राशि-तुला में संचार करने से स्वास्थ्य में विकार, धन-हानि तथा बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। **उपाय - शनि की दृष्टि तथा ढैय्या के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु हर शनिवार सायंकाल को शनि मन्दिर में तेल, काले तिल चढ़ाना तथा दशरथकृत `शनि स्तोत्रम्` का पाठ करना शुभ रहेगा।**

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो।
वर्षभर शनि की दृष्टि इस राशि पर रहने के प्रभावस्वरूप शरीर-कष्ट, गृह में कलह-क्लेश, आर्थिक परेशानियां, आय कम व खर्चों की अधिकता होने की सम्भावनाएँ होंगी। ता. 23 फरवरी से 11 मई तक मंगल की भी विशेष दृष्टि रहेगी जिससे मानसिक तनाव, उलझनें, वृथा खर्च बढ़ेंगे। ता. 10 से 30 अप्रैल तक बुध नीचराशिगत रहने से स्वास्थ्य भी ठीक न रहे तथा अपने नज़दीकी सम्बन्धी भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। ता. 30 अप्रैल से 14 मई तक बुध अष्टमस्थ, फिर 22 जून से 6 जुलाई, पुनः 5 अगस्त से 22 अगस्त तक कर्क-राशिगत रहने से आर्थिक उलझनें, स्वास्थ्य कष्ट रहे। ता. 7 सितम्बर से 26 सितम्बर तक बुध इसी राशि (कन्या) में रहने से मान-सम्मान में वृद्धि तथा धन-लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। उसके बाद 21 दिसम्बर तक समयावधि अनुकूल एवं लाभ देने वाली होगी। **उपाय - बुधवार और शनिवार को शिवमन्दिर में शिवलिङ्ग पर कच्ची लस्सी और बेलपत्र पर चन्दन व हल्दी का तिलक करके श्रीशिव-अष्टोत्तर नाम (भगवान् शंकर के 108 नाम) का जाप करते हुए चढ़ावें।**

तुला-रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते।
वर्षारम्भ से 1 जून तक गुरु की विशेष शत्रु पंचम दृष्टि रहने से नित्य नई घरेलु एवं व्यवसायिक परेशानियां व समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी, परन्तु सत्संग एवं सम्यक विचारशीलता से सभी का निराकरण भी होता जाएगा। ता. 25 मार्च से 19 अप्रैल तक शुक्र की स्वगृही दृष्टि रहने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, अकस्मात् धन-लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। परन्तु ता. 14 अप्रैल से 14 मई के मध्य इस राशि पर सूर्य की नीच दृष्टि रहने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। ता. 2 सितम्बर से 5 नवम्बर तक, पुनः 22 नवम्बर से वर्षान्त तक शुक्र स्वराशिगत तुला में संचार करने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, अकस्मात् धन-लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। इसी मध्ये ता. 17 अक्टूबर से नवम्बर-दिसम्बर के मध्य तक कारोबार में अस्थिरता के हालात रहने के संकेत हैं। **उपाय - 21 शुक्रवार श्रीदुर्गा-पूजन, 5 कन्या पूजन, उन्हें खीर सहित श्वेत वस्तुएं देना एवं गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, गुड़ डालना शुभ होगा।**

वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।
14 मई से 14 जून तक सूर्य की मित्र दृष्टि रहेगी, जिससे व्यवसाय में संघर्ष के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। ता. 11 मई से 2 अगस्त तक इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि रहेगी। ता. 1 जून से 31 अक्टूबर तक गुरु की शुभ मित्र दृष्टि रहने से शुभ/धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति, सन्तान-सुख तथा घर में कोई शुभ कार्य भी होगा। ता. 2 अगस्त से 18 सितम्बर तक मंगल अष्टमस्थ संचार करने से स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें। ता. 18 सितम्बर से 12 नवम्बर तक मंगल नीचराशिगत संचार करने से मानसिक तनाव, घरेलु उलझनें एवं व्यवसाय में परेशानियों का सामना रहेगा। **उपाय - हर मंगलवार को विधिपूर्वक व्रत रखकर श्रीहनुमान एवं गणेश जी की उपासना करना शुभ एवं कल्याणदायक रहेगा।**

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, भे।
इस राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ से 1 जून तक इस राशि पर राशिस्वामी गुरु की स्वगृही दृष्टि भी रहेगी। फलस्वरूप विपरीत परिस्थितियों के बावजूद बिगड़े हुए कार्यों में सुधार होता रहेगा। ता. 1 जून से 31 अक्टूबर तक राशिस्वामी गुरु उच्चराशिगत होने पर भी अष्टमस्थ होगा। अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों भरा वातावरण रहेगा। ता. 31 अक्टूबर से गुरु सिंह राशि एवं भाग्यस्थान में प्रविष्ट होकर लग्न एवं पंचम भाव को देखेगा। गुरु सिंह राशि में वर्षान्त तक रहेगा। इस अवधि में धार्मिक कार्यों की ओर रुचि बनेगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण मानसिक तनाव एवं खर्च भी बढ़ेंगे। **उपाय - लगभग सारा वर्ष बृहस्पतिवार का विधिपूर्वक व्रत रखना तथा पीले वर्ण का पुखराज धारण करना शुभ होगा।**

मकर-भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।
वर्षभर राशिस्वामी शनि तृतीय भाव में संचार करेगा। सन्तान सम्बन्धी विशेष चिन्ता रहे तथा खर्च भी बढ़-चढ़ कर होते रहेंगे। ता. 1 जून से 31 अक्टूबर तक गुरु की नीच दृष्टि रहेगी। शुभाशुभ मिश्रित फल प्राप्त होंगे। व्यर्थ की चिन्ताएँ रहेंगी। ता. 16 जुलाई से 16 अगस्त तक इस राशि पर सूर्य की दृष्टि रहने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। ता. 18 सितम्बर से 12 नवम्बर तक इस राशि पर मंगल की उच्च दृष्टि रहेगी, जिससे मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। परन्तु धन स्थान पर राहु की स्थिति होने से आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे। ता. 31 अक्टूबर से वर्षान्त तक गुरु अष्टम सिंह राशि में संचार करेगा। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों का सामना रहेगा। ता. 5 दिसम्बर से राहु की इस राशि पर स्थिति मानसिक तथा घरेलु वातावरण में उथल-पुथल करेगी।
उपाय - प्रतिदिन सूर्य भगवान् को 'ॐ घृणिः सूर्याय नमः' मन्त्र से अर्घ्य दें तथा माघ माहात्म्य का पाठ करें।

कुम्भ-गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा।
वर्षभर राशिस्वामी शनि द्वितीयस्थ संचार करने से '**शनि-साढ़ेसाती**' का प्रभाव रहेगा। वर्षारम्भ से 5 दिसम्बर तक इस राशि पर राहु का संचार रहेगा, परन्तु वर्षारम्भ से 1 जून तक गुरु की इस राशि पर दृष्टि रहने से वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग अपेक्षाकृत शुभ एवं लाभदायक रहेगा। भाग्य में उन्नति व धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। 17 अगस्त से 16 सितम्बर तक मध्य इस राशि पर सूर्य की दृष्टि रहने से इस अवधि में कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी विशेष परेशानियां होंगी। ता. 31 अक्टूबर से वर्षान्त तक गुरु की विशेष सप्तम दृष्टि इस राशि पर रहने से किसी प्रियबन्धु/सन्त-महात्मा के दर्शन होंगे, तीर्थयात्रा हो अथवा परिवार में कोई मंगल कार्य आयोजन होगा। ता. 5 दिसम्बर से राहु का संचार भी हट जाने से कुछ बेहतर हालात बनेंगे। **उपाय – राहु की शान्ति के लिए प्रत्येक शनिवार शनि मन्दिर में मन्त्रपूर्वक नारियल व लड्डू चढ़ाने चाहिए। मन्त्र – 'ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।'**

मीन-दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।
वर्षभर शनि लग्नस्थ संचार करने से सम्पूर्ण वर्ष '**शनि-साढ़ेसाती**' का प्रभाव रहेगा। वर्षारम्भ से राशिस्वामी गुरु चतुर्थ भाव में मिथुन राशिगत होकर 1 जून तक संचार करने से इस अवधि में मिश्रित फल घटित होंगे। ता. 1 जून से 31 अक्टूबर तक राशिस्वामी गुरु उच्चस्थ होकर पंचम भाव में रहेगा। जिससे उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रहेंगे। धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। ता. 18 सितम्बर से 12 नवम्बर तक भाग्येश मंगल नीच राशि (कर्क) में होने से अकस्मात् खर्च बढ़ेंगे तथा सेहत में विकार एवं घरलु झंझटों के कारण मानसिक तनाव होंगे। ता. 31 अक्टूबर से 5 दिसम्बर तक गुरु षष्ठस्थ (सिंह राशि) केतु युक्त रहने से कार्यों में विलम्ब उत्पन्न हो।
उपाय – प्रत्येक वीरवार को केले के पौधे का पूजन करना, भगवान् शंकर की पूजा करके शिवलिङ्ग पर हल्दी मिलाकर जल 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र पढ़ते हुए बेलपत्र सहित चढ़ाना शुभ होगा।

❊ प्रमुख व्रत-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2026 ई०) ❊

दिनाङ्क	वार	पर्व
19 मार्च	**गुरु**	**वि.संवत् 2082 पूर्ण। वि.संवत् 2083 शुरु। चैत्र (वासन्त) नवरात्र शुरु। तैलाभ्यंग ध्वजारोहण।**
20 मार्च	शुक्र	महाविषुव दिवस।
21 मार्च	शनि	गौरी तृतीया (गणगौर)
23 मार्च	सोम	श्री (लक्ष्मी) पंचमी। हय-व्रत। नाग-पंचमी।
24 मार्च	मंगल	स्कन्द षष्ठी व्रत।
26 मार्च	गुरु	अशोकाष्टमी। श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति। श्रीरामनवमी।
27 मार्च	**शुक्र**	**वासन्त नवरात्र समाप्त।**
28 मार्च	**शनि**	**नवरात्र व्रत पारणा।**
29 मार्च	रवि	लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव।
30 मार्च	सोम	श्रीविष्णु-दमनोत्सव। अनङ्ग त्रयोदशी।
31 मार्च	मंगल	श्री महावीर जयन्ती (जैन)।
1 अप्रैल	बुध	शिव-दमनोत्सव।
2 अप्रैल	**गुरु**	**श्री हनुमान जयं.(दक्षिण)। वैशाखस्नान प्रारम्भ।**
3 अप्रैल	शुक्र	गुड फ्राईडे (क्रिश्चि.)।
14 अप्रैल	**मंगल**	**वैशाखी पर्व (पं.)।**
19 अप्रैल	**रवि**	**परशुराम जयन्ती। अक्षय-तृतीया। केदार-बद्री यात्रा प्रा.**
21 अप्रैल	**मंगल**	**आद्यगुरु शंकराचार्य जयन्ती।**
23 अप्रैल	गुरु	श्रीगङ्गा-जयन्ती।
24 अप्रैल	शुक्र	श्रीबगलामुखी जयन्ती।
25 अप्रैल	शनि	जानकी-जयन्ती।
30 अप्रैल	गुरु	श्रीनृसिंह जयन्ती।
1 मई	शुक्र	श्री कूर्म जयन्ती। वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा। वैशाख स्नान समाप्त
13 मई	बुध	भद्रकाली एकादशी।
16 मई	शनि	शनैश्चर-जयन्ती। वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष) ज्येष्ठ, भावुका अमावस्या।
17 मई	रवि	ज्येष्ठ अधिक (मल-मास प्रारम्भ)।
25 मई	**सोम**	**श्रीगङ्गा-दशहरा पर्व।**
15 जून	सोम	ज्येष्ठ अधि.(पुरुषोत्तम)-मास समाप्त। सोमवती (ज्ये.) अमावस्या।
17 जून	बुध	रम्भा तृतीया व्रत।

❊ प्रमुख व्रत-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2026 ई०) ❊

दिनाङ्क	वार	पर्व
20 जून	शनि	अरण्य षष्ठी। विन्ध्यवासिनी पूजा।
21 जून	**रवि**	**सायन दक्षिणायन शुरु।**
22 जून	सोम	श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती। मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर)
25 जून	**गुरु**	**निर्जला एकादशी व्रत।**
29 जून	सोम	वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)। शुद्ध ज्येष्ठ पूर्णिमा। सन्त कबीर जयन्ती।
15 जुलाई	**बुध**	**आषाढ़ गुप्तनवरात्र शुरु।**
16 जुलाई	गुरु	श्री जगन्नाथ रथ यात्रा-पुरी।
19 जुलाई	रवि	कुमार षष्ठी।
20 जुलाई	सोम	विवस्वत सप्तमी।
22 जुलाई	**बुध**	**गुप्तनवरात्र समाप्त।**
25 जुलाई	**शनि**	**हरिशयनी एकादशी व्रत। श्रीविष्णु शयनोत्सव। चातुर्मास्य व्रत, नियम शुरु।**
29 जुलाई	**बुध**	**गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा। श्रीशिव शयनोत्सव। कोकिला व्रत।**
3 अगस्त	**सोम**	**श्रावण सोमवार व्रत शुरु।**
11 अगस्त	**मंगल**	**श्रावण-शिवरात्रि।**
12 अगस्त	**बुध**	**हरियाली अमावस्या।**
13 अगस्त	गुरु	मे.चिन्तापूर्णी हि.प्र. शुरु।
15 अगस्त	शनि	मधुस्रवा-हरियाली तीज। स्वतन्त्रता दिवस (80वाँ)
17 अगस्त	सोम	नाग-पंचमी। श्रीकल्कि जयन्ती।
19 अगस्त	**बुध**	**गो.तुलसीदास जयन्ती।**
20 अगस्त	गुरु	श्रीदुर्गाष्टमी। मे. चिन्तापूर्णी हि.प्र. समाप्त। दूर्वाष्टमी व्रत।
26 अगस्त	बुध	ऋक्-उपाकर्म।
27 अगस्त	गुरु	शुक्ल-यजु उपाकर्म।
28 अगस्त	**शुक्र**	**श्रावण-पूर्णिमा। रक्षाबन्धन (राखी)। श्रीअमरनाथ यात्रा समाप्त। कृष्ण-यजु उपाकर्म।**
31 अगस्त	सोम	कज्जली-तृतीया। श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी।
2 सितम्बर	बुध	चन्दन षष्ठी व्रत।
4 सितम्बर	**शुक्र**	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत। श्रीकृष्ण-जयन्ती योग।**
5 सितम्बर	**शनि**	**गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव। श्रीगुग्गा-नवमी।**

❋ प्रमुख व्रत-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2026 ई०) ❋

दिनाङ्क	वार	पर्व
8 सितम्बर	मंगल	वत्स द्वादशी (पूजा)।
10 सितम्बर	गुरु	कुशाग्रहणी अमावस्या। पिठोरी अमावस्या।
12 सितम्बर	शनि	सामवेदि उपाकर्म।
14 सितम्बर	सोम	हरितालिका तृतीया। कलंक-चतुर्थी। सिद्धिविनायक व्रत।
15 सितम्बर	मंगल	ऋषि पंचमी व्रत।
17 सितम्बर	गुरु	सूर्य षष्ठी व्रत। मुक्ताभरण सन्तान सप्तमी।
18 सितम्बर	शुक्र	श्रीमहालक्ष्मी-व्रत शुरु।
19 सितम्बर	शनि	श्रीराधाष्टमी।
20 सितम्बर	रवि	श्रीचन्द नवमी (उदासीन)
23 सितम्बर	बुध	श्रीवामन-जयन्ती।
25 सितम्बर	**शुक्र**	**अनन्त चतुर्दशी व्रत। मेला सोढल, जालन्धर (पं.)।**
26 सितम्बर	शनि	प्रोष्ठपदी-पूर्णिमा श्राद्ध। महालय प्रारम्भ।
27 सितम्बर	रवि	पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ।
2 अक्टूबर	शुक्र	महात्मा गाँधी जयन्ती।
3 अक्टूबर	शनि	श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न।
10 अक्टूबर	शनि	महालय/श्राद्ध समाप्त। सर्वपितृ श्राद्ध। गजच्छाया योग।
11 अक्टूबर	**रवि**	**आश्विन शारदीय नवरात्र आरम्भ।**
15 अक्टूबर	गुरु	उपाङ्ग ललिता व्रत।
16 अक्टूबर	शुक्र	सरस्वती आवाहन।
17 अक्टूबर	शनि	सरस्वती पूजन।
18 अक्टूबर	रवि	सरस्वती बलिदान।
19 अक्टूबर	सोम	श्रीदुर्गाष्टमी,सरस्वती विसर्जन,महानवमी (व्रत,पूजा,होम हेतु)
20 अक्टूबर	**मंगल**	**महानवमी (वलिदान हेतु)। नवरात्र-समाप्त। विजयदशमी (दशहरा)।**
21 अक्टूबर	**बुध**	**नवरात्र व्रत पारणा। भरत मिलाप।**
25 अक्टूबर	रवि	शरद् पूर्णिमा व्रत। कोजागार व्रत।
26 अक्टूबर	सोम	महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती। कार्तिकस्नान प्रारम्भ।
29 अक्टूबर	गुरु	व्रत करवा-चौथ।
1 नवम्बर	रवि	अहोई व्रत।
5 नवम्बर	गुरु	गोवत्स द्वादशी।

❊ प्रमुख व्रत–त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2026–2027 ई०) ❊

दिनाङ्क	वार	पर्व
6 नवम्बर	**शुक्र**	**धन त्रयोदशी। यम प्रीत्यर्थं दीपदान।**
7 नवम्बर	**शनि**	**श्रीहनुमान जयं. (उ.भारत)**
8 नवम्बर	**रवि**	**नरक-चतुर्दशी। दीपावली, महालक्ष्मी पूजन।**
9 नवम्बर	**सोम**	**कार्तिक सोमवती अमावस्या,विश्वकर्मा दिवस (पं.)**
10 नवम्बर	**मंगल**	**अन्नकूट-गोवर्धन पूजा। गोक्रीड़ा। बलि पूजा।**
11 नवम्बर	**बुध**	**भाईदूज, यमद्वितीया। श्रीविश्वकर्मा-पूजन।**
15 नवम्बर	**रवि**	**सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)।**
17 नवम्बर	**मंगल**	**गोपाष्टमी।**
18 नवम्बर	बुध	अक्षय-कूष्माण्ड नवमी।
20 नवम्बर	**शुक्र**	**भीष्मपंचक प्रारम्भ,हरिबोधिनी एका.(स्मा.)। तुलसी विवाह**
21 नवम्बर	**शनि**	**हरिप्रबोधोत्सव। हरिप्रबोधिनी एकादशी (वै.)। चातुर्मास्य व्रतादि समाप्त।**
23 नवम्बर	**सोम**	**वैकुंठ चतुर्दशी।**
24 नवम्बर	मंगल	कार्तिक पूर्णिमा। त्रिपुरोत्सव। श्रीगुरु नानक जयन्ती। कार्तिकस्नान समाप्त। भीष्मपंचक समाप्त।
1 दिसम्बर	मंगल	श्रीकालभैरवाष्टमी।
15 दिसम्बर	मंगल	स्कन्द-गुह षष्ठी। चम्पा-षष्ठी (महाराष्ट्र)
16 दिसम्बर	बुध	मित्र (विष्णु) सप्तमी।
20 दिसम्बर	**रवि**	**मोक्षदा एकादशी व्रत। श्रीगीता जयन्ती।**
21 दिसम्बर	सोम	सूर्य उत्तरायण में (सायण)।
23 दिसम्बर	बुध	श्रीदत्तात्रेय जयन्ती।
25 दिसम्बर	शुक्र	क्रिसमिस डे (क्रिश्चि.)
31 दिसम्बर	गुरु	रुक्मणि अष्टमी।
13 जनवरी	**बुध**	**लोहड़ी पर्व।**
14 जनवरी	**गुरु**	**मकर (माघ) संक्रान्ति।**
15 जनवरी	शुक्र	मार्तण्ड सप्तमी।श्रीगुरु गोविन्द सिंह जयन्ती।
18 जनवरी	सोम	पुत्रदा एकादशी (स्मा.)
22 जनवरी	शुक्र	पौष पूर्णिमा। माघस्नान प्रारम्भ।

❊ प्रमुख व्रत–त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2027 ई॰) ❊

दिनाङ्क	वार	पर्व
25 जनवरी	सोम	श्रीगणेश संकट चतुर्थी।
26 जनवरी	**मंगल**	**गणतन्त्र दिवस (78वाँ)।**
6 फरवरी	**शनि**	**माघ (मौनी) अमावस्या। महोदय योग।**
7 फरवरी	**रवि**	**गुप्त नवरात्र प्रारम्भ।**
9 फरवरी	मंगल	गौरी तृतीया (गोंतरी)।
10 फरवरी	बुध	तिल-कुन्द चतुर्थी।
11 फरवरी	**गुरु**	**वसन्त (श्री) पंचमी। लक्ष्मी-सरस्वती पूजन।**
13 फरवरी	शनि	आरोग्य-पुत्र सप्तमी। रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)।
14 फरवरी	रवि	भीष्माष्टमी।
15 फरवरी	**सोम**	**गुप्त नवरात्र समाप्त।**
18 फरवरी	गुरु	भीष्म-द्वादशी, तिल द्वादशी।
20 फरवरी	शनि	माघपूर्णिमा। माघस्नान समाप्त। श्रीगुरु रविदास जयन्ती।
2 मार्च	मंगल	स्वा.दयानन्द सरस्वती जयं.।
6 मार्च	**शनि**	**श्रीमहाशिवरात्रि व्रत। (`शिव-योग` प्रशस्त)**
8 मार्च	सोम	सोमवती अमावस्या।
15 मार्च	सोम	होलाष्टक प्रारम्भ। अन्नपूर्णा-अष्टमी।
19 मार्च	शुक्र	गोविन्द द्वादशी।
20 मार्च	शनि	महाविषुव दिवस।
21 मार्च	रवि	होलिका-दहन (प्रदोष में)।
22 मार्च	सोम	होलाष्टक समाप्त। होली पर्व।
23 मार्च	मंगल	वसन्तोत्सव। होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब)
27 मार्च	शनि	श्रीरंग-पंचमी।
30 मार्च	मंगल	शीतलाष्टमी व्रत।
4 अप्रैल	रवि	वारुणी पर्व।
5 अप्रैल	सोम	मेला पिहोवातीर्थ (हरि.)।
6 अप्रैल	**मंगल**	**वि.संवत् 2083 पूर्ण।**

॥ संदिग्ध प्रमुख व्रत–पर्वों का शास्त्रीय निर्णय वि.सं. 2083॥

(1) वासन्त (चैत्र) नवरात्रारम्भ (19 मार्च, 2026 ई., गुरुवार)

सूर्योदय-व्यापिनी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन वासन्त नवरात्रों का प्रारम्भ, घटस्थापन, श्रीदुर्गा-पूजन आदि शुभ कृत्यों का प्रारम्भ होता है। देवीपुराण में यद्यपि अमावस्या युक्ता प्रतिपदा में श्रीदुर्गा-पूजारम्भ (चण्डिकार्चन) का प्रारम्भ शुभ नहीं माना गया है, परन्तु प्रतिपदा का क्षय हो जाए या वह दूसरे दिन एक मुहूर्त्त से कम होने की स्थिति में अमावस्या युक्ता प्रतिपदा के दिन ही नवरात्रारम्भ, घटस्थापन करने के लिए शास्त्रनिर्देश है।

इसवर्ष वासन्त-नवरात्र का प्रारम्भ 19 मार्च, 2026 ई. अमावस्यायुक्ता प्रतिपदा में ही होगा क्योंकि प्रतिपदा दूसरे दिन सूर्योदय के समय बिल्कुल नहीं है। **अतः वासन्त (चैत्र) नवरात्रों का प्रारम्भ 19 मार्च, 2026 ई., गुरुवार को ही शास्त्र-सम्मत होगा।**

(2) श्रीरामनवमी (26 मार्च, गुरुवार)

श्रीराम का जन्म मध्याह्नव्यापिनी चैत्रशुक्ल नवमी में हुआ था, अतः मध्याह्नव्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी के ही दिन '**श्रीरामनवमी व्रत**' करने का विधान है। श्रीराम के जन्म के समय पुनर्वसु नक्षत्र भी था, अतः पुनर्वसुयुता मध्याह्नव्यापिनी नवमी में व्रत का विशेष माहात्म्य है। परन्तु पुनर्वसु नक्षत्र निर्णायक नहीं है। इसवर्ष 26 मार्च, 2026 ई. को मध्याह्न के समय नवमी आर्द्रा नक्षत्रयुता है। अतः यह व्रत इस वर्ष इसी दिन किया जाएगा। यहाँ पुनर्वसु निर्णायक तत्त्व नहीं है, एवं च, 27 मार्च को नवमी मध्याह्नकाल को स्पर्श भी नहीं कर रही। **अतएव 'रामनवमी व्रत' 26 मार्च, गुरुवार को ही शास्त्रसम्मत एवं ग्राह्य होगा।**

(3) अक्षय-तृतीया (19 अप्रैल, 2026 ई., रविवार)

वैशाख शुक्ल तृतीया को '**अक्षय-तृतीया**' पर्व मनाया जाता है। वैशाख शुक्ल तृतीया युगादि तिथि भी है। इसदिन किए गए स्नान-दान, पितृश्राद्ध-तर्पण, जप-होमादि सभी सत्कर्मों का फल अक्षय अर्थात् अनन्त होता है। वैशाख शुक्ल तृतीया जिस दिन पूर्वाह्न-व्यापिनी होगी, उसी दिन यह पर्व मनाया जाएगा। यदि तृतीया दोनों दिन पूर्वाह्न-व्यापिनी हो अथवा आंशिक रूप से पूर्वाह्न-काल को व्याप्त करे, तो शास्त्रानुसार तीन मुहूर्त्त (लगभग 6 घड़ी) से अधिक व्याप्ति की स्थिति में दूसरे दिन (चतुर्थीयुता) मनाया जाए, परन्तु यदि तीन मुहूर्त्त से कम (न्यून) हो, तो पहले दिन (द्वितीया युता) ही मनाया जाना चाहिए। इस वर्ष यह तृतीया 19 एवं 20 अप्रैल (2026 ई.) को दोनों दिन पूर्वाह्न के एकदेश को व्याप्त कर रही है और यह 20 अप्रैल, 2026 ई. को तीन मुहूर्त्त से कम (मात्र 3 घड़ी 45 पल) है। **अतः 19 अप्रैल, रविवार को तृतीया तिथि प्रातः $10^{घ.}50^{मि.}$ बाद पूर्वाह्न, मध्याह्न एवं अपराह्न-व्यापिनी होने से स्नान-दान, जप, होम, तर्पणादि सत्कृत्यों**

के लिए प्रशस्त होगी।

(4) श्रीगङ्गा दशहरा पर्व (25 मई, 2026 ई.) [अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष]

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को **'गङ्गा-दशहरा'** पर्व मनाया जाता है। ज्येष्ठ अधिक मास होने की स्थिति में, शास्त्रानुसार उसी अधिक मास में यह पर्व मनाया जाता है, शुद्ध में नहीं, **इस वर्ष 25 मई, 2026 ई., सोमवार को अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि के दिन ही श्रीगङ्गा-दशहरा (विशेषकर हरिद्वार में) का पर्व आयोजित होगा।** इसदिन प्रातः $9^{घं.}07^{मि.}$ बाद कन्यास्थ चन्द्र और सूर्य वृषस्थ भी है, जो इसे माहात्म्य प्रदान करता है।

(5) श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (जयन्ती) (भाद्र. कृष्ण 8) (4 सितम्बर, 2026 ई.)

अर्द्धरात्रिव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी को चन्द्रोदय के समय रोहिणी नक्षत्र से संयोग होने पर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को **'श्रीकृष्ण जयन्ती'** के नाम से भी संभोधित किया जाता है। इस वर्ष 4 सितम्बर, शुक्रवार को अर्धरात्रिव्यापिनी चन्द्रोदयकालीन अष्टमी रोहिणीयुता है। अतः यहाँ **'श्रीकृष्ण-जयन्ती'** नामक **पुण्यतम योग** बना है।

(6) आश्विन नवरात्र प्रारम्भ (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा)

शास्त्रानुसार सूर्योदय बाद 10 घड़ी (लगभग 4 घण्टे) तक या मध्याह्न-काल में अभिजित् मुहूर्त्त (दिन के अष्टम मुहूर्त्त) के समय नवरात्रारम्भ व कलशास्थापन किया जाता है। प्रतिपदा की पहली 16 घड़ियां तथा चित्रा-वैधृति योगों का पूर्वार्द्ध भाग नवरात्रारम्भ के लिए निषिद्ध है। यदि नवरात्रारम्भ हेतु यह विहित-काल अर्थात् सूर्योदय बाद कि 10 घटियां तथा अभिजित् मुहूर्त्त-प्रतिपदा की प्रथम 16 घड़ियों अथवा चित्रा-वैधृति के पूर्वार्द्ध भाग से पूरी तरह दूषित हो, तो इसकी उपेक्षा करते हुए इस दूषित-काल में ही कलश-स्थापन कर लेना चाहिए।

इस वर्ष 11 अक्टूबर, 2026 ई. को नवरात्रारम्भ होंगे। यहाँ प्रतिपदा की आदिम 16 घटी तो 11 अक्टूबर के सूर्योदय से पूर्व ही $27^{घं.}44^{मि.}$ पर समाप्त हो जाएंगी। परन्तु घटस्थापन के लिए विहित सूर्योदय बाद की आदि (प्रथम) 10 घटीकाल चित्रा एवं वैधृति योगों – दोनों से दूषित है। चित्रा नक्षत्र का पूर्वार्धकाल प्रातः $10^{घं.}08^{मि.}$ तक तथा वैधृति-योग का पूर्वार्धकाल प्रातः $9^{घं.}25^{मि.}$ तक रहेगा। **अतः पूर्वोक्त निर्देशानुसार प्रातः $10^{घं.}08^{मि.}$ के बाद 'अभिजित् मुहूर्त्त' में (11 अक्टूबर, 2026 ई.) नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, दीपपूजन आदि करने चाहिए।**

(7) हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (कार्तिक शुक्लपक्ष)

आषाढ़ कृष्ण एकादशी की भाँति कार्तिक शुक्ल एकादशी तिथि का भी क्षय हुआ है। अतएव स्मार्त्तों (गृहस्थों) को एकादशी व्रत (हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत) दशमीविद्धा

एकादशी में ही करना होगा, क्योंकि ऐसा न करने पर (अर्थात् द्वादशी वाले दिन वैष्णवों के साथ ही व्रत करने पर) उनको पारणा त्रयोदशी में करनी पड़ेगी, जोकि उनके लिए सर्वथा निषिद्ध है।

इसलिए इस वर्ष यह हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत स्मार्त्तों (गृहस्थों) के लिए 20 नवम्बर, 2026 ई. को तथा वैष्णवों के लिए 21 नवम्बर, 2026 ई. के दिन लिखा गया है।

(8) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (फाल्गुन कृष्णपक्ष)

चन्द्रोदयव्यापिनी कृष्ण चतुर्थी को श्रीगणेश चतुर्थी व्रत होता है। दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी न हो तो यह व्रत दूसरे दिन होता है। इस वर्ष फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी नहीं है। **इसलिए यहाँ श्रीगणेश चतुर्थी व्रत दूसरे दिन 24 फरवरी, 2027 ई. को लिखा गया है।**

(9) होलिका-दहन (21 मार्च, 2027 ई., रविवार)

प्रदोष-व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन भद्रा-रहितकाल में होलिका-दहन किया जाता है। यथा – **'सा प्रदोषव्यापिनी भद्ररहित ग्राह्या।।'** (धर्मसिन्धु)

यदि प्रदोषकाल के समय भद्रा हो और भद्रा निशीथकाल (लगभग अर्द्धरात्रि) से पहले ही समाप्त हो रही हो तो भद्रा के बाद और निशीथकाल से पहले होलिका-दहन करने की शास्त्राज्ञा है। परन्तु यदि भद्रा निशीथकाल से पहले समाप्त न हो तथा निशीथ (अर्द्धरात्रि) के बाद तक व्याप्त हो तथा अगले दिन पूर्णिमा साढ़े तीन प्रहर (3½) से अधिक (अर्थात् सायाह्न एवं प्रदोषव्यापिनी न हो) न हो, तब पहले ही दिन भद्रा-मुखकाल को छोड़कर भद्रापुच्छ में होलिका-दहन कर लेना चाहिए। परन्तु यदि भद्रापुच्छ भी निशीथ से पहले न मिले तो भद्रा में ही **'प्रदोषकाल'** में होलिका-दीपन कर लेना चाहिए।

वि. संवत् 2083 में भी यही स्थिति घटित हो रही है। फाल्गुन पूर्णिमा केवल पहिले दिन (21 मार्च, 2027 ई.) ही प्रदोष-व्यापिनी है। आगामी दिवस (22 मार्च) को साढ़े तीन प्रहर से कम ही है। **ता. 21 मार्च को 'प्रदोषकाल' जोकि लगभग $18^{घं.}35^{मिं.}$ से $20^{घं.}59^{मिं.}$ तक रहेगा,** भद्रा से व्याप्त है और भद्रा निशीथ (अर्द्धरात्रि) के बाद जाकर समाप्त हो रही है। ऐसी स्थिति में उपरोक्त शास्त्रनियम अनुसार 21 मार्च, 2027 ई. को ही **'भद्रा-मुख', 'भद्रा-पुच्छ'** के समय का विचार न करते हुए **'प्रदोषकाल' ($18^{घं.}35^{मिं.}$ से $20^{घं.}59^{मिं.}$ तक) में ही 'होलिका-दहन' किया जाना चाहिए। यही शास्त्रसम्मत रहेगा।**

*****

❊ ज्येष्ठ अधिक मास वि. सं. 2083 ❊

आगामी वि.सं.2083 (सन् 2026-27 ई.) में चान्द्र ज्येष्ठ मास अधिक मास रहेगा। इस चान्द्र मास की कालावधि 17 मई, रविवार से 15 जून, सोमवार तक रहेगी।

अधिक मास निर्णय - जिस चान्द्र-मास में सूर्य-संक्रान्ति का अभाव हो, उस चान्द्र मास को अधिक मास कहते हैं। **यस्मिन् मासे न संक्रान्तिः, संक्रान्ति द्वयमेव वा। मलमासः स विज्ञेयो मासे त्रिंशत्तमे भवेत्॥**

❊ अधिक (पुरुषोत्तम) मास में त्याज्य कर्म / कार्य ❊

अधिमास में फल प्राप्ति की कामना से किए जाने वाले प्रायः सभी काम वर्जित हैं और फल की आशा से रहित होकर करने के आवश्यक सब काम किए जा सकते हैं। अधिक (पुरुषोत्तम) मास में कुछ नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य कर्मों को करने का निषेध माना गया है। जैसे-विवाह, यज्ञ, देव-प्रतिष्ठा, महादान, चूड़ाकर्म (मुण्डन), पहले कभी न देखे हुए देवतीर्थों में गमन, नवगृह प्रवेश, वृषोत्सर्ग, भूमि आदि सम्पत्ति की खरीद (क्रय), नई गाड़ी का क्रय आदि शुभ कार्यों का आरम्भ अधिक मास काल में नहीं करना चाहिए-

अग्न्याधेयं प्रतिष्ठां च यज्ञो दानव्रतानि च। वेदव्रतवृषोत्सर्ग चूडाकरणमेखलाः॥
गमनं देवतीर्थानां विवाहमभिषेचनम्। यानं च गृहकर्माणि मलमासे विवर्जयेत्॥

इसके अतिरिक्त अन्य अनित्य व अनैमित्तिक कार्य जैसे-नववधू प्रवेश, नव-यज्ञोपवीत धारण, व्रतोद्यापन, नव-अलंकार, नवीन वस्त्रादि धारण करना, कुआँ, तालाब, बावली, बाग आदि का खनन करना, भूमि, वाहनादि का क्रय करना, काम्य व्रत का आरम्भ, भूमि, सुवर्ण, तुला, गायादि का दान, अष्टका श्राद्ध, उपनयन, द्वितीय वार्षिक श्राद्ध, उपाकर्मादि कर्मों के सम्पादन का निषेध माना गया है।

❊ अधिक (पुरुषोत्तम) मास में करणीय कर्म ❊

अधिक (मल) मास में जिस काम्य कर्म के प्रयोग का आरम्भ अधिक मास से पहले ही हो चुका हो, उसकी सम्पूर्ति अधिक मास में विहित है। मलमास में मरने वाले का वार्षिक श्राद्ध, मासिक श्राद्ध, पितरों की क्रिया करना, तीर्थ व गजच्छाया श्राद्ध, यदि मध्य में किसी के मलमास हो तो एक मास का अधिक ही श्राद्ध होगा। अर्थात् जिस मास में यह प्राप्त होता है, उसकी द्विरावृत्ति होती है। यदि मलमास में ही किसी की मृत्यु हो, तो उससे जो 12वाँ मास हो, उसमें प्रेतक्रिया को समाप्त करना चाहिए। तीव्र ज्वर या प्राणघातक रोगादि की निवृत्ति के लिए रुद्रपूजादि अनुष्ठान, पुत्र/सन्तान जन्म के बाद अन्नप्राशन, गण्डमूल, जन्मदिन पूजन सम्बन्धी आवश्यक (दिन-निर्धारित) कर्म, कपिल-षष्ठी जैसे दुर्लभ योगों के प्रयोग, नित्य पूजा-जप-दानादि कर्म अथवा ग्रहण सम्बन्धी श्राद्ध, दान, जपादि किए जा सकते हैं- **आवश्यकर्म मासाख्यं मलमासमृताब्दिकम्। तीर्थेभच्छाययोः श्राद्धमाधानाङ्ग पितृक्रियाम्॥**

❊❊❊

❊ हरिद्वार अर्धकुम्भ मेला वि. सं. 2083–84 ❊

आगामी वि.सं.2083-84 (सन् 2027 ई.) में हरिद्वार के पावन तीर्थ पर 14 जनवरी से 15 अप्रैल 2027 तीन माह की अवधि तक अर्धकुम्भ-पर्व का आयोजन होने जा रहा है। यह पर्व भारतीय संस्कृति एवं हिन्दु समाज का महान् एवं अद्वितीय पर्व है। इसमें असंख्य श्रद्धालु एवं धर्मपरायण लोग एकत्र होकर गंगा जी के तट पर स्नान, जप, तप, दान आदि करके अपने जीवन को धन्य करते हैं।

सन् 2027 ई. में अर्धकुम्भ की पुण्य स्नान-तिथियाँ

(1) मकर-संक्रान्ति – 14 जनवरी, गुरुवार

(2) मौनी अमावस्या - 6 फरवरी, शनिवार

(3) वसन्त पञ्चमी - 11 फरवरी, गुरुवार

(4) माघ पूर्णिमा – 20 फरवरी, शनिवार

(5) श्रीमहाशिवरात्रि-स्नान – 6 मार्च, शनिवार (प्रथम अमृत स्नान)

(6) सोमवती अमावस्या – 8 मार्च, सोमवार (द्वितीय अमृत स्नान)

(7) नव संवत्सर - 7 अप्रैल, बुधवार

(8) मेष संक्रान्ति - 14 अप्रैल, बुधवार (तृतीय अमृत स्नान)

(9) श्रीरामनवमी - 15 अप्रैल, गुरुवार

(10) चैत्र पूर्णिमा – 20 अप्रैल, मंगलवार (अन्तिम चतुर्थ अमृत स्नान)

❊ कुम्भ-पर्व पर स्नान-दान, जपादि की महिमा ❊

कुम्भ के पावन पर्व पर सहस्रों की संख्या में सन्त, महात्मा, नागा संन्यासी एवं विभिन्न अखाड़ों के अनुयायी सन्त, शिष्य तथा करोड़ों श्रद्धालु जन हरिद्वार की हरकी-पौड़ी पर स्नान, दान, जप, होमादि करके पुण्यार्जन करेंगे।

हिन्दू-धर्मशास्त्र कुम्भ-पर्व की महिमा से भरे पड़े हैं।

स्कन्दपुराणानुसार- **तान्येव यः पुमान् योगे सोऽमृतत्वाय कल्पते।**
देवा नमन्ति तत्रस्थान् यथा रङ्का धनाधिपान्॥

'जो मनुष्य कुम्भ योग में स्नान करता है, वह अमृतत्व (मुक्ति) की प्राप्ति करता है। जिस प्रकार दरिद्र मनुष्य सम्पत्तिशाली को नम्रता से अभिवादन करता है, उसी प्रकार कुम्भ-पर्व में स्नान करने वाले मनुष्य को देवगण नमस्कार करते हैं।

इस पर्व के स्नान, दान, जपानुष्ठान का लाभ एवं सिद्ध महापुरुषों के सत्संग का विशेष पुण्य लाभ प्राप्त होता है।

❊ श्री अम्बे जी की आरती ❊

जय अंबे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत (2), हरि ब्रह्मा शिवजी॥
ॐ जय अंबे गौरी...

मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को। (मैया टीको मृगमद को)
उज्वल से दोउ नैना (2), चंद्रवदन नीको॥
ॐ जय अंबे गौरी...

कनक समान कलेवर, रक्तांबर राजै। (मैया रक्तांबर राजै)
रक्तपुष्प गल माला (2), कंठन पर साजै॥
ॐ जय अंबे गौरी...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। (मैया खड्ग खप्पर धारी)
सुर नर मुनिजन सेवत (2), तिनके दुःखहारी॥
ॐ जय अंबे गौरी...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। (मैया नासाग्रे मोती)
कोटिक चंद्र दिवाकर (2), राजत सम ज्योती॥
ॐ जय अंबे गौरी...

शुंभ-निशुंभ बिदारे, महिषासुर घाती। (मैया महिषासुर घाती)
धूम्र विलोचन नैना (2), निशदिन मदमाती॥
ॐ जय अंबे गौरी...

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। (मैया शोणित बीज हरे)
मधु-कैटभ दोउ मारे (2), सुर भयहीन करे॥
ॐ जय अंबे गौरी...

ब्रह्माणी, रूद्राणी, तुम कमला रानी। (मैया तुम कमला रानी)
आगम निगम बखानी (2), तुम शिव पटरानी॥
ॐ जय अंबे गौरी...

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरव। (मैया नृत्य करत भैरव)
बाजत ताल मृदंगा (2), अरू बाजत डमरू ॥
ॐ जय अंबे गौरी...

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। (मैया तुम ही हो भरता)
भक्तन की दुख हरता (2), सुख संपति करता॥
ॐ जय अंबे गौरी...

भुजा चार अति शोभित, वरमुद्रा धारी। (मैया वरमुद्रा धारी)
मनवांछित फल पावत (2), सेवत नर नारी॥
ॐ जय अंबे गौरी...

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। (मैया अगर कपूर बाती)
श्रीमालकेतु में राजत (2), कोटि रतन ज्योती॥
ॐ जय अंबे गौरी...

श्री अंबेजी की आरति, जो कोइ नर गावे। (मैया जो कोइ नर गावे)
कहत शिवानंद स्वामी (2), सुख-संपति पावे॥
ॐ जय अंबे गौरी...

जय अंबे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत (2), हरि ब्रह्मा शिवरी॥
ॐ जय अंबे गौरी...

❊ महिषासुरमर्दिनी-स्तोत्रम् ❊

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दनुते
गिरिवरविंध्यशिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥1॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥2॥

अयि जगदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखरिशिरोमणितुङ्गहिमालयशृङ्गनिजालय मध्यगते।
मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि कैटभभञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥3॥

अयि निजहुँकृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते।
शिव शिव शुम्भ निशुम्भमहाहव तर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥4॥

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्ड गजाधिपते
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते।
निजभुजदण्ड निपातितखण्डविपातितमुण्डभटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥5॥

धनुरनुसङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्ग नटत्कटके
कनक पिशङ्गपृषत्कनिषङ्गरसद्भटशृङ्ग हतावटुके।
कृतचतुरङ्ग बलक्षितिरङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥6॥

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचार धुरीणमहाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते।
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदूतकृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥7॥

अयि शरणागतवैरिवधूवर वीरवराभयदायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि शिरोधिकृतामल शूलकरे।
दुमिदुमितामर दुन्दुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥8॥

सुरललनाततथेयितथेयितथाभिनयोत्तरनृत्यरते
हासविलासहुलासमयि प्रणतार्तजनेऽमितप्रेमभरे।
धिमिकिटधिक्कटधिकटधिमिध्वनिघोरमृदंगनिनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥9॥

जय जय जप्य जयेजय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते
भण भण भिञ्जिमि भिङ्कृतनूपुर सिञ्जितमोहित भूतपते।
नटितनटार्ध नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥10॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते।
सुनयनविभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥11॥

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते
विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक झिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते।
सितकृतफुल्लिसमुल्लसितारुणतल्लजपल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥12॥

अविरलगण्डगलन्मदमेदुर मत्तमतङ्गज राजपते
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते ।
अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥13॥

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले।
अलिकुल सङ्कुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्भकुलालि कुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥14॥

करमुरलीरववीजितकूजित लज्जितकोकिल मञ्जुमते-
मिलितपुलिन्द मनोहरगुञ्जित रञ्जितशैल निकुञ्जगते।

निजगुणभूत महाशबरीगण सद्गुणसम्भृत केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥15॥

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नख चन्द्ररुचे।
जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुञ्जर कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥16॥

विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते।
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥17॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥18॥

कनकलसत्कल सिन्धुजलैरनु सिञ्चिनुते गुण रङ्गभुवं
भजति स किं न शचीकुचकुम्भ तटीपरिरम्भ सुखानुभवम्।
तवचरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥19॥

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥20॥

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते।
यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥21॥

स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्॥22॥

॥इति श्रीमहिषासुरमर्दिनीस्तोत्रं समाप्तम्॥

❊ श्री शिव जी की आरती ❊

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव (2), अर्धाङ्गी धारा।
ॐ जय शिव ओंकारा...

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै। (स्वामी पञ्चानन राजै)
हंसानन गरुड़ासन (2), वृषवाहन साजै॥
ॐ जय शिव ओंकारा...

दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै॥ (स्वामी दशभुज ते सोहै)
तीनो रूप निरखता (2), त्रिभुवन जन मोहे।
ॐ जय शिव ओंकारा...

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी। (स्वामी मुण्डमाला धारी)
चन्दन मृगमद चन्दा (2), भाले शशि धारी।
ॐ जय शिव ओंकारा...

श्वेताम्बर पीताम्बर वाघाम्बर अङ्गे। (स्वामी वाघाम्बर अङ्गे)
सनकादिक ब्रह्मादिक (2), भूतादिक सङ्गे।
ॐ जय शिव ओंकारा...

कर मध्ये च कमण्डल चक्र त्रिशूलधर्ता। (स्वामी चक्र त्रिशूलधर्ता)
जगकर्ता जगहर्ता (2), जगपालनकर्ता।
ॐ जय शिव ओंकारा...

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। (स्वामी जानत अविवेका)
प्रणवाक्षर के मध्ये, ओमाक्षर के मध्ये, यह तीनों एका।
ॐ जय शिव ओंकारा...

त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई जन गावे। (स्वामी जो कोई जन गावे)
कहत शिवानन्द स्वामी, भजत हरिहर स्वामी, मनवाँछित फल पावे।
ॐ जय शिव ओंकारा...

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव (2), अर्धाङ्गी धारा।
ॐ जय शिव ओंकारा...

॥इति॥

❊ श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम् ❊

गजाननं भूतगणाधिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

॥ श्री पुष्पदन्त उवाच ॥

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथाऽवाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥ 1॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥ 2॥

मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता॥ 3॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥ 4॥

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः॥ 5॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे॥ 6॥

त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥ 7॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥ 8॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याऽध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता॥ 9॥

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥ 10॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥ 11॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्यापातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः॥ 12॥

यदृद्धिं सूत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥ 13॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥ 14॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः॥ 15॥

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥ 16॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः॥ 17॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥ 18॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषः
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥ 19॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥ 20॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा विधुरमभिचाराय हि मखाः॥ 21॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥ 22॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥ 23॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि॥ 24॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमविधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्॥ 25॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि॥ 26॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥ 27॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते॥ 28॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः॥ 29॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥ 30॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्॥ 31॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥ 32॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार॥ 33॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च॥ 34॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नःस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥ 35॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्॥ 36॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥ 37॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः॥ 38॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥ 39॥

श्री पुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥ 40॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥ 41॥

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥ 42॥

॥ इति श्री पुष्पदन्त विरचितं श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रं समाप्तम्॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

❊ रुद्राष्टकम् ❊

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥1॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम्॥2॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥3॥

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥4॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥5॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥6॥

न यावत् उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥7॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥8॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

॥ इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं संपूर्णम्॥

❊ बिल्वाष्टकम् ❊

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥1॥

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
शिवपूजां करिष्यामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ॥2॥

अखण्ड बिल्व पत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे।
शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ॥3॥

शालिग्राम शिलामेकां विप्राणां जातु चार्पयेत्।
सोमयज्ञ महापुण्यं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥4॥

दन्तिकोटि सहस्राणि वाजपेय शतानि च।
कोटिकन्या महादानं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥5॥

लक्ष्म्यास्तनुत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ॥6॥

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥7॥

काशीक्षेत्रनिवासं च कालभैरवदर्शनम्।
प्रयागे माधवं दृष्ट्वा ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे
अग्रतः शिवरूपाय ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्॥8॥

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्॥

॥ इति बिल्वाष्टकम् ॥

❊ लिङ्गाष्टकम् ❊

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥1॥

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥2॥

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥3॥

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥4॥

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम्।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥5॥

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥6॥

अष्टदलोपरि वेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥7॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥8॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ इति लिङ्गाष्टकम् ॥

॥शिवमानसपूजा श्लोकौ॥

किं वानेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत् क्षणभङ्गुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम्॥

आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद् भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभंगचपला विद्युच्चलं जीवितं
तस्मान्मां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना॥

❊ श्री शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ❊

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥1॥

मन्दाकिनिसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥2॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥3॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥4॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥5॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं समाप्तम्॥

❊ द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणम् ❊

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥1॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥2॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥3॥

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥4॥

एतेशां दर्शनादेव पातकं नैव तिष्ठति।
कर्मक्षयो भवेत्तस्य यस्य तुष्टो महेश्वराः॥

॥ इति द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणं सम्पूर्णम्॥

❊ शिवताण्डवस्तोत्रम् ❊

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥1॥
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥2॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि॥3॥
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥4॥
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥5॥
ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभानिपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः॥6॥
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम॥7॥
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥8॥
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभावलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे॥9॥
अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे॥10॥
जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गलध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः॥11॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्॥12॥
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्॥13॥
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्॥14॥
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥15॥

इति रावण कृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

❊ श्री गङ्गाष्टकम् ❊

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि।
सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानसङ्गे तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद॥1॥
भगवति भवलीलामौलिमाले तवाम्भः कणमणुपरिमाणं प्राणिनो ये स्पृशन्ति।
अमरनगरनारीचामरग्राहिणीनां विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति॥2॥
ब्रह्माण्डं खण्डयन्ती हरशिरसि जटावल्लिमुल्लासयन्ती
स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्रवन्ती।
क्षोणीपृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूर्निर्भरं भर्त्सयन्ती
पाथोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरित्पावनी नः पुनातु॥3॥
मज्जन्मातङ्गकुम्भच्युतमदमदिरामोदमत्तालिजालं
स्नानैः सिद्धाङ्गनानां कुचयुगविगलत्कुङ्कुमासङ्गपिङ्गम्।
सायंप्रातर्मुनीनां कुशकुसुमचयैश्छन्नतीरस्थनीरं
पायान्नो गाङ्गमम्भः करिकलभकराक्रान्तरंहस्तरङ्गम्॥4॥
आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जलं
पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियं
कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते॥5॥
शैलेन्द्रादवतारिणी निजजले मज्जज्जनोत्तारिणी
पारावारविहारिणी भवभयश्रेणीसमुत्सारिणी।
शेषाहेरनुकारिणी हरशिरोवल्लीदलाकारिणी
काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गङ्गा मनोहारिणी॥6॥
कुतो वीचिर्वीचिस्तव यदि गता लोचनपथं त्वमापीता पीताम्बरपुरनिवासं वितरसि।
त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतति यदि कायस्तनुभृतां तदा मातः शातक्रतवपदलाभोऽप्यतिलघुः॥7॥
गङ्गे त्रैलोक्यसारे सकलसुरवधूधौतविस्तीर्णतोये
पूर्णब्रह्मस्वरूपे हरिचरणरजोहारिणी स्वर्गमार्गे।
प्रायश्चित्तं यदि स्यात्तव जलकणिका ब्रह्महत्यादिपापे
कस्त्वां स्तोतुं समर्थस्त्रिजगदघहरे देवि गङ्गे प्रसीद॥8॥
मातर्जाह्नवि शम्भुसङ्गवलिते मौलौ निधायाञ्जलिं
त्वत्तीरे वपुषोऽवसानसमये नारायणाङ्घ्रिद्वयम्।
सानन्दं स्मरतो भविष्यति मम प्राणप्रयाणोत्सवे
भूयाद्भक्तिरविच्युताहरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती॥9॥
गङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतो नरः। सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति॥10॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं श्री गङ्गाष्टकं संपूर्णम् ॥

वर्गीकृत तिथि सूचना 19 मार्च 2026 ई० से 6 अप्रैल 2027 ई० तक (दिनाङ्क अनुसार)

2026 2027	श्री गणेश चतुर्थी	एकादशी व्रत	अमावस्या (स्नानदान)	पूर्णिमा (उदय व्या.)	प्रदोष व्रत	मास शिवरात्रि	संक्रान्ति	सत्य-नारायण व्रत
मार्च	6	15, 29	19	3	1, 16, 30	17	14 (चैत्र)	2
अप्रैल	5	13, 27	17	2	15, 29	15	14 (वैशाख)	1
मई	5	13, 27	16	1, 31	14, 28	15	15 (ज्येष्ठ)	1, 30
जून	3	11, 25	15	29	12, 27	13	15 (आषाढ़)	29
जुलाई	3	11 (वै), 25	14	29	12, 26	12	16 (श्रावण)	29
अगस्त	2, 31	9, 24 (वै)	12	28	10, 25	11	17 (भाद्रपद)	27
सितम्बर	29	7, 22	11	26	8, 24	9	17 (आश्विन)	26
अक्टूबर	29	6, 22	10	26	8, 23	8	17 (कार्तिक)	25
नवम्बर	27	5, 21 (वै)	9	24	6, 22	7	16 (मार्गशीर्ष)	24
दिसम्बर	26	4, 20	8	23	6, 21	7	16 (पौष)	23
जनवरी (27)	25	3, 19 (वै)	7	22	5, 20	5	14 (माघ)	22
फरवरी	24	2, 17	6	20	3, 18	4	13 (फाल्गुन)	20
मार्च	25	4, 18	8	22	5, 20	6	15 (चैत्र)	21
अप्रैल	24	2, 17	6	20	4, 18	5	14 (वैशाख)	20

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1947–48 19 मार्च से 2 अप्रैल 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
19 मार्च 2026	–	1	गुरु	28:53	–	–	–	–
20	7	2	शुक्र	26:31	रेवती	26:28	ब्रह्म	बालव
21	8	3	शनि	23:57	अश्विनी	24:38	ऐन्द्र	तैतिल
22	9	4	रवि	21:57	भरणी	22:43	वैधृति	वणिज्
23	10	5	सोम	18:39	कृत्तिका	20:50	विष्कुम्भ	बव
24	11	6	मंगल	16:08	रोहिणी	19:05	प्रीति/आयु	तैतिल
25	12	7	बुध	13:51	मृगशिरा	17:34	सौभाग्य	वणिज्
26	13	8	गुरु	11:49	आद्रा	16:19	शोभन	बव
27	14	9	शुक्र	10:08	पुनर्वसु	15:24	अतिगण्ड	कौलव
28	15	10	शनि	8:46	पुष्य	14:51	सुकर्मा	गर
29	16	11	रवि	7:47	आश्लेषा	14:38	धृति	विष्टि
30	17	12	सोम	7:10	मघा	14:48	शूल	बालव
31	18	13	मंगल	6:57	पू.फाल्गुनी	15:21	गण्ड	तैतिल
1 अप्रैल	19	14	बुध	7:07	उ.फाल्गुनी	16:18	वृद्धि	वणिज्
2	20	15	गुरु	7:42	हस्त	17:39	ध्रुव	बव

सूर्य उत्तरायण, वसन्त ऋतु
चैत्र शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
-	-	-	**'रौद्र' नामक नव वि.सं. 2083 आरम्भ। चैत्र (वासन्त) नवरात्र प्रा.। घटस्थापन प्रातः 6:54 से 7:43 तक या अभिजित मुहूर्त्त में 12:05 से 12:53। संवत्सर फल श्रवण।** ध्वजारोहण। तैलाभ्यंग। श्रीदुर्गापूजा। गुड़ी-पड़वा। गण्डमूल 28:05 से।
6:25	18:24	मेष में	26:28 से। पंचक समाप्त 26:28। बुध मार्गी 25:02।
6:24	18:25	मेष	गणगौरी तृतीया। श्रीमत्स्य जयन्ती। ग.मू. 24:38 तक।
6:23	18:25	वृष में 28:14 से	भद्रा 10:37 से 21:17 तक। शक चैत्र व **सं. 1948 आरम्भ।** दमनक चतुर्थी।
6:21	18:26	वृष	**श्री (लक्ष्मी) पंचमी। नाग पंचमी।** हय व्रत।
6:20	18:27	मिथुन में	30:17 से। स्कन्द षष्ठी व्रत।
6:19	18:27	मिथुन	भद्रा 13:51 से 24:50 तक। **शुक्र अश्वि.1 मेष में 29:08।**
6:18	18:28	मिथुन	**श्रीदुर्गाष्टमी। श्रीरामनवमी।** भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी। अन्नपूर्णा पूजन। मेला बाहूफोर्ट, काँगड़ादेवी, नैनादेवी। **मंगल पूर्व में उदय 18:41।**
6:17	18:28	कर्क में	9:36 से। श्रीदुर्गा-नवमी। **नवरात्र-समाप्त।**
6:15	18:29	कर्क	भद्रा 20:17 से। नवरात्र पारणा। ग.मू. 14:51 से।
6:14	18:30	सिंह में 14:38 से	**कामदा एकादशी व्रत।** लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव। राहु शत. में 2, केतु मघा 4 में 7:44।
6:13	18:30	सिंह	**सोम प्रदोष व्रत। अनङ्ग त्रयोदशी।** श्रीविष्णु दमनोत्सव। गण्डमूल 14:48 तक।
6:12	18:31	कन्या में	21:23 से। श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)। सूर्य रेवती में 20:08।
6:11	18:31	कन्या	भद्रा 7:07 से 19:15 तक। श्री शिव दमनोत्सव। श्रीसत्यनारायण व्रत।
6:09	18:32	कन्या	**चैत्र-पूर्णिमा। वैशाख स्नान आरम्भ। श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण भारत)। मंगल मीन में 15:28।**

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 3 अप्रैल से 17 अप्रैल 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
3	21	1	शुक्र	8:43	चित्रा	19:25	व्याघात	कौलव
4	22	2	शनि	10:10	स्वाति	21:36	हर्ष	गर
5	23	3	रवि	12:00	विशाखा	24:08	वज्र	विष्टि
6	24	4	सोम	14:11	अनुराधा	26:57	सिद्धि	बालव
7	25	5	मंगल	16:35	ज्येष्ठा	29:54	व्यतिपात	तैतिल
8	26	6	बुध	19:02	मूल	पूरादिन	वरीयान	वणिज्
9	27	7	गुरु	21:20	मूल	8:49	परिघ	विष्टि
10	28	8	शुक्र	23:16	पूर्वाषाढ़ा	11:28	शिव	बालव
11	29	9	शनि	24:38	उत्तराषाढ़ा	13:40	सिद्ध	तैतिल
12	30	10	रवि	25:17	श्रवण	15:14	साध्य	वणिज्
13	31	11	सोम	25:09	धनिष्ठा	16:04	शुभ	बव
14	1 वैशाख	12	मंगल	24:13	शतभिषा	16:06	शुक्ल	कौलव
15	2	13	बुध	22:32	पू.भाद्रपदा	15:23	ब्रह्म	गर
16	3	14	गुरु	20:12	उ.भाद्रपदा	13:59	ऐन्द्र	विष्टि
17	4	30	शुक्र	17:22	रेवती	12:03	वैधृति विष्कुम्भ	चतुष्पाद्

सूर्य उत्तरायण, वसन्त ऋतु वैशाख कृष्ण पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:08	18:33	तुला में	6:29 से।
6:07	18:33	तुला	भद्रा 23:05 से।
6:06	18:34	वृश्चिक में 17:28 से	भद्रा 12:00 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:54।**
6:05	18:34	वृश्चिक	सति अनसूया जयन्ती। गण्डमूल 26:57 से।
6:03	18:35	धनु में	29:54 से। गण्डमूल विचार।
6:02	18:36	धनु	भद्रा 19:02 से। गण्डमूल विचार।
6:01	18:36	धनु	भद्रा 8:11 तक। गण्डमूल 8:49 तक।
6:00	18:37	मकर में	18:04 से। **बुध मीन में 25:12।**
5:59	18:37	मकर	**शनि पूर्व में उदय 29:00।**
5:58	18:38	कुम्भ में 27:45 से	भद्रा 12:58 से 25:17 तक। पंचक आरम्भ 27:45।
5:57	18:39	कुम्भ	**वरूथिनी एकादशी व्रत।** श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती।
5:56	18:39	कुम्भ	**सूर्य अश्वि.1 मेष में 9:31, वैशाख संक्रान्ति मु.15, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से 15:55 तक। मेला वैशाखी (पंजाब)।** डॉ. अम्बेडकर जयन्ती।
5:54	18:40	मीन में	9:38 से। भद्रा 22:32 से। **प्रदोष व्रत।** मासशिवरात्रि व्रत।
5:53	18:41	मीन	भद्रा 9:22 तक। गण्डमूल 13:59 तक।
5:52	18:41	मेष में 12:03 से	**वैशाख अमावस्या।** पंचक समाप्त 12:03। मेला पिंजौर (कालका, हरियाणा)।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 18 अप्रैल से 1 मई 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
18	5	1	शनि	14:11	अश्विनी	9:43	प्रीति	बव
19	6	2	रवि	10:50	भरणी कृत्तिका	7:10 28:35	आयुष्मान्	कौलव
20	7	3	सोम	7:28	रोहिणी	26:09	सौभाग्य	गर
-	-	4	सोम	28:15	-	-	-	-
21	8	5	मंगल	25:20	मृगशिरा	23:59	शोभन	बव
22	9	6	बुध	22:50	आर्द्रा	22:13	अतिगण्ड	कौलव
23	10	7	गुरु	20:50	पुनर्वसु	20:58	सुक/धृति	गर
24	11	8	शुक्र	19:22	पुष्य	20:15	शूल	विष्टि
25	12	9	शनि	18:29	आश्लेषा	20:05	गण्ड	बालव
26	13	10	रवि	18:08	मघा	20:27	वृद्धि	तैतिल
27	14	11	सोम	18:17	पू.फाल्गुनी	21:19	ध्रुव	वणिज्
28	15	12	मंगल	18:52	उ.फाल्गुनी	22:36	व्याघात	बव
29	16	13	बुध	19:52	हस्त	24:17	हर्ष	कौलव
30	17	14	गुरु	21:13	चित्रा	26:17	वज्र	गर
1 मई	18	15	शुक्र	22:53	स्वाति	28:36	सिद्धि	विष्टि

सूर्य उत्तरायण, वसन्त – ग्रीष्म ऋतु वैशाख शुक्ल पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:51	18:42	मेष	गण्डमूल 9:43 तक।
5:50	18:42	वृष में 12:31 से	शुक्र वृष में 15:46 से। **अक्षय-तृतीया, आश्रम में वार्षिकोत्सव। 24 घंटे अखण्ड रूद्राभिषेक पाठ-पूजा।** श्रीशिवाजी जयन्ती। **भगवान परशुराम जयन्ती। केदार-बद्री यात्रा आरम्भ।**
5:49	18:43	वृष	भद्रा 17:52 से 28:15 तक। **अगस्त्यास्त।** ग्रीष्म ऋतु आरम्भ।
-	-	-	चतुर्थी तिथि का क्षय।
5:48	18:44	मिथुन में	13:01 से। **आद्यजगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्य जयन्ती।**
5:47	18:44	मिथुन	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती।
5:46	18:45	कर्क में	15:14 से। भद्रा 20:50 से। **श्रीगङ्गा जयन्ती।**
5:45	18:45	कर्क	भद्रा 8:06 तक। श्रीदुर्गाष्टमी। **श्रीबगुलामुखी जयन्ती। (अर्धरात्रि व्यापिनी)।** गण्डमूल 20:15 से।
5:44	18:46	सिंह में	20:05 से। **जानकी** (सीता) **जयन्ती।** ग.मू. विचार।
5:43	18:47	सिंह	गण्डमूल 20:27 तक।
5:42	18:47	कन्या में 27:36 से	भद्रा 6:13 से 18:17 तक। सूर्य भरणी में 25:17। शुक्र रोहिणी में 21:02। **मोहिनी एकादशी व्रत।**
5:41	18:48	कन्या	
5:40	18:49	कन्या	**प्रदोष व्रत।**
5:39	18:49	तुला में 13:14 से	भद्रा 21:13 से। श्रीनृसिंह जयन्ती। बुध अश्विनी 1 मेष में 6:52। श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती।
5:38	18:50	तुला	भद्रा 10:03 तक। **वैशाख पूर्णिमा।** श्री बुद्ध पूर्णिमा। श्री कूर्म जयन्ती। वैशाख स्नान समाप्त। श्रम दिवस। श्री सत्यनारायण व्रत। महर्षि भृगु जयन्ती।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 2 मई से 16 मई 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
2	19	1	शनि	24:51	विशाखा	पूरादिन	व्यतिपात	बालव
3	20	2	रवि	27:02	विशाखा	7:10	वरीयान	तैतिल
4	21	3	सोम	29:25	अनुराधा	9:58	परिघ	वणिज्
5	22	4	मंगल	पूरादिन	ज्येष्ठा	12:55	शिव	बव
6	23	4	बुध	7:52	मूल	15:54	सिद्ध	बालव
7	24	5	गुरु	10:15	पूर्वाषाढ़ा	18:46	साध्य	तैतिल
8	25	6	शुक्र	12:22	उत्तराषाढ़ा	21:20	शुभ	वणिज्
9	26	7	शनि	14:03	श्रवण	23:25	शुक्ल	बव
10	27	8	रवि	15:07	धनिष्ठा	24:50	ब्रह्म	कौलव
11	28	9	सोम	15:25	शतभिषा	25:29	ऐन्द्र	गर
12	29	10	मंगल	14:53	पू.भाद्रपदा	25:18	वैधृति	विष्टि
13	30	11	बुध	13:30	उ.भाद्रपदा	24:18	विष्कुम्भ	बालव
14	31	12	गुरु	11:21	रेवती	22:34	प्रीति	तैतिल
15	1 ज्येष्ठ	13	शुक्र	8:32	अश्विनी	20:15	आयुष्मान्	वणिज्
-	-	14	शुक्र	29:12	-	-	-	-
16	2	30	शनि	25:31	भरणी	17:31	सौभाग्य	चतुष्पाद्

सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:38	18:51	वृश्चिक में 24:30 से	**प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष आरम्भ।** बुध पूर्व में अस्त 20:16।
5:37	18:51	वृश्चिक	श्रीनारद-जयन्ती। वीणादान।
5:36	18:52	वृश्चिक	भद्रा 16:14 से 29:25 तक। गण्डमूल 9:58 बाद।
5:35	18:52	धनु में 12:55 से	**अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 22:31।**
5:34	18:53	धनु	गण्डमूल 15:54 तक। बुध भरणी में 27:58।
5:33	18:54	मकर में	25:27 से। श्री टैगोर-जयन्ती।
5:33	18:54	मकर	भद्रा 12:22 से 25:13 तक।
5:32	18:55	मकर	
5:31	18:56	कुम्भ में	12:13 से। पंचक आरम्भ 12:13।
5:31	18:56	कुम्भ	भद्रा 27:09 से। सूर्य कृत्ति. में 19:30। **मंगल अश्वि.1 मेष में 12:38।**
5:30	18:57	मीन में	19:25 से। भद्रा 14:53 तक।
5:29	18:58	मीन	**अपरा एकादशी व्रत। मेला भद्रकाली।** गण्डमूल 24:18 से। बुध कृत्तिका में 11:44।
5:29	18:58	मेष में 22:34 से	पंचक समाप्त 22:34। **प्रदोष व्रत। बुध वृष में 24:30। शुक्र मिथुन में 10:53।**
5:28	18:59	मेष	भद्रा 8:32 से 18:52। सूर्य वृष में 6:21। **ज्येष्ठ संक्रान्ति, मु.30। पुण्यकाल सं. दोपहर 12:45 तक।** मासशिवरात्रि व्रत। गण्डमूल 20:15 तक।
-	-	-	चतुर्दशी तिथि का क्षय।
5:27	18:59	वृष में 22:47 से	**शुद्ध ज्येष्ठ अमावस्या। शनैश्चर जयन्ती।** वटसावित्री व्रत (अमावस्या पक्ष)। भावुका अमावस्या।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 17 मई से 31 मई 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
17	3	1	रवि	21:41	कृत्तिका	14:32	शोभन अतिगण्ड	किंस्तुघ्न
18	4	2	सोम	17:54	रोहिणी	11:32	सुकर्मा	बालव
19	5	3	मंगल	14:19	मृगशिरा	8:42	धृति	गर
20	6	4	बुध	11:07	आर्द्रा पुनर्वसु	6:12 28:12	शूल	विष्टि
21	7	5	गुरु	8:27	पुष्य	26:50	गण्ड	बालव
22	8	6	शुक्र	6:25	आश्लेषा	26:08	वृद्धि	तैतिल
-	-	7	शुक्र	29:05	-	-	-	-
23	9	8	शनि	28:28	मघा	26:10	ध्रुव/व्या	विष्टि
24	10	9	रवि	28:31	पू.फाल्गुनी	26:51	हर्ष	बालव
25	11	10	सोम	29:11	उ.फाल्गुनी	28:09	वज्र	तैतिल
26	12	11	मंगल	पूरादिन	हस्त	पूरादिन	सिद्धि	वणिज्
27	13	11	बुध	6:22	हस्त	5:57	व्यतिपात	विष्टि
28	14	12	गुरु	7:58	चित्रा	8:09	वरीयान	बालव
29	15	13	शुक्र	9:51	स्वाति	10:38	परिघ	तैतिल
30	16	14	शनि	11:58	विशाखा	13:21	शिव	वणिज्
31	17	15	रवि	14:15	अनुराधा	16:12	सिद्ध	बव

सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु
प्रथम (अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:27	19:00	वृष	**ज्येष्ठ अधिक (पुरुषोत्तम) मास। प्रथम अधिक ज्येष्ठ शुक्लपक्ष आरम्भ।** भावुका करिदिन। **श्रीगङ्गा स्नान आ.।**
5:26	19:01	मिथुन में	22:05 से। चन्द्रदर्शन मु.30।
5:26	19:01	मिथुन	भद्रा 24:43 से।
5:25	19:02	कर्क में 22:39 से	भद्रा 11:07 तक।
5:25	19:03	कर्क	गण्डमूल 26:50 से। **गुरुपुष्य योग।**
5:24	19:03	सिंह में	26:08 से। भद्रा 29:05 से। शक ज्येष्ठ आरम्भ।
–	–	–	सप्तमी तिथि का क्षय।
5:24	19:04	सिंह	भद्रा 16:47 तक। गण्डमूल 26:10 तक। **श्रीदुर्गाष्टमी।**
5:23	19:04	सिंह	
5:23	19:05	कन्या में 9:07 से	**बुध पश्चिम में उदय 20:30। श्रीगङ्गा दशहरा पर्व** (हरिद्वार आदि)।
5:23	19:06	कन्या	भद्रा 17:47 से।
5:22	19:06	तुला में 19:00 से	भद्रा 6:22 तक। **पुरुषोत्तमा (कमला) एकादशी व्रत।**
5:22	19:07	तुला	**प्रदोष व्रत।**
5:22	19:07	तुला	**बुध मिथुन में 11:14।**
5:21	19:08	वृश्चिक में 6:39 से	भद्रा 11:58 से 25:06 तक। श्रीसत्यनारायण व्रत।
5:21	19:08	वृश्चिक	**अधिक ज्येष्ठ पूर्णिमा।** गण्डमूल 16:12 से।

ज्येष्ठ अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) 17 मई से 15 जून

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 1 जून से 15 जून 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
1 जून	18	1	सोम	16:38	ज्येष्ठा	19:09	सिद्ध	कौलव
2	19	2	मंगल	19:02	मूल	22:07	साध्य	तैतिल
3	20	3	बुध	21:22	पूर्वाषाढ़ा	25:00	शुभ	वणिज्
4	21	4	गुरु	23:31	उत्तराषाढ़ा	27:42	शुक्ल	बव
5	22	5	शुक्र	25:21	श्रवण	पूरादिन	ब्रह्म	कौलव
6	23	6	शनि	26:42	श्रवण	6:04	ऐन्द्र	गर
7	24	7	रवि	27:25	धनिष्ठा	7:56	वैधृति	विष्टि
8	25	8	सोम	27:24	शतभिषा	9:10	विष्कुम्भ	बालव
9	26	9	मंगल	26:35	पू.भाद्रपदा	9:40	प्रीति	तैतिल
10	27	10	बुध	24:58	उ.भाद्रपदा	9:22	आयु/सौभा	वणिज्
11	28	11	गुरु	22:37	रेवती	8:17	शोभन	बव
12	29	12	शुक्र	19:37	अश्विनी भरणी	6:29 28:06	अतिगण्ड	कौलव
13	30	13	शनि	16:08	कृत्तिका	25:17	सुकर्मा	गर
14	31	14	रवि	12:20	रोहिणी	22:14	धृति	शकुनि
15	1 आषाढ़	30	सोम	8:24	मृगशिरा	19:09	शूल गण्ड	नाग

सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु
द्वितीय (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:21	19:09	धनु में 19:09 से	**द्वितीय (अधिक) ज्येष्ठ कृष्णपक्ष आरम्भ। गुरु पुनर्वसु 4 कर्क में 25:47।**
5:21	19:09	धनु	गण्डमूल 22:07 तक।
5:20	19:10	धनु	भद्रा 8:12 से 21:22 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 22:00।**
5:20	19:10	मकर	7:42 से।
5:20	19:11	मकर	
5:20	19:11	कुम्भ में	19:04 से। भद्रा 26:42 से। पंचक आरम्भ 19:04।
5:20	19:12	कुम्भ	भद्रा 15:04 तक।
5:20	19:12	मीन में	27:37 से। **शुक्र कर्क में 17:42 से।**
5:20	19:13	मीन	
5:20	19:13	मीन	भद्रा 13:47 से 24:58 तक। गण्डमूल 9:22 से।
5:20	19:13	मेष में 8:17 से	पंचक समाप्त 8:17। **पुरुषोत्तमा (कमला) एकादशी व्रत।**
5:20	19:14	मेष	**प्रदोष व्रत।** गण्डमूल 6:29 तक।
5:20	19:14	वृष में	9:26 से। भद्रा 16:08 से 26:14 तक। मासशिवरात्रि व्रत।
5:20	19:15	वृष	पितृकार्येषु अमावस्या।
5:20	19:15	मिथुन में 8:41 से	**अधिक ज्येष्ठ अमावस्या। सोमवती अमावस्या। ज्येष्ठ अधिक (पुरुषोत्तम) मास समाप्त। शुद्ध द्वितीय ज्येष्ठ शुक्लपक्ष आरम्भ। श्रीगङ्गा स्नान आरम्भ। सूर्य मिथुन में 12:52। आषाढ़ संक्रान्ति, मु.30, पुण्यकाल संक्रान्ति सायंकाल तक। तीर्थस्नान माहात्म्य।**

ज्येष्ठ अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) 17 मई से 15 जून

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 16 जून से 29 जून 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
-	-	1	सोम	-	-	-	-	-
16	2	2	मंगल	24:53	आर्द्रा	16:13	वृद्धि	बालव
17	3	3	बुध	21:39	पुनर्वसु	13:37	ध्रुव	तैतिल
18	4	4	गुरु	18:59	पुष्य	11:33	व्याघात	वणिज्
19	5	5	शुक्र	17:00	आश्लेषा	10:07	हर्ष	बव
20	6	6	शनि	15:47	मघा	9:26	वज्र	तैतिल
21	7	7	रवि	15:21	पू.फाल्गुनी	9:32	सिद्धि	वणिज्
22	8	8	सोम	15:41	उ.फाल्गुनी	10:23	व्यतिपात	बव
23	9	9	मंगल	16:40	हस्त	11:54	वरीयान	कौलव
24	10	10	बुध	18:13	चित्रा	13:59	परिघ	गर
25	11	11	गुरु	20:10	स्वाति	16:29	शिव	वणिज्
26	12	12	शुक्र	22:23	विशाखा	19:16	सिद्ध	बव
27	13	13	शनि	24:44	अनुराधा	22:11	साध्य	कौलव
28	14	14	रवि	27:07	ज्येष्ठा	25:09	शुभ	गर
29	15	15	सोम	29:27	मूल	28:04	शुक्ल	विष्टि

सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म – वर्षा ऋतु द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
–	–	–	शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा तिथि का क्षय।
5:20	19:15	मिथुन	चन्द्रदर्शन मु.45। मंगल कृत्तिका में 9:32।
5:20	19:16	कर्क में	8:14 से। रम्भा तृतीया व्रत। महाराणा प्रताप जयन्ती।
5:20	19:16	कर्क	भद्रा 8:19 से 18:59 तक। उमा अवतार। गण्डमूल 11:33 से। **गुरुपुष्य योग।**
5:20	19:16	सिंह में	10:07 से।
5:21	19:16	सिंह	**मंगल वृष में 23:58।** अरण्य षष्ठी। विन्ध्यवासिनी पूजा। गण्डमूल 9:26 तक।
5:21	19:17	कन्या में 15:40 से	भद्रा 15:21 से 27:31 तक। सूर्य सायन कर्क में 13:55। सायन दक्षिणायन आरम्भ। वर्षा ऋतु आरम्भ।
5:21	19:17	कन्या	**सूर्य आर्द्रा में 12:25। बुध कर्क में 15:52। श्रीदुर्गाष्टमी।** धूमावती जयन्ती। मेला क्षीर-भवानी (कश्मीर) शक आषाढ़ आरम्भ।
5:21	19:17	तुला में	24:53 से।
5:21	19:17	तुला	श्रीगङ्गा स्नान।
5:22	19:17	तुला	भद्रा 7:12 से 20:10 तक। **निर्जला एकादशी व्रत।**
5:22	19:17	वृश्चिक में	12:33 से।
5:22	19:17	वृश्चिक	**शनि प्रदोष व्रत।** वट्सावित्री व्रत आरम्भ। गण्डमूल 22:11 से।
5:23	19:18	धनु में	25:09 से। भद्रा 27:07 से। गण्डमूल विचार।
5:23	19:18	धनु	भद्रा 16:17 तक। **शुद्ध ज्येष्ठ पूर्णिमा।** सन्त कबीर जयन्ती। वट्सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)। श्रीसत्यनारायण व्रत। **बुध वक्री 23:05।** गण्डमूल 28:04 तक।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 30 जून से 14 जुलाई 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
30	16	1	मंगल	पूरादिन	पूर्वाषाढ़ा	पूरादिन	ब्रह्म	बालव
1जु.	17	1	बुध	7:39	पूर्वाषाढ़ा	6:52	ऐन्द्र	कौलव
2	18	2	गुरु	9:39	उत्तराषाढ़ा	9:28	वैधृति	गर
3	19	3	शुक्र	11:21	श्रवण	11:47	विष्कुम्भ	विष्टि
4	20	4	शनि	12:41	धनिष्ठा	13:44	प्रीति	बालव
5	21	5	रवि	13:31	शतभिषा	15:13	आयुष्मान्	तैतिल
6	22	6	सोम	13:48	पू.भाद्रपदा	16:08	सौभाग्य	वणिज्
7	23	7	मंगल	13:25	उ.भाद्रपदा	16:24	शोभन	बव
8	24	8	बुध	12:22	रेवती	16:00	अतिगण्ड	कौलव
9	25	9	गुरु	10:38	अश्विनी	14:56	सुकर्मा	गर
10	26	10	शुक्र	8:17	भरणी	13:15	धृति शूल	विष्टि
-	-	11	शुक्र	29:23	-	-	-	-
11	27	12	शनि	26:05	कृत्तिका	11:04	गण्ड	कौलव
12	28	13	रवि	22:31	रोहिणी	8:29	वृद्धि	गर
13	29	14	सोम	18:50	मृगशिरा आर्द्रा	5:42 26:52	ध्रुव	विष्टि
14	30	30	मंगल	15:14	पुनर्वसु	24:10	व्याघात	नाग

सूर्य उत्तरायण, वर्षा ऋतु आषाढ़ कृष्ण पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:23	19:18	धनु	आषाढ़ कृष्णपक्ष आरम्भ।
5:24	19:18	मकर में	13:32 से। जुलाई मास आरम्भ।
5:24	19:18	मकर	भद्रा 22:30 से। ऋषभनाथ जयन्ती।
5:25	19:18	कुम्भ में 24:49 से	भद्रा 11:21 तक। पंचक आरम्भ 24:49। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:47।**
5:25	19:17	कुम्भ	**शुक्र मघा 1 सिंह में 19:13।** गुरु पुष्य 2 में 15:23।
5:25	19:17	कुम्भ	**वक्री बुध पश्चिम में अस्त 6:01।**
5:26	19:17	मीन में	भद्रा 13:48 से 25:37 तक।
5:26	19:17	मीन	**वक्री बुध मिथुन में 10:33।** गण्डमूल 16:24 से।
5:27	19:17	मेष में	16:00 से। पंचक समाप्त 16:00। ग.मू विचार।
5:27	19:17	मेष	भद्रा 21:28 से। गण्डमूल 14:56 तक।
5:28	19:17	वृष में 18:45 से	भद्रा 8:17 तक। **योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)।**
–	–	–	एकादशी तिथि का क्षय।
5:28	19:16	वृष	**योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)।**
5:29	19:16	मिथुन में 19:07 से	भद्रा 22:31 से। **प्रदोष व्रत।** मासशिवरात्रि व्रत। गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 19:27।
5:29	19:16	मिथुन	भद्रा 8:41 तक।
5:30	19:16	कर्क में 18:49 से	**आषाढ़ अमावस्या। भौमवती अमावस्या।**

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 15 जुलाई से 29 जुलाई 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
15	31	1	बुध	11:52	पुष्य	21:47	हर्ष वज्र	बव
16	1 श्रावण	2	गुरु	8:54	आश्लेषा	19:53	सिद्धि	कौलव
17	2	3	शुक्र	6:28	मघा	18:35	व्यतिपात	गर
-	-	4	शुक्र	28:43	-	-	-	-
18	3	5	शनि	27:43	पू.फाल्गुनी	18:01	वरीयान	बव
19	4	6	रवि	27:30	उ.फाल्गुनी	18:12	परिघ	कौलव
20	5	7	सोम	28:03	हस्त	19:10	शिव	गर
21	6	8	मंगल	29:17	चित्रा	20:49	सिद्ध	विष्टि
22	7	9	बुध	पूरादिन	स्वाति	23:04	साध्य	बालव
23	8	9	गुरु	7:04	विशाखा	25:43	शुभ	कौलव
24	9	10	शुक्र	9:13	अनुराधा	28:37	शुक्ल	गर
25	10	11	शनि	11:35	ज्येष्ठा	पूरादिन	ब्रह्म	विष्टि
26	11	12	रवि	13:58	ज्येष्ठा	7:35	ऐन्द्र	बालव
27	12	13	सोम	16:15	मूल	10:29	वैधृति	तैतिल
28	13	14	मंगल	18:19	पूर्वाषाढ़ा	13:11	विष्कुम्भ	वणिज्
29	14	15	बुध	20:06	उत्तराषाढ़ा	15:37	प्रीति	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु
आषाढ़ शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:30	19:15	कर्क	चन्द्रदर्शन मु.30। **गुरु पश्चिम में अस्त 19:27। गुप्त नवरात्र आरम्भ।** गण्डमूल 21:47 से।
5:31	19:15	सिंह में 19:53 से	**रथयात्रा उत्सव (श्रीजगन्नाथपुरी)। सूर्य कर्क में 23:39। श्रावण संक्रान्ति मु.30, पुण्यकाल सं. सायं 5:15 से अगले दिन प्रातः 6:03 तक। निरयण दक्षिणायन आरम्भ।** ग.मू. विचार।
5:31	19:15	सिंह	भद्रा 17:36 से 28:43 तक। गण्डमूल 18:35 तक।
-	-	-	चतुर्थी तिथि का क्षय।
5:32	19:14	कन्या में	23:59 से।
5:32	19:14	कन्या	**स्कन्द (कुमार) षष्ठी।** गुरु पुष्य 3 से 21:15।
5:33	19:13	कन्या	भद्रा 28:03 से। विवस्वत सप्तमी। सूर्य पुष्य में 11:28।
5:34	19:13	तुला में 7:55 से	भद्रा 16:40 तक। श्रीदुर्गाष्टमी। **वक्री बुध पूर्व में उदय 19:28।**
5:34	19:12	तुला	भढ़ली नवमी। **गुप्त नवरात्र समाप्त।**
5:35	19:12	वृश्चिक में	19:01 से। **बुध मार्गी 28:28।** शक श्रावण आ.।
5:35	19:11	वृश्चिक	भद्रा 22:24 से। गण्डमूल 28:37 से।
5:36	19:11	वृश्चिक	भद्रा 11:35 तक। **हरिशयनी एकादशी व्रत।** चातुर्मास्य व्रतनियमादि आरम्भ। श्रीविष्णु-शयनोत्सव।
5:36	19:10	धनु में	**प्रदोष व्रत। शनि वक्री 25:25।** ग.मू. विचार।
5:37	19:10	धनु	गण्डमूल 10:29 तक।
5:38	19:09	मकर में	19:50 से। भद्रा 18:19 से। मेला ज्वालामुखी (कश्मीर)।
5:38	19:08	मकर	भद्रा 7:13 तक। **आषाढ़ी पूर्णिमा। गुरु पूर्णिमा। व्यास पूजा।** श्रीसत्यनारायण व्रत। वायु-परीक्षा। शिवशयनोत्सव। कोकिला व्रत।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 30 जुलाई से 12 अगस्त 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
30	15	1	गुरु	21:31	श्रवण	17:44	आयुष्मान्	बालव
31	16	2	शुक्र	22:32	धनिष्ठा	19:27	सौभाग्य	तैतिल
1 अगस्त	17	3	शनि	23:08	शतभिषा	20:46	शोभन	वणिज्
2	18	4	रवि	23:16	पू.भाद्रपदा	21:37	अतिगण्ड	बव
3	19	5	सोम	22:55	उ.भाद्रपदा	22:01	सुकर्मा	कौलव
4	20	6	मंगल	22:04	रेवती	21:54	धृति	गर
5	21	7	बुध	20:43	अश्विनी	21:18	शूल	विष्टि
6	22	8	गुरु	18:53	भरणी	20:14	गण्ड	बालव
7	23	9	शुक्र	16:38	कृत्तिका	18:44	वृद्धि	गर
8	24	10	शनि	14:00	रोहिणी	16:52	ध्रुव/व्या	विष्टि
9	25	11	रवि	11:06	मृगशिरा	14:44	हर्ष	बालव
10	26	12	सोम	8:01	आर्द्रा	12:27	वज्र	तैतिल
-	-	13	सोम	28:55	-	-	-	-
11	27	14	मंगल	25:54	पुनर्वसु	10:10	सिद्धि	विष्टि
12	28	30	बुध	23:07	पुष्य	8:00	व्यतिपात	चतुष्पाद्

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु श्रावण कृष्ण पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:39	19:08	मकर	श्रावण कृष्णपक्ष आरम्भ।
5:39	19:07	कुम्भ में	6:38 से। पंचक आरम्भ 6:38। अशून्यशयन व्रत।
5:40	19:06	कुम्भ	भद्रा 10:50 से 23:08 तक। **शुक्र कन्या में 9:28।** लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव।
5:41	19:05	मीन में 15:27 से	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:17। मंगल मिथुन में 22:50।**
5:41	19:05	मीन	नाग-पंचमी (राज. व बंगाल)। गण्डमूल 22:01 से। **श्रावण प्रथम सोमवार। श्रावण मास व्रतारम्भ।**
5:42	19:04	मेष में	21:54 से। भद्रा 22:04 से। पंचक समाप्त 21:54।
5:42	19:03	मेष	भद्रा 9:24 तक। **बुध कर्क में 19:40।** शीतला सप्तमी। गण्डमूल 21:18 तक।
5:43	19:02	वृष में	25:54 से।
5:44	19:01	वृष	भद्रा 27:19 से।
5:44	19:01	मिथुन में	27:49 से। भद्रा 14:00 तक।
5:45	19:00	मिथुन	**कामिका एकादशी व्रत। गुरु पूर्व में उदय 21:54।**
5:45	18:59	कर्क में 28:44 से	भद्रा 28:55 से। **सोम प्रदोष व्रत। श्रावण द्वितीय सोमवार।**
-	-	-	त्रयोदशी तिथि का क्षय।
5:46	18:58	कर्क	भद्रा 15:25 तक। श्रावण शिवरात्रि व्रत।
5:46	18:57	कर्क	**श्रावण (हरियाली) अमावस्या।** गुरु बाल्यत्व समाप्त 21:54। गण्डमूल 8:00 बाद।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 13 अगस्त से 28 अगस्त 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
13	29	1	गुरु	20:42	आश्लेषा मघा	6:07 28:39	वरीयान	किंस्तुघ्न
14	30	2	शुक्र	18:48	पू.फाल्गुनी	27:43	परिघ	बालव
15	31	3	शनि	17:30	उ.फाल्गुनी	27:26	शिव सिद्ध	तैतिल
16	32	4	रवि	16:53	हस्त	27:51	साध्य	विष्टि
17	1 भाद्र पद	5	सोम	17:01	चित्रा	28:59	शुभ	बालव
18	2	6	मंगल	17:51	स्वाति	पूरादिन	शुक्ल	तैतिल
19	3	7	बुध	19:20	स्वाति	6:47	ब्रह्म	गर
20	4	8	गुरु	21:19	विशाखा	9:09	ऐन्द्र	विष्टि
21	5	9	शुक्र	23:37	अनुराधा	11:53	वैधृति	बालव
22	6	10	शनि	26:01	ज्येष्ठा	14:50	विष्कुम्भ	तैतिल
23	7	11	रवि	28:19	मूल	17:45	विष्कुम्भ	वणिज्
24	8	12	सोम	पूरादिन	पूर्वाषाढ़ा	20:28	प्रीति	बव
25	9	12	मंगल	6:21	उत्तराषाढ़ा	22:52	आयुष्मान्	बालव
26	10	13	बुध	8:00	श्रवण	24:48	सौभाग्य	तैतिल
27	11	14	गुरु	9:09	धनिष्ठा	26:16	शोभन	वणिज्
28	12	15	शुक्र	9:49	शतभिषा	27:14	अतिगण्ड	बव

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा – शरद् ऋतु
श्रावण शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:47	18:56	सिंह में 6:07 से	मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) आरम्भ। गण्डमूल 28:39 तक।
5:48	18:55	सिंह	चन्द्रदर्शन मु.30। **बुध पूर्व में अस्त 29:10।**
5:48	18:54	कन्या में 9:35 से	भद्रा 29:11 से। मधुस्रवा हरियाली सिंधारा तीज। स्वर्णगौरी व्रत। **भारत स्वतन्त्रता दिवस (80वाँ)।**
5:49	18:53	कन्या	भद्रा 16:53 तक। दूर्वा गणपति व्रत। वरद् चतुर्थी।
5:49	18:52	तुला में 16:20 से	**सूर्य मघा 1 सिंह में 7:58। भाद्रपद संक्रान्ति मु.30, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से दोपहर 14:22 तक। श्रीकल्कि-जयन्ती(सायाह्न-व्यापिनी)। नाग-पंचमी। श्रावण तृतीय सोमवार।**
5:50	18:51	तुला	गुरु आश्लेषा 1 में 27:10।
5:50	18:50	वृश्चिक में 26:31 से	भद्रा 19:30 से। **गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती।**
5:51	18:49	वृश्चिक	भद्रा 18:12 तक। मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी समाप्त। श्रीदुर्गाष्टमी। दूर्वाष्टमी।
5:52	18:48	वृश्चिक	गण्डमूल 11:53 से।
5:52	18:47	धनु में	14:50 से। **बुध मघा 1 सिंह में 19:32।**
5:53	18:46	धनु	भद्रा 15:10 से 28:19 तक। **पवित्रा एकादशी व्रत** (स्मार्त)। शरद् ऋतु आरम्भ। गण्डमूल 17:45 तक।
5:53	18:45	मकर में	27:06 से। **पवित्रा एकादशी व्रत (वैष्णव)। श्रावण चतुर्थ सोमवार।**
5:54	18:44	मकर	**भौम प्रदोष व्रत।**
5:54	18:43	मकर	**ऋक् उपाकर्म।**
5:55	18:42	कुम्भ में 13:36 से	भद्रा 9:09 से 21:29 तक। पंचक आरम्भ 13:36। श्रीसत्यनारायण व्रत। शुक्ल यजुर्वेदि-अथर्ववेदि उपाकर्म। हयग्रीव जयन्ती। कोकिला व्रत पूर्ण।
5:56	18:40	कुम्भ	**श्रावण पूर्णिमा। रक्षाबन्धन।** कृष्ण यजुर्वेदि-श्रावणी उपाकर्म। **दर्शन श्री अमरनाथ गुफा समाप्त। संस्कृत दिवस।** श्री गायत्री जयन्ती।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 29 अगस्त से 11 सितम्बर 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
29	13	1	शनि	9:57	पू.भाद्रपदा	27:43	सुक/धृति	कौलव
30	14	2	रवि	9:38	उ.भाद्रपदा	27:45	शूल	गर
31	15	3	सोम	8:52	रेवती	27:24	गण्ड	विष्टि
1सितं	16	4	मंगल	7:42	अश्विनी	26:43	वृद्धि	बालव
2	17	5	बुध	6:13	भरणी	25:43	ध्रुव	तैतिल
-	-	6	बुध	28:27	-	-	-	-
3	18	7	गुरु	26:26	कृत्तिका	24:30	व्याघात	विष्टि
4	19	8	शुक्र	24:14	रोहिणी	23:05	हर्ष	बालव
5	20	9	शनि	21:54	मृगशिरा	21:31	वज्र	तैतिल
6	21	10	रवि	19:30	आर्द्रा	19:53	सिद्धि	वणिज्
7	22	11	सोम	17:05	पुनर्वसु	18:14	व्यतिपात वरीयान	बव
8	23	12	मंगल	14:44	पुष्य	16:40	परिघ	तैतिल
9	24	13	बुध	12:31	आश्लेषा	15:15	शिव	वणिज्
10	25	14	गुरु	10:34	मघा	14:05	सिद्ध	शकुनि
11	26	30	शुक्र	8:57	पू.फाल्गुनी	13:17	साध्य	नाग

सूर्य दक्षिणायन, शरद् ऋतु
भाद्रपद कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:56	18:39	मीन में	21:38 से। गायत्री-जपम्।
5:57	18:38	मीन	भद्रा 21:15 से। गण्डमूल 27:45 से।
5:57	18:37	मेष में 27:24 से	भद्रा 8:52 तक। **श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 20:20।** कज्जली तीज। पंचक समाप्त 27:24।
5:58	18:36	मेष	गण्डमूल 26:43 तक।
5:58	18:35	मेष	भद्रा 28:27 से। चन्दन षष्ठी व्रत। चन्द्रोदय 21:35। हल षष्ठी। शुक्र तुला में 13:46।
–	–	–	षष्ठी तिथि का क्षय।
5:59	18:33	वृष में	7:26 से। भद्रा 15:27 तक। शीतला सप्तमी।
5:59	18:32	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत। अगस्त्य-उदय। श्रीकृष्ण जयन्ती योग।**
6:00	18:31	मिथुन में	10:19 से। श्रीगुग्गा-नवमी। गोकुलाष्टमी। नन्दोत्सव।
6:00	18:30	मिथुन	भद्रा 8:42 से 19:30 तक।
6:01	18:29	कर्क में 12:39 से	**अजा एकादशी व्रत। बुध कन्या में 13:34।**
6:01	18:27	कर्क	**वत्स द्वादशी (पूजा)। भौम प्रदोष व्रत।** गण्डमूल 16:40 से।
6:02	18:26	सिंह में 15:15 से	भद्रा 12:31 से 23:33 तक। मासशिवरात्रि व्रत। अघोरा चतुर्दशी। कैलास यात्रा आरम्भ।
6:02	18:25	सिंह	**कुशाग्रहणी अमावस्या "ॐ हुं फट् स्वाहा" से कुशोत्पाटनम्। पितृकार्येषु अमावस्या। पिठोरी अमावस्या।** गण्डमूल 14:05 तक।
6:03	18:24	कन्या में 19:08 से	**भाद्रपद अमावस्या** (देवकार्येषु)। रानी सती मेला (राजस्थान)।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 12 सितम्बर से 26 सितम्बर 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
12	27	1	शनि	7:47	उ.फाल्गुनी	12:56	शुभ	बव
13	28	2	रवि	7:09	हस्त	13:07	शुक्ल	कौलव
14	29	3	सोम	7:07	चित्रा	13:55	ब्रह्म	गर
15	30	4	मंगल	7:45	स्वाति	15:21	ऐन्द्र	विष्टि
16	31	5	बुध	9:00	विशाखा	17:23	वैधृति	बालव
17	1 आश्वि	6	गुरु	10:49	अनुराधा	19:54	विष्कुम्भ	तैतिल
18	2	7	शुक्र	13:02	ज्येष्ठा	22:45	प्रीति	वणिज्
19	3	8	शनि	15:28	मूल	25:43	आयुष्मान्	बव
20	4	9	रवि	17:52	पूर्वाषाढ़ा	28:35	सौभाग्य	कौलव
21	5	10	सोम	20:01	उत्तराषाढ़ा	पूरादिन	शोभन	तैतिल
22	6	11	मंगल	21:44	उत्तराषाढ़ा	7:07	अतिगण्ड	वणिज्
23	7	12	बुध	22:51	श्रवण	9:09	सुकर्मा	बव
24	8	13	गुरु	23:19	धनिष्ठा	10:35	धृति	कौलव
25	9	14	शुक्र	23:07	शतभिषा	11:23	शूल	गर
26	10	15	शनि	22:19	पू.भाद्रपदा	11:32	गण्ड	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन, शरद् ऋतु
भाद्रपद शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:04	18:22	कन्या	चन्द्रदर्शन मु.30। सामवेदि उपाकर्म।
6:04	18:21	तुला में	25:27 से। श्रीवराह जयन्ती।
6:05	18:20	तुला	भद्रा 19:26 से। हरितालिका तृतीया, **कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध)। चन्द्रास्त 20:03। पत्थर चौथ।**
6:05	18:19	तुला	भद्रा 7:45 तक। **ऋषि-पंचमी।** सम्वत्सरी महापर्व (जैन)।
6:06	18:17	वृश्चिक में	10:49 से।
6:06	18:16	वृश्चिक	**सूर्य षष्ठी व्रत। सूर्य कन्या में 7:52। आश्विन संक्रान्ति,** मु.30। **पुण्यकाल सं. दोप. 14:16 तक।** मुक्ताभरण सन्तान सप्तमी व्रत। विश्वकर्मा पूजन। ग.मू.19:54 से।
6:07	18:15	धनु में 22:45 से	भद्रा 13:02 से 26:15 तक। **मंगल कर्क में 16:34। श्रीमहालक्ष्मी व्रत आरम्भ** (चन्द्रोदय व्यापिनी)।
6:07	18:14	धनु	**श्रीराधाष्टमी। दधीची जयन्ती।** ग.मू.25:43 तक।
6:08	18:13	धनु	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन-सम्प्र.)।
6:08	18:11	मकर में	11:15 से। बुध चित्रा में 22:43।
6:09	18:10	मकर	भद्रा 8:53 से 21:44 तक। विष्णुश्रृंखल योग 7:07 से। **पद्मा एकादशी व्रत।**
6:09	18:09	कुम्भ में 21:57 से	पंचक आरम्भ 21:57। विष्णुश्रृंखल योग 9:09 तक। **श्रीवामन-जयन्ती।**
6:10	18:08	कुम्भ	**प्रदोष व्रत।**
6:11	18:06	मीन में 29:33 से	भद्रा 23:07 से। **अनन्त चतुर्दशी व्रत।** कदली व्रत पूजन।
6:11	18:05	मीन	भद्रा 10:43 तक। **भाद्रपद पूर्णिमा। श्रीसत्यनारायण व्रत। बुध तुला में 12:40। प्रोष्ठपदी महालय श्राद्ध आरम्भ। पूर्णिमा का श्राद्ध।**

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 27 सितम्बर से 10 अक्टूबर 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
27	11	1	रवि	20:59	उ.भाद्रपदा	11:08	वृद्धि	बालव
28	12	2	सोम	19:14	रेवती	10:17	ध्रुव/व्या	तैतिल
29	13	3	मंगल	17:11	अश्विनी	9:04	हर्ष	विष्टि
30	14	4	बुध	14:56	भरणी कृत्तिका	7:37 30:03	वज्र	बालव
1अक्टू	15	5	गुरु	12:36	रोहिणी	28:27	सिद्धि	तैतिल
2	16	6	शुक्र	10:16	मृगशिरा	26:55	व्यतिपात	वणिज्
3	17	7	शनि	8:00	आर्द्रा	25:30	वरीयान	बव
–	–	8	शनि	29:52	–	–	–	–
4	18	9	रवि	27:54	पुनर्वसु	24:14	परिघ	तैतिल
5	19	10	सोम	26:08	पुष्य	23:10	शिव	वणिज्
6	20	11	मंगल	24:35	आश्लेषा	22:18	सि/सा	बव
7	21	12	बुध	23:17	मघा	21:41	शुभ	कौलव
8	22	13	गुरु	22:17	पू.फाल्गुनी	21:21	शुक्ल	गर
9	23	14	शुक्र	21:36	उ.फाल्गुनी	21:20	ब्रह्म	विष्टि
10	24	30	शनि	21:20	हस्त	21:43	ऐन्द्र	चतुष्पाद्

सूर्य दक्षिणायन, शरद् ऋतु
आश्विन कृष्ण (श्राद्ध) पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:12	18:04	मीन	श्राद्ध-(पितृ)-पक्ष आरम्भ। प्रतिपदा का श्राद्ध।
6:12	18:03	मेष में	10:17 से। पंचक समाप्त 10:17। द्वितीया का श्राद्ध।
6:13	18:01	मेष	भद्रा 6:13 से 17:11 तक। **अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 19:33।** तृतीया का श्राद्ध। भरणी श्राद्ध। गण्डमूल 9:04 तक।
6:13	18:00	वृष में 13:14 से	चतुर्थी एवं पंचमी का श्राद्ध।
6:14	17:59	वृष	षष्ठी का श्राद्ध। चन्द्र षष्ठी व्रत।
6:14	17:58	मिथुन में 15:41 से	भद्रा 10:16 से 21:08 तक। सप्तमी का श्राद्ध। **महात्मा गाँधी जयन्ती।**
6:15	17:56	मिथुन	**श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न। शुक्र वक्री 12:45।** अष्टमी का श्राद्ध। जीवित्पुत्रिका व्रत।
–	–	–	अष्टमी तिथि का क्षय।
6:16	17:55	कर्क में	18:32 से। सौभाग्यवतीनां श्राद्ध। नवमी का श्राद्ध।
6:16	17:54	कर्क	भद्रा 15:01 से 26:08 तक। दशमी का श्राद्ध। ग.मू. 23:10 से।
6:17	17:53	सिंह में	22:18 से। **इन्दिरा एकादशी व्रत।** एकादशी का श्राद्ध।
6:17	17:52	सिंह	संन्यासिनां श्राद्ध। द्वादशी का श्राद्ध। मघा श्राद्ध। गण्डमूल 21:41 तक।
6:18	17:51	कन्या में 27:18 से	भद्रा 22:17 से। **प्रदोष व्रत।** मासशिवरात्रि व्रत। त्रयोदशी का श्राद्ध।
6:19	17:49	कन्या	भद्रा 9:57 तक। शस्त्र-विष-दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध।
6:19	17:48	कन्या	**आश्विन /महालय (शनैश्चरी) अमावस्या।** सर्वपितृ श्राद्ध। चतुर्दशी/अमावस्या का श्राद्ध। श्राद्ध समाप्त। गजच्छाया योग (सूर्योदय से सूर्यास्त)।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 11 अक्टूबर से 26 अक्टूबर 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
11	25	1	रवि	21:32	चित्रा	22:33	वैधृति	किंस्तुघ्न
12	26	2	सोम	22:14	स्वाति	23:53	विष्कुम्भ	बालव
13	27	3	मंगल	23:28	विशाखा	25:43	प्रीति	तैतिल
14	28	4	बुध	25:14	अनुराधा	28:03	आयुष्मान्	वणिज्
15	29	5	गुरु	27:26	ज्येष्ठा	पूरादिन	सौभाग्य	बव
16	30	6	शुक्र	29:55	ज्येष्ठा	6:48	शोभन	कौलव
17	1 कार्तिक	7	शनि	पूरादिन	मूल	9:47	अतिगण्ड	गर
18	2	7	रवि	8:29	पूर्वाषाढ़ा	12:49	सुकर्मा	वणिज्
19	3	8	सोम	10:52	उत्तराषाढ़ा	15:39	धृति	बव
20	4	9	मंगल	12:51	श्रवण	18:02	शूल	कौलव
21	5	10	बुध	14:12	धनिष्ठा	19:48	गण्ड	गर
22	6	11	गुरु	14:49	शतभिषा	20:49	वृद्धि	विष्टि
23	7	12	शुक्र	14:36	पू.भाद्रपदा	21:03	ध्रुव	बालव
24	8	13	शनि	13:37	उ.भाद्रपदा	20:32	व्याघात	तैतिल
25	9	14	रवि	11:57	रेवती	19:22	हर्ष	वणिज्
26	10	15	सोम	9:42	अश्विनी	17:42	वज्र	बव

सूर्य दक्षिणायन, शरद् – हेमन्त ऋतु
आश्विन शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:16	17:47	तुला में 10:04 से	**शरद् नवरात्रे आरम्भ, घटस्थापन प्रातः 6:16 से 10:08 तक। अभि. मुहू. 11:41 से 12:27 तक।** महाराजा अग्रसेन जयन्ती। मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध।
6:21	17:46	तुला	**वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त 17:56।**
6:21	17:45	वृश्चिक में	19:13 से।
6:22	17:44	वृश्चिक	भद्रा 12:21 से 25:14 तक। गण्डमूल 28:03 से।
6:22	17:43	वृश्चिक	उपाङ्ग ललिता व्रत। गण्डमूल विचार।
6:23	17:41	धनु में	6:48 से। सरस्वती आवाहन मूलभे। गण्डमूल विचार।
6:24	17:40	धनु	**सूर्य तुला में 19:50। कार्तिक संक्रान्ति मु.30। पुण्यकाल स. दोप. 13:26 बाद।** सरस्वती पूजन पू.षाभे। भद्रकाली अवतार। आकाश दीपदान आरम्भ। ग.मू.9:47 तक।
6:24	17:39	मकर में 19:33 से	भद्रा 8:39 से 21:41 तक। सरस्वती बलिदान उ.षाभे।
6:25	17:38	मकर	**श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी। सरस्वती विसर्जन श्रवणे। महानवमी (व्रत, पूजा व होम हेतु)।
6:26	17:37	मकर	**महानवमी** (बलिदान हेतु)। **नवरात्र समाप्त।** नवरात्र व्रत पारणा दोपहर 12:52 बाद। **विजयादशमी (दशहरा)।** अपराजिता शस्त्रादि शमी पूजन।
6:26	17:36	कुम्भ में 7:01 से	भद्रा 26:31 से। पंचक आ.7:01। भरत मिलाप। नवरात्र व्रत पारणा दोपहर 14:10 तक।
6:27	17:35	कुम्भ	भद्रा 14:49 तक। **पापांकुशा एकादशी व्रत।**
6:28	17:34	मीन में	15:04 से। **प्रदोष व्रत।** हेमन्त ऋतु आरम्भ।
6:29	17:33	मीन	**बुध वक्री 12:42।** गण्डमूल 20:32 से।
6:29	17:32	मेष में 19:22 से	भद्रा 11:57 से 22:50 तक। पंचक समाप्त 19:22। **शरद् पूर्णिमा व्रत।** कोजागर व्रत। वाराह-चतुर्दशी। मेला शाकम्भरी देवी। महारास पूर्णिमा। श्रीसत्यनारायण व्रत।
6:30	17:31	मेष	**आश्विन पूर्णिमा** (स्नानदानादि)। महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती। कार्तिक स्नान-नियम आरम्भ। नवान्नभक्षण। आकाश दीपदान आरम्भ। कार्तिके द्विदलं त्यजेत्। गण्डमूल 17:42 तक।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 27 अक्टूबर से 9 नवम्बर 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
27	11	1	मंगल	7:02	भरणी	15:40	सिद्धि	कौलव
–	–	2	मंगल	28:08	–	–	–	–
28	12	3	बुध	25:07	कृत्तिका	13:26	व्य/वरी	वणिज्
29	13	4	गुरु	22:11	रोहिणी	11:12	परिघ	बव
30	14	5	शुक्र	19:26	मृगशिरा	9:05	शिव	कौलव
31	15	6	शनि	16:58	आर्द्रा पुनर्वसु	7:12 29:40	सिद्ध	वणिज्
1 नवंबर	16	7	रवि	14:52	पुष्य	28:31	साध्य	बव
2	17	8	सोम	13:11	आश्लेषा	27:47	शुभ	कौलव
3	18	9	मंगल	11:55	मघा	27:27	शुक्ल	गर
4	19	10	बुध	11:04	पू.फाल्गुनी	27:30	ब्रह्म/ऐन्द्र	विष्टि
5	20	11	गुरु	10:36	उ.फाल्गुनी	27:56	वैधृति	बालव
6	21	12	शुक्र	10:31	हस्त	28:44	विष्कुम्भ	तैतिल
7	22	13	शनि	10:49	चित्रा	29:53	प्रीति	वणिज्
8	23	14	रवि	11:29	स्वाति	पूरादिन	आयुष्मान्	शकुनि
9	24	30	सोम	12:32	स्वाति	7:24	सौभाग्य	नाग

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु
कार्तिक कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:31	17:30	वृष में	21:07 से। **शुक्र उदय 28 अक्टूबर**
–	–	–	द्वितीया तिथि का क्षय।
6:31	17:30	वृष	भद्रा 14:38 से 25:07 तक। **वक्री शुक्र पूर्व में उदय 27:15।**
6:32	17:29	मिथुन में 22:07 से	**व्रत करवा चौथ (करक चतुर्थी)। चन्द्रोदय 20:04। वक्री बुध पश्चिम में अस्त 29:48।**
6:33	17:28	मिथुन	
6:34	17:27	कर्क में 24:01 से	भद्रा 16:58 से 27:55 तक। स्कन्द षष्ठी व्रत। गुरु मघा 1 सिंह में 12:02। शुक्र बाल्यत्व समाप्त 27:15।
6:34	17:26	कर्क	अहोई अष्टमी व्रत (चन्द्रोदय-व्यापिनी)। रविपुष्य योग। गण्डमूल 28:31 से।
6:35	17:25	सिंह में	27:47 से। गण्डमूल विचार।
6:36	17:25	सिंह	भद्रा 23:30 से। गण्डमूल 27:27 तक।
6:37	17:24	सिंह	भद्रा 11:04 तक।
6:38	17:23	कन्या में 9:35 से	**रमा एकादशी व्रत। वक्री शुक्र कन्या में 25:12।** गोवत्स द्वादशी। कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ।
6:38	17:22	कन्या	**प्रदोष व्रत। धन-त्रयोदशी।** यम प्रीत्यर्थं दीपदान।
6:39	17:22	तुला में 17:15 से	भद्रा 10:49 से 23:09 तक। धन्वन्तरी जयन्ती। **श्रीहनुमान जयन्ती।** (उ.भारत)। यमाय तर्पण। मासशिवरात्रि व्रत।
6:40	17:21	तुला	**नरक चतुर्दशी** (पूर्व अरुणोदय वाली)। प्रभात-स्नान। **दीपावली। श्रीमहालक्ष्मी पूजन-मूहुर्त सायं 17:38 से 20:09। (देखें पृ.128-129)।** तैलाभ्यंग, रूपचौदश। कुबेर पूजा। सायं दीपदान देवालये। चोपड़ा पूजन। कौमुदि महोत्सव सम्पन्न।
6:41	17:20	वृश्चिक में 26:48 से	**कार्तिक सोमवती अमावस्या** (तीर्थस्नान-दानादि-माहात्म्य)। मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि। श्रीमहावीर निर्वाण (जैन)। विश्वकर्मा दिवस (पंजाब)।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 10 नवम्बर से 24 नवम्बर 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
10	25	1	मंगल	14:01	विशाखा	9:20	शोभन	बव
11	26	2	बुध	15:54	अनुराधा	11:39	अतिगण्ड	कौलव
12	27	3	गुरु	18:10	ज्येष्ठा	14:19	सुकर्मा	गर
13	28	4	शुक्र	20:43	मूल	17:18	धृति	वणिज्
14	29	5	शनि	23:25	पूर्वाषाढ़ा	20:25	शूल	बव
15	30	6	रवि	26:02	उत्तराषाढ़ा	23:29	गण्ड	कौलव
16	1 मार्ग शीर्ष	7	सोम	28:20	श्रवण	26:17	गण्ड	गर
17	2	8	मंगल	30:06	धनिष्ठा	28:35	वृद्धि	विष्टि
18	3	9	बुध	पूरादिन	शतभिषा	30:11	ध्रुव	बालव
19	4	9	गुरु	7:07	पू.भाद्रपदा	30:57	व्या/हर्ष	कौलव
20	5	10	शुक्र	7:16	उ.भाद्रपदा	30:51	वज्र	गर
-	-	11	शुक्र	30:32	-	-	-	-
21	6	12	शनि	28:57	रेवती	29:55	सिद्धि	बव
22	7	13	रवि	26:38	अश्विनी	28:16	व्यतिपात	कौलव
23	8	14	सोम	23:43	भरणी	26:02	वरीयान	गर
24	9	15	मंगल	20:24	कृत्तिका	23:25	परिघ	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु
कार्तिक शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:42	17:20	वृश्चिक	अन्नकूट। **गोवर्धन पूजा।** गोक्रीडा। बलिपूजा। मार्गपाली पूजा।
6:42	17:19	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु.15। **भातृ (भाई) दूज। यमद्वितीया।** विश्वकर्मा पूजन। यमुना-स्नान। कलम-दवात पूजन। चित्रगुप्त पूजा। गण्डमूल 11:39 से।
6:43	17:18	धनु में	14:19 से। मंगल मघा 1 में सिंह में 20:16।
6:44	17:18	धनु	भद्रा 7:27 से 20:43 तक। दूर्वा गणपति व्रत। बुध मार्गी 21:23। शुक्र मार्गी 29:58। गण्डमूल 17:18 तक।
6:45	17:17	मकर में	27:12 से। सौभाग्य/जया-पंचमी। ज्ञान-पंचमी।
6:46	17:17	मकर	**सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)-छठ।**
6:47	17:16	मकर	भद्रा 28:20 से। **सूर्य वृश्चिक में 19:42। मार्गशीर्ष संक्रान्ति, मु.30, पुण्यकाल सं. दोपहर 13:18 बाद।** आकाशदीपदान समाप्ति।
6:47	17:16	कुम्भ में 15:31 से	भद्रा 17:13 तक। पंचक आरम्भ 15:31। गोपाष्टमी।
6:48	17:16	कुम्भ	**अक्षय-कूष्माण्ड-नवमी।** आमला नवमी। जगद्धात्रृ पूजा। आरोग्य व्रत।
6:49	17:15	मीन में	24:50 से।
6:50	17:15	मीन	भद्रा 18:54 से 30:32 तक। **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)। भीष्मपंचक आरम्भ। तुलसी विवाह।**
-	-	-	एकादशी तिथि का क्षय।
6:51	17:14	मेष में 29:55 से	पंचक समाप्त 29:55। **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)। चातुर्मास्य-व्रत-नियम-समाप्त।** हरिप्रबोधोत्सव। गण्डमूल 17:18 तक।
6:52	17:14	मेष	**प्रदोष व्रत। शुक्र तुला में 17:01।** ग.मू. 28:16 तक।
6:52	17:14	मेष	भद्रा 23:43 से। **वैकुण्ठ चतुर्दशी।**
6:53	17:14	वृष में 7:25 से	भद्रा 10:04 तक। **कार्तिक पूर्णिमा। श्रीगुरु नानक जयन्ती।** भीष्मपंचक समाप्त। कार्तिक स्नान समाप्त। आकाश दीपदान समाप्त। कार्तिक व्रतोद्यापन। श्रीसत्यनारायण व्रत। त्रिपुरोत्सव। मेला पुष्करतीर्थ (राज.)।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 25 नवम्बर से 8 दिसम्बर 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
25	10	1	बुध	16:51	रोहिणी	20:37	शिव	कौलव
26	11	2	गुरु	13:16	मृगशिरा	17:48	सि/सा	गर
27	12	3	शुक्र	9:49	आर्द्रा	15:09	शुभ	विष्टि
-	-	4	शुक्र	30:41	-	-	-	-
28	13	5	शनि	27:58	पुनर्वसु	12:51	शुक्ल	कौलव
29	14	6	रवि	25:47	पुष्य	11:00	ब्रह्म	गर
30	15	7	सोम	24:12	आश्लेषा	9:43	ऐन्द्र	विष्टि
1 दिसंबर	16	8	मंगल	23:15	मघा	9:01	वैधृति	बालव
2	17	9	बुध	22:53	पू.फाल्गुनी	8:56	विष्कुम्भ	तैतिल
3	18	10	गुरु	23:04	उ.फाल्गुनी	9:24	प्रीति	वणिज्
4	19	11	शुक्र	23:45	हस्त	10:23	आयुष्मान्	बव
5	20	12	शनि	24:53	चित्रा	11:49	सौभाग्य	कौलव
6	21	13	रवि	26:23	स्वाति	13:29	शोभन	गर
7	22	14	सोम	28:13	विशाखा	15:48	अतिगण्ड	विष्टि
8	23	30	मंगल	30:22	अनुराधा	18:17	सुकर्मा	चतुष्पाद्

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:54	17:13	वृष	मृगछोड़ी स्नान आरम्भ।
6:55	17:13	मिथुन में	7:11 से। भद्रा 23:33 से।
6:56	17:13	मिथुन	भद्रा 9:49 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 20:06।** सौभाग्य सुन्दरी व्रत।
-	-	-	चतुर्थी तिथि का क्षय।
6:57	17:13	कर्क में	7:23 से।
6:57	17:13	कर्क	भद्रा 24:47 से। गण्डमूल 11:00 से।
6:58	17:13	सिंह में	9:43 से। भद्रा 13:00 तक। गण्डमूल विचार।
6:59	17:12	सिंह	**श्रीकालभैरवाष्टमी।** भैरव-जयन्ती। गण्डमूल समाप्त 9:01।
7:00	17:12	कन्या में	14:59 से। **बुध वृश्चिक में 17:25।**
7:01	17:12	कन्या	भद्रा 10:59 से 23:04 तक।
7:01	17:12	तुला में	23:03 से। **उत्पन्ना एकादशी व्रत।**
7:02	17:13	तुला	राहु धनिष्ठा 2 मकर, केतु आश्लेषा 4 कर्क में 22:32।
7:03	17:13	तुला	भद्रा 26:23 से। **प्रदोष व्रत।**
7:04	17:13	वृश्चिक में 9:14 से	भद्रा 15:18 तक। मासशिवरात्रि व्रत। मेला पुरमण्डल। देविका स्नान (ऊधमपुर, जम्मू-कश्मीर)। श्रीबालाजी जयन्ती।
7:04	17:13	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष अमावस्या** भौमवती अमावस्या। तीर्थस्नान माहात्म्य। बुध पूर्व में अस्त 17:17। गण्डमूल 18:17 बाद।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 9 दिसम्बर से 23 दिसम्बर 2026 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
9	24	1	बुध	पूरादिन	ज्येष्ठा	21:01	धृति	किंस्तुघ्न
10	25	1	गुरु	8:47	मूल	23:58	शूल	बव
11	26	2	शुक्र	11:24	पूर्वाषाढ़ा	27:05	गण्ड	कौलव
12	27	3	शनि	14:07	उत्तराषाढ़ा	30:13	वृद्धि	गर
13	28	4	रवि	16:48	श्रवण	पूरादिन	ध्रुव	विष्टि
14	29	5	सोम	19:17	श्रवण	9:13	व्याघात	बालव
15	30	6	मंगल	21:20	धनिष्ठा	11:53	हर्ष	कौलव
16	1 पौष	7	बुध	22:46	शतभिषा	14:03	वज्र	गर
17	2	8	गुरु	23:27	पू.भाद्रपदा	15:31	सिद्धि	विष्टि
18	3	9	शुक्र	23:15	उ.भाद्रपदा	16:10	व्यतिपात	बालव
19	4	10	शनि	22:10	रेवती	15:58	वरीयान	तैतिल
20	5	11	रवि	20:15	अश्विनी	14:56	परि/शिव	वणिज्
21	6	12	सोम	17:37	भरणी	13:09	सिद्ध	बालव
22	7	13	मंगल	14:24	कृत्तिका	10:46	साध्य	तैतिल
23	8	14	बुध	10:48	रोहिणी मृगशिरा	7:57 28:53	शुभ	वणिज्
-	-	15	बुध	30:58	-	-	-	-

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त-शिशिर ऋतु
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:05	17:13	धनु में	21:01 से।
7:06	17:13	धनु	चन्द्रदर्शन मु.30। शनि मार्गी 29:03। गण्डमूल 23:58 तक।
7:06	17:13	धनु	
7:07	17:14	मकर में	9:52 से। भद्रा 27:28 से। **गुरु वक्री 30:23।**
7:08	17:14	मकर	भद्रा 16:48 तक।
7:09	17:14	कुम्भ में 22:36 से	पंचक आरम्भ 22:36 से। श्रीपञ्चमी। श्रीराम-विवाहोत्सव। नाग-पंचमी।
7:09	17:15	कुम्भ	स्कन्द (गुह) षष्ठी। चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र)।
7:10	17:15	कुम्भ	भद्रा 22:46 से। **सूर्य मूल 1 धनु में 10:24। पौष संक्रान्ति मु.15,** पुण्यकाल सं. सारा दिन। मित्र (विष्णु) सप्तमी।
7:10	17:15	मीन में	9:13 से। भद्रा 11:07 तक। **श्रीदुर्गाष्टमी।**
7:11	17:16	मीन	गण्डमूल 16:10 से।
7:12	17:16	मेष में	15:58 से। पंचक समाप्त 15:58।
7:12	17:17	मेष	भद्रा 9:13 से 20:15 तक। **मोक्षदा एकादशी व्रत। श्रीगीता जयन्ती।** गण्डमूल 14:56 तक।
7:13	17:17	वृष में 18:36 से	**सोम प्रदोष व्रत।** शिशिर ऋतु आरम्भ। भरणी दीपम्। सायन उत्तरायण आरम्भ। अखण्ड द्वादशी।
7:13	17:18	वृष	बुध मूल 1 धनु में 7:39। पिशाचमोचन श्राद्ध। शिव चतुर्दशी व्रत।
7:14	17:18	मिथुन में 18:26 से	भद्रा 10:48 से 20:53 तक। **मार्गशीर्ष पूर्णिमा** (स्नानदानादि 10:48 बाद)। श्रीदत्तात्रेय जयन्ती। श्रीसत्यनारायण व्रत। त्रिपुरभैरव जयन्ती। अन्नपूर्णा जयन्ती।
-	-	-	मार्गशीर्ष पूर्णिमा का क्षय।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 24 दिसम्बर 2026 से 7 जनवरी 2027 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
24	9	1	गुरु	27:08	आर्द्रा	25:47	शुक्ल	बालव
25	10	2	शुक्र	23:27	पुनर्वसु	22:50	ब्रह्म/ऐन्द्र	तैतिल
26	11	3	शनि	20:06	पुष्य	20:13	वैधृति	वणिज्
27	12	4	रवि	17:14	आश्लेषा	18:05	विष्कुम्भ	बालव
28	13	5	सोम	14:59	मघा	16:33	प्रीति	तैतिल
29	14	6	मंगल	13:26	पू.फाल्गुनी	15:43	आयुष्मान्	वणिज्
30	15	7	बुध	12:37	उ.फाल्गुनी	15:37	सौभाग्य	बव
31	16	8	गुरु	12:33	हस्त	16:14	शोभन	कौलव
1जन	17	9	शुक्र	13:11	चित्रा	17:30	अतिगण्ड	गर
2	18	10	शनि	14:25	स्वाति	19:20	सुकर्मा	विष्टि
3	19	11	रवि	16:09	विशाखा	21:37	धृति	बालव
4	20	12	सोम	18:16	अनुराधा	24:15	शूल	तैतिल
5	21	13	मंगल	20:40	ज्येष्ठा	27:08	गण्ड	गर
6	22	14	बुध	23:15	मूल	30:08	वृद्धि	विष्टि
7	23	30	गुरु	25:55	पूर्वाषाढ़ा	पूरादिन	ध्रुव	चतुष्पाद्

सूर्य दक्षिणायन, शिशिर ऋतु पौष कृष्ण पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:14	17:19	मिथुन	पौष कृष्णपक्ष आरम्भ।
7:14	17:19	कर्क में	17:33 से। तुलसी पूजन महोत्सव।
7:15	17:20	कर्क	भद्रा 9:47 से 20:06 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 20:08।** गण्डमूल 20:13 से।
7:15	17:20	सिंह में	18:05 से। गण्डमूल विचार।
7:16	17:21	सिंह	गण्डमूल 16:33 तक।
7:16	17:22	कन्या में	21:38 से। भद्रा 13:26 से 25:02 तक।
7:16	17:22	कन्या	अष्टका श्राद्ध (अपराह्न व्यापिनी)।
7:17	17:23	तुला में	28:47 से। रुक्मिणी-अष्टमी।
7:17	17:24	तुला	भद्रा 25:48 से। **शुक्र वृश्चिक में 23:20।**
7:17	17:24	तुला	भद्रा 14:25 तक।
7:17	17:25	वृश्चिक में	15:01 से। **सफला एकादशी व्रत।** सुरुप द्वादशी।
7:17	17:26	वृश्चिक	गण्डमूल 24:15 से।
7:18	17:27	धनु में 27:08 से	भद्रा 20:40 से। **भौम प्रदोष व्रत।** मासशिवरात्रि व्रत।
7:18	17:27	धनु	भद्रा 9:58 तक। गण्डमूल 30:08 तक।
7:18	17:28	धनु	**पौष अमावस्या।**

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 8 जनवरी से 22 जनवरी 2027 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
8	24	1	शुक्र	28:34	पूर्वाषाढ़ा	9:13	व्याघात	किंस्तुघ्न
9	25	2	शनि	31:08	उत्तराषाढ़ा	12:16	हर्ष	बालव
10	26	3	रवि	पूरादिन	श्रवण	15:12	वज्र	तैतिल
11	27	3	सोम	9:29	धनिष्ठा	17:54	सिद्धि	गर
12	28	4	मंगल	11:30	शतभिषा	20:14	व्यतिपात	विष्टि
13	29	5	बुध	13:02	पू.भाद्रपदा	22:05	वरीयान	बालव
14	1 माघ	6	गुरु	13:59	उ.भाद्रपदा	23:19	परिघ	तैतिल
15	2	7	शुक्र	14:14	रेवती	23:51	शिव	वणिज्
16	3	8	शनि	13:44	अश्विनी	23:39	सिद्ध	बव
17	4	9	रवि	12:27	भरणी	22:43	साध्य	कौलव
18	5	10	सोम	10:28	कृत्तिका	21:06	शुभ/शुक्र	गर
19	6	11	मंगल	7:50	रोहिणी	18:54	ब्रह्म	विष्टि
-	-	12	मंगल	28:42	-	-	-	-
20	7	13	बुध	25:12	मृगशिरा	16:17	ऐन्द्र	कौलव
21	8	14	गुरु	21:31	आर्द्रा	13:24	वैधृति	गर
22	9	15	शुक्र	17:48	पुनर्वसु	10:25	विष्कुम्भ	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन–उत्तरायण, शिशिर ऋतु
पौष शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:18	17:29	मकर में	15:59 से। पौष शुक्लपक्ष आरम्भ।
7:18	17:30	मकर	चन्द्रदर्शन मु.30। बुध मकर में 24:36।
7:18	17:31	कुम्भ में	28:35 से। पंचक आरम्भ 28:35। **मंगल वक्री 18:26।**
7:18	17:31	कुम्भ	भद्रा 22:30 से।
7:18	17:32	कुम्भ	भद्रा 11:30 तक।
7:18	17:33	मीन में	15:40 से। **लोहड़ी-पर्व** (पं., हरि., जम्मू, दिल्ली)
7:18	17:34	मीन	**सूर्य मकर में 21:09। मकर (माघ) संक्रान्ति मु.45। पुण्यकाल संक्रान्ति दोपहर 14:45 बाद। हरिद्वार अर्धकुम्भ मेला आरम्भ (स्नान)। निरयण उत्तरायण आरम्भ।** गण्डमूल 23:19 से।
7:18	17:35	मेष में 23:51 से	भद्रा 14:14 से 25:59 तक। पंचक समाप्त 23:51। मार्तण्ड सप्तमी। **श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती।**
7:18	17:36	मेष	श्रीदुर्गाष्टमी। महारुद्र व्रत। गण्डमूल 23:39 तक।
7:17	17:37	वृष में	28:22 से।
7:17	17:37	वृष	भद्रा 21:09 से। **पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त)।**
7:17	17:38	मिथुन में 29:39 से	भद्रा 7:50 तक।। **पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव)।**
–	–	–	द्वादशी तिथि का क्षय।
7:17	17:39	मिथुन	**प्रदोष व्रत।**
7:16	17:40	कर्क में 29:10 से	भद्रा 21:31 से। शक माघ आरम्भ। **बुध पश्चिम में उदय 29:26।** ईशान व्रत।
7:16	17:41	कर्क	भद्रा 7:40 तक। **पौष पूर्णिमा। माघ स्नान आरम्भ।** शाकम्भरी जयन्ती। श्रीसत्यनारायण व्रत।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 23 जनवरी से 6 फरवरी 2027 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
23	10	1	शनि	14:13	पुष्य आश्लेषा	7:32 28:54	प्रीति आयुष्मान्	कौलव
24	11	2	रवि	10:58	मघा	26:41	सौभाग्य	गर
25	12	3	सोम	8:11	पू.फाल्गुनी	25:04	शोभन	विष्टि
-	-	4	सोम	30:01	-	-	-	-
26	13	5	मंगल	28:34	उ.फाल्गुनी	24:07	अतिगण्ड	कौलव
27	14	6	बुध	27:54	हस्त	23:57	सुकर्मा	गर
28	15	7	गुरु	28:03	चित्रा	24:33	धृति	विष्टि
29	16	8	शुक्र	28:59	स्वाति	25:55	शूल	बालव
30	17	9	शनि	30:34	विशाखा	27:56	गण्ड	तैतिल
31	18	10	रवि	पूरादिन	अनुराधा	30:28	वृद्धि	वणिज्
1फर	19	10	सोम	8:42	ज्येष्ठा	पूरादिन	ध्रुव	विष्टि
2	20	11	मंगल	11:11	ज्येष्ठा	9:22	व्याघात	बालव
3	21	12	बुध	13:51	मूल	12:26	हर्ष	तैतिल
4	22	13	गुरु	16:32	पूर्वाषाढ़ा	15:33	वज्र	वणिज्
5	23	14	शुक्र	19:06	उत्तराषाढ़ा	18:33	सिद्धि	शकुनि
6	24	30	शनि	21:26	श्रवण	21:20	व्यतिपात	चतुष्पाद्

सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु माघ कृष्ण पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:16	17:42	सिंह में 28:54 से	माघ कृष्णपक्ष आरम्भ। गण्डमूल 7:32 से।
7:15	17:43	सिंह	भद्रा 21:35 से। वक्री गुरु आश्लेषा 4 कर्क में 25:30। गण्डमूल 26:41 तक।
7:15	17:43	कन्या में 30:45 से	भद्रा 8:11 तक। **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:09।** गौरी-वक्रतुण्ड चतुर्थी।
-	-	-	चतुर्थी तिथि का क्षय।
7:15	17:44	कन्या	भारत गणतन्त्र दिवस (78वा)।
7:14	17:45	कन्या	भद्रा 27:54 से। **बुध कुम्भ में 27:35।**
7:14	17:46	तुला में	12:09 से। भद्रा 15:59 तक।
7:13	17:47	तुला	**शुक्र मूल 1 धनु में 18:40।**
7:13	17:48	वृश्चिक में	21:22 से।
7:12	17:49	वृश्चिक	भद्रा 19:38 से। गण्डमूल 30:28 से।
7:11	17:50	वृश्चिक	भद्रा 8:42 तक।
7:11	17:50	धनु में	9:22 से। **षट्तिला एकादशी व्रत।**
7:10	17:51	धनु	**प्रदोष व्रत।** तिल द्वादशी। गण्डमूल 12:26 तक।
7:10	17:52	मकर में 22:18 से	भद्रा 16:32 से 29:49 तक। मासशिवरात्रि व्रत।
7:09	17:53	मकर	
7:08	17:54	मकर	**माघ (मौनी) / शनैश्चरी अमावस्या। तीर्थस्नान माहात्म्य (हरिद्वार, प्रयागराजादि)। हरिद्वार अर्धकुम्भ मेला स्नान। महोदय योग (सूर्योदय से 21:14 तक)।**

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 7 फरवरी से 20 फरवरी 2027 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
7	25	1	रवि	23:28	धनिष्ठा	23:49	वरीयान	किंस्तुघ्न
8	26	2	सोम	25:07	शतभिषा	25:57	परिघ	बालव
9	27	3	मंगल	26:20	पू.भाद्रपदा	27:41	शिव	तैतिल
10	28	4	बुध	27:05	उ.भाद्रपदा	28:56	सिद्ध	वणिज्
11	29	5	गुरु	27:19	रेवती	29:42	साध्य	बव
12	30	6	शुक्र	27:00	अश्विनी	29:56	शुभ	कौलव
13	1 फाल्गुन	7	शनि	26:07	भरणी	29:38	शुक्ल	गर
14	2	8	रवि	24:42	कृत्तिका	28:47	ब्रह्म	विष्टि
15	3	9	सोम	22:45	रोहिणी	27:26	ऐन्द्र	बालव
16	4	10	मंगल	20:20	मृगशिरा	25:38	वैधृ/विष्क	तैतिल
17	5	11	बुध	17:32	आर्द्रा	23:29	प्रीति	विष्टि
18	6	12	गुरु	14:28	पुनर्वसु	21:06	आयुष्मान्	बालव
19	7	13	शुक्र	11:15	पुष्य	18:36	सौभाग्य	तैतिल
20	8	14	शनि	8:01	आश्लेषा	16:08	शोभन	वणिज्
-	-	15	शनि	28:54	-	-	-	-

सूर्य उत्तरायण, शिशिर–वसन्त ऋतु
माघ शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:08	17:55	कुम्भ में	10:37 से। पंचक आरम्भ 10:37। **गुप्त नवरात्र आरम्भ।**
7:07	17:56	कुम्भ	चन्द्रदर्शन मु.15।
7:06	17:56	मीन में	21:17 से। **गौरी तृतीया व्रत। बुध वक्री 23:06।**
7:05	17:57	मीन	भद्रा 14:43 से 27:05 तक। **वरद्-तिल-कुन्द-चतुर्थी।** गण्डमूल 28:06 से।
7:04	17:58	मेष में 29:42 से	पंचक समाप्त 29:42। **वसन्त-पञ्चमी।** श्रीपञ्चमी। सरस्वती-लक्ष्मी पूजन। **हरिद्वार अर्धकुम्भ मेला स्नान।**
7:04	17:59	मेष	**वक्री बुध पश्चिम में अस्त 18:02।** ग.मू 29:56 तक।
7:03	18:00	मेष	भद्रा 26:07 से। **सूर्य कुम्भ में 10:07। फाल्गुन संक्रान्ति मु.15, पुण्यकाल सं. सायं 16:31 तक।** रथसप्तमी। पुत्र-आरोग्य व्रत। भानु-सप्तमी।
7:02	18:00	वृष में	11:28 से। भद्रा 13:25 तक। **भीष्माष्टमी।**
7:01	18:01	वृष	**गुप्त नवरात्र समाप्त।**
7:00	18:02	मिथुन में	14:35 से।
6:59	18:03	मिथुन	भद्रा 6:56 से 17:32 तक। **जया एकादशी व्रत।**
6:58	18:04	कर्क में 15:43 से	**भीष्म-द्वादशी। प्रदोष व्रत।** वसन्त ऋतु आरम्भ।
6:57	18:04	कर्क	गण्डमूल 18:36 से।
6:56	18:05	सिंह में 16:08 से	भद्रा 8:01 से 18:28 तक। **माघ पूर्णिमा (8:01 बाद)। माघस्नान समाप्त।** श्रीगुरु रविदास जयन्ती। श्रीललिता जयन्ती। **हरिद्वार अर्धकुम्भ मेला स्नान। चन्द्रमा उपच्छाया ग्रहण = स्पर्श-26:43। परमग्रास-28:43। मोक्ष-30:43। इस उपच्छाया ग्रहण का कोई सूतक नहीं लगेगा, स्नानदानादि के माहात्म्य का विचार नहीं होगा।**
–	–	–	माघ पूर्णिमा तिथि का क्षय।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 21 फरवरी से 8 मार्च 2027 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
21	9	1	रवि	26:04	मघा	13:51	अतिगण्ड	बालव
22	10	2	सोम	23:40	पू.फाल्गुनी	11:55	सु/धृति	तैतिल
23	11	3	मंगल	21:50	उ.फाल्गुनी	10:29	शूल	वणिज्
24	12	4	बुध	20:41	हस्त	9:39	गण्ड	बव
25	13	5	गुरु	20:18	चित्रा	9:33	वृद्धि	कौलव
26	14	6	शुक्र	20:44	स्वाति	10:14	ध्रुव	गर
27	15	7	शनि	21:55	विशाखा	11:40	व्याघात	विष्टि
28	16	8	रवि	23:47	अनुराधा	13:48	हर्ष	बालव
1मार्च	17	9	सोम	26:08	ज्येष्ठा	16:27	वज्र	तैतिल
2	18	10	मंगल	28:45	मूल	19:28	सिद्धि	वणिज्
3	19	11	बुध	पूरादिन	पूर्वाषाढ़ा	22:35	व्यतिपात	बव
4	20	11	गुरु	7:25	उत्तराषाढ़ा	25:36	वरीयान	बालव
5	21	12	शुक्र	9:55	श्रवण	28:21	परिघ	तैतिल
6	22	13	शनि	12:04	धनिष्ठा	30:42	शिव	वणिज्
7	23	14	रवि	13:47	शतभिषा	पूरादिन	सिद्ध	शकुनि
8	24	30	सोम	14:59	शतभिषा	8:35	साध्य	नाग

सूर्य उत्तरायण, वसन्त ऋतु फाल्गुन कृष्ण पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:56	18:06	सिंह	गण्डमूल 13:51 तक।
6:55	18:07	कन्या में	17:30 से।
6:54	18:07	कन्या	भद्रा 10:45 से 21:50 तक। **वक्री बुध मकर में 28:42।**
6:53	18:08	तुला में 21:31 से	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:57। शुक्र मकर में 15:15। वक्री बुध पूर्व में उदय 18:21।**
6:52	18:09	तुला	
6:50	18:10	वृश्चिक में	29:14 से। भद्रा 20:44 से।
6:49	18:10	वृश्चिक	भद्रा 9:20 तक। श्रीनाथ-उत्सव।
6:48	18:11	वृश्चिक	जानकी व्रत। गण्डमूल 13:48 से।
6:47	18:12	धनु में	16:27 से। गण्डमूल विचार।
6:46	18:12	धनु	भद्रा 15:27 से 28:45। गण्डमूल 19:28 तक।
6:45	18:13	मकर में	29:21 से। **बुध मार्गी 18:01।**
6:44	18:14	मकर	**विजया एकादशी व्रत।**
6:43	18:14	मकर	**प्रदोष व्रत।**
6:42	18:15	कुम्भ में 17:35 से	भद्रा 12:04 से 24:56 तक। पंचक आरम्भ 17:35। **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत। आश्रम में श्रीभीडभञ्जन महादेव की रात में 4 प्रहर की पूजा एवं अभिषेक।** शिवयोग (27:05 तक)। **हरिद्वार अर्धकुम्भ अमृत स्नान (प्रथम)।**
6:41	18:16	कुम्भ	
6:39	18:16	मीन में 27:40 से	**फाल्गुन सोमवती अमावस्या।** तीर्थस्नान-दानादि-माहात्म्य। मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि। **हरिद्वार अर्धकुम्भ अमृत स्नान (द्वितीय)।**

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1948 9 मार्च से 22 मार्च 2027 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
9	25	1	मंगल	15:41	पू.भाद्रपदा	9:59	शुभ	बव
10	26	2	बुध	15:53	उ.भाद्रपदा	10:53	शुक्ल	कौलव
11	27	3	गुरु	15:38	रेवती	11:20	ब्रह्म	गर
12	28	4	शुक्र	14:58	अश्विनी	11:23	ऐन्द्र	विष्टि
13	29	5	शनि	13:55	भरणी	11:03	वैधृति	बालव
14	30	6	रवि	12:33	कृत्तिका	10:24	विष्कुम्भ	तैतिल
15	1 चैत्र	7	सोम	10:52	रोहिणी	9:27	प्रीति	वणिज्
16	2	8	मंगल	8:55	मृगशिरा	8:13	आयुष्मान्	बव
17	3	9	बुध	6:44	आर्द्रा पुनर्वसु	6:46 29:08	सौभाग्य शोभन	कौलव
-	-	10	बुध	28:22	-	-	-	-
18	4	11	गुरु	25:52	पुष्य	27:21	अतिगण्ड	वणिज्
19	5	12	शुक्र	23:18	आश्लेषा	25:32	सुकर्मा	बव
20	6	13	शनि	20:46	मघा	23:45	धृति	कौलव
21	7	14	रवि	18:22	पू.फाल्गुनी	22:07	शूल	गर
22	8	15	सोम	16:14	उ.फाल्गुनी	20:46	गण्ड	बव

सूर्य उत्तरायण, वसन्त ऋतु
फाल्गुन शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:38	18:17	मीन	चन्द्रदर्शन मु.45।
6:37	18:18	मीन	श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती।
6:36	18:18	मेष में 11:20 से	भद्रा 27:18 से। पंचक समाप्त 11:20। **बुध कुम्भ में 29:05।**
6:35	18:19	मेष	भद्रा 14:58 तक। गण्डमूल 11:23 तक।
6:34	18:20	वृष में	16:55 से। याज्ञवल्क्य जयन्ती।
6:32	18:20	वृष	
6:31	18:21	मिथुन में 20:52 से	भद्रा 10:52 से 21:54 तक। **सूर्य मीन में 6:59। चैत्र संक्रान्ति, मु.45, पुण्यकाल संक्रान्ति दोपहर 13:23 तक। होलाष्टक आरम्भ।** अन्नपूर्णा अष्टमी (10:52 बाद)।
6:30	18:22	मिथुन	
6:29	18:22	कर्क में 23:33 से	
–	–	–	दशमी तिथि का क्षय।
6:28	18:23	कर्क	भद्रा 15:07 से 25:52 तक। **आमलकी एकादशी व्रत।** गण्डमूल 27:21 से। गुरुपुष्य योग।
6:26	18:23	सिंह में	25:32 से। गोविन्द द्वादशी।
6:25	18:24	सिंह	**शनि प्रदोष व्रत।** महेश्वर व्रत। गण्डमूल 23:45 तक।
6:24	18:25	कन्या में 27:45 से	भद्रा 18:22 से 29:18 तक। **होलिका दहन** (प्रदोष में)। **शुक्र कुम्भ में 18:51।** श्रीसत्यनारायण व्रत। वृषदान व्रत। **शनि पश्चिम में अस्त 18:35।**
6:23	18:25	कन्या	**फाल्गुन पूर्णिमा। होली पर्व। होलाष्टक समाप्त।** श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती। होलिका विभूति धारण। धूलिवन्दन। शक चैत्र एवं संवत् 1949 आरम्भ।

श्री विक्रम सम्वत् 2083, शाके 1949 23 मार्च से 6 अप्रैल 2027 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
23	9	1	मंगल	14:29	हस्त	19:50	वृद्धि	कौलव
24	10	2	बुध	13:15	चित्रा	19:26	ध्रुव	गर
25	11	3	गुरु	12:38	स्वाति	19:40	व्याघात हर्ष	विष्टि
26	12	4	शुक्र	12:44	विशाखा	20:36	वज्र	बालव
27	13	5	शनि	13:34	अनुराधा	22:15	सिद्धि	तैतिल
28	14	6	रवि	15:06	ज्येष्ठा	24:32	व्यतिपात	वणिज्
29	15	7	सोम	17:12	मूल	27:18	वरीयान	बव
30	16	8	मंगल	19:40	पूर्वाषाढ़ा	30:21	वरीयान	कौलव
31	17	9	बुध	22:17	उत्तराषाढ़ा	पूरादिन	परिघ	तैतिल
1अप्रै	18	10	गुरु	24:46	उत्तराषाढ़ा	9:26	शिव	वणिज्
2	19	11	शुक्र	26:53	श्रवण	12:17	सिद्ध	बव
3	20	12	शनि	28:27	धनिष्ठा	14:42	साध्य	कौलव
4	21	13	रवि	29:24	शतभिषा	16:33	शुभ	गर
5	22	14	सोम	29:41	पू.भाद्रपदा	17:47	शुक्ल	विष्टि
6	23	30	मंगल	29:21	उ.भाद्रपदा	18:23	ब्रह्म	चतुष्पाद्

सूर्य उत्तरायण, वसन्त ऋतु चैत्र कृष्ण पक्ष			
सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:22	18:26	कन्या	**होला-मेला। ध्वजारोहण। वसन्तोत्सव।** धुलैण्डी। आम्रकुसुम प्राशन।
6:20	18:27	तुला में	7:33 से। भद्रा 24:57 से। **सन्त तुकाराम जयन्ती।**
6:19	18:27	तुला	भद्रा 12:38 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:44।**
6:18	18:28	वृश्चिक में	14:18 से। श्रीभगवान्नारायण जयन्ती।
6:17	18:28	वृश्चिक	श्रीरंग-पंचमी। मेला गुरु रामराय (देहरादून)।
6:16	18:29	धनु में	24:32 से। भद्रा 15:06 से 28:09 तक। एकनाथ षष्ठी।
6:14	18:30	धनु	शीतला-सप्तमी। गण्डमूल 27:18 तक।
6:13	18:30	धनु	शीतलाष्टमी व्रत।
6:12	18:31	मकर में	13:08 से।
6:11	18:31	मकर	भद्रा 11:32 से 24:46 तक। **मंगल मार्गी 19:38।**
6:10	18:32	कुम्भ में 25:33 से	पंचक आरम्भ 25:33। **पापमोचनी एकादशी व्रत।**
6:08	18:33	कुम्भ	द्विपुष्कर योग 14:42 तक।
6:07	18:33	कुम्भ	भद्रा 29:24 से। **प्रदोष व्रत।** वारुणी योग (सू.उ से 16:33 तक)।
6:06	18:34	मीन में 11:32 से	भद्रा 17:33 तक। **बुध मीन में 16:13।** मेला पृथुदक्-पिहोवातीर्थ। मासशिवरात्रि व्रत।
6:05	18:34	मीन	**चैत्र भौमवती अमावस्या। वि.सं.2083 पूर्ण।** गण्डमूल 18:23 से।

ग्रह राशिगोचर
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026–2027 ई०

राशि	दिनाङ्क	घं.मि.
सूर्य		
मीन	15 मार्च 2026	01:08 से
मेष	14 अप्रैल 2026	09:38 से
वृषभ	15 मई 2026	06:28 से
मिथुन	15 जून 2026	12:58 से
कर्क	16 जुलाई 2026	23:44 से
सिंह	17 अगस्त 2026	08:03 से
कन्या	17 सितम्बर 2026	07:58 से
तुला	17 अक्टूबर 2026	19:57 से
वृश्चिक	16 नवम्बर 2026	19:48 से
धनु	16 दिसम्बर 2026	10:29 से
मकर	14 जनवरी 2027	21:14 से
कुंभ	13 फरवरी 2027	10:12 से
मीन	15 मार्च 2027	07:04 से
मंगल		
कुंभ	23 फरवरी 2026	11:57 से
मीन	2 अप्रैल 2026	15:37 से
मेष	11 मई 2026	12:47 से
वृष	21 जून 2026	00:07 से
मिथुन	2 अगस्त 2026	22:59 से
कर्क	18 सितम्बर 2026	16:44 से
सिंह	12 नवम्बर 2026	20:30 से
कर्क	9 मार्च 2027	23:53 से
बुध		
कुंभ	3 फरवरी 2026	21:54 से
मीन	11 अप्रैल 2026	01:20 से
मेष	30 अप्रैल 2026	06:55 से
वृष	15 मई 2026	00:34 से
मिथुन	29 मई 2026	11:14 से
कर्क	22 जून 2026	15:41 से
मिथुन	7 जुलाई 2026	10:32 से
कर्क	5 अगस्त 2026	19:58 से
सिंह	22 अगस्त 2026	19:33 से
कन्या	7 सितम्बर 2026	13:35 से
तुला	26 सितम्बर 2026	12:41 से
वृश्चिक	2 दिसम्बर 2026	17:30 से

राशि	दिनाङ्क	घं.मि.
बुध		
धनु	22 दिसम्बर 2026	07:42 से
मकर	10 जनवरी 2027	00:39 से
कुंभ	28 जनवरी 2027	03:36 से
मकर	24 फरवरी 2027	04:33 से
कुंभ	12 मार्च 2027	05:13 से
मीन	5 अप्रैल 2027	16:18 से
गुरु		
मिथुन	5 दिसम्बर 2025	15:38 से
कर्क	2 जून 2026	02:25 से
सिंह	31 अक्टूबर 2026	12:50 से
कर्क	25 जनवरी 2027	00:52 से
शुक्र		
मीन	2 मार्च 2026	01:01 से
मेष	26 मार्च 2026	05:13 से
वृष	19 अप्रैल 2026	15:51 से
मिथुन	14 मई 2026	10:58 से
कर्क	8 जून 2026	17:47 से
सिंह	4 जुलाई 2026	19:18 से
कन्या	1 अगस्त 2026	09:33 से
तुला	2 सितम्बर 2026	13:51 से
कन्या	6 नवम्बर 2026	00:45 से
तुला	22 नवम्बर 2026	17:38 से
वृश्चिक	1 जनवरी 2027	23:27 से
धनु	29 जनवरी 2027	18:45 से
मकर	24 फरवरी 2027	15:19 से
कुंभ	21 मार्च 2027	18:55 से
शनि		
मीन	29 मार्च 2025	23:01 से
मेष	3 जून 2027	06:23 से
राहु		
कुंभ	29 मई 2025	23:03 से
मकर	25 नवम्बर 2026	16:34 से
केतु		
सिंह	29 मई 2025	23:03 से
कर्क	25 नवम्बर 2026	16:34 से

शुभ व्यापार आरम्भ मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026–2027 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
20 अप्रैल	सोम	मु. प्रातः 7:28 तक
23 अप्रैल	गुरु	ल. 2, 3
24 अप्रैल	शुक्र	ल. 2, 3
8 मई	शुक्र	ल. 2, 3 अभि. (भद्रा.परिहार)
10 मई	रवि	ल. 2, 3 अभिजित्
17 जून	बुध	ल.(रा.दा.)
22 जून	सोम	मु.10:31 बाद
24 जून	बुध	ल.4 (रा.दा.), 6
27 जून	शनि	ल. 4, 6 अभिजित्
1 जुलाई	बुध	मु.6:52 बाद, ल. 4, 6 (मु. 16:05 तक)
4 जुलाई	शनि	मु.12:41 से 13:44 तक
9 जुलाई	गुरु	मु.10:38 से14:56 तक,ल.4,6
11 जुलाई	शनि	मु.11:04बाद,अभि
20 अगस्त	गुरु	मु.9:09 बाद ल.6,7,अभि.
30 अगस्त	रवि	7:22 तक शूलदोष ल. 6,7, अभि.
4 सितम्बर	गुरु	ल. 6,7, अभि.
7 सितम्बर	सोम	मु.6:41बाद,ल.6,7 अभि.।
12 सितम्बर	शनि	मु.13:47 बाद
13 सितम्बर	रवि	ल.6,7,8,अभिजित्
14 सितम्बर	सोम	मु.प्रातः7:07 तक
21 सितम्बर	सोम	7,8,अभिजित्
1 नवम्बर	रवि	ल.8,9, अभिजित्
7 नवम्बर	शनि	ल.8,9,(चंद्र निर्बल) मु.10:49 तक
11 नवम्बर	बुध	मु. 11:39 तक
21 नवम्बर	शनि	ल. 9,10,अभिजित् (भीष्मपंचक पर विचार)
25 नवम्बर	बुध	ल. 9,10
26 नवम्बर	गुरु	ल.9,10,अभिजित्
28 नवम्बर	शनि	ल.9,10,अभिजित्
29 नवम्बर	रवि	मु.11:00 तक
3 दिसम्बर	गुरु	मु.9:24 तक
4 दिसम्बर	शुक्र	मु.10:23 बाद
5 दिसम्बर	शनि	ल.9,अभिजित्
12 दिसम्बर	शनि	मु.10:07 तक,ल.9
सन् 2027 ई०		
15 जनवरी	शुक्र	मु. 8:57 बाद, ल.1
22 जनवरी	शुक्र	म.7:40 बाद,पुष्ये शुक्र वेधऽभाव
28 जनवरी	गुरु	ल.1,अभि.(भद्रा-परिहार)
31 जनवरी	रवि	ल.1,अभिजित्
18 फरवरी	गुरु	ल. 1,2, अभिजित्
19 फरवरी	शुक्र	मु. 11:15 तक
25 फरवरी	गुरु	मु. प्रातः 9:33 तक
27 फरवरी	शनि	मु. 11:40 बाद,ल.2

शुभ व्यापार आरम्भ मुहूर्त्त, वि. सं. 2083 (2027)

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण	दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
28 फरवरी	रवि	मु. 13:48 तक, ल.1,2,अभि.	10 मार्च	बुध	मु.10:53 तक, ल.1,2,
4 मार्च	गुरु	ल. 1,2, अभिजित्	11 मार्च	गुरु	मु.11:20 बाद,ल.2, अभि.

यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त्त, वि. सं. 2083 (2026–2027)

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण	दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
20 मार्च	शुक्र	ल.1, 2, अभिजित्	1 जुलाई	बुध	ल.4 ,मु.6:52 बाद
28 मार्च	शनि	ल.1, 2, 3,	सन् 2027 ई०		
29 मार्च	रवि	मु.7:47 बाद, ल.1, 2, 3, अभि.	19 जनवरी	मंगल	ल.11 , 1 (क्षत्रियाणां केवल)
20 अप्रैल	सोम	मु.प्रातः7:28 तक केवल।	8 फरवरी	सोम	ल.11,1,अभिजित्
			21 फरवरी	रवि	मु.13:51 बाद,ल.3
6 मई	बुध	ल.2,3 (मु.7:52 बाद)	22 फरवरी	सोम	मु.11:55 तक।
17 जून	बुध	ल. 4 ,6	25 फरवरी	गुरु	मु. 9:33 तक
19 जून	शुक्र	मु. 10:07 तक।	10 मार्च	बुध	मु.10:53 तक
24 जून	बुध	ल.4, मु.13:59 तक	11 मार्च	गुरु	मु.11 ,20 बाद

मुहूर्त्त सम्बन्धी

✲ बालक के मुण्डन जन्म या गर्भाधान काल से 1,3,5 इत्यादि विषम वर्षों में करने का विधान है। कुछ विद्वान् बालक के जन्म मास एवं जन्म नक्षत्र और विरूद्ध चन्द्र (4,8,12) वें चूड़ाकर्म करने का निषेध मानते हैं-(चूड़ामणि) ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में करने का निषेध माना गया है। कुल परम्परानुसार नवरात्रों में सिद्ध शक्ति पीठ या तीर्थ स्थलों पर बिना निर्धारित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि शुभ कार्य सम्पादित कराते हैं।

चूडाकर्म मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026–2027 ई०

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	मुहूर्त्तविवरण
21 अप्रैल	मंगल	मृग	ल.2,3, (क्षत्रियाणां केवलम्)
23 अप्रैल	गुरु	पुन.	ल.2 ,3 , अभि.
24 अप्रैल	शुक्र	पुष्य	मु. 8:06 बाद, ल.2(8:06 बाद), 3
30 अप्रैल	गुरु	चित्रा	ल.2,3,(रिक्तातिथि विचार),परन्तु लग्न बल से परिहार है।
4 मई	सोम	ज्ये.	मु.9:58 बाद।
10 मई	रवि	धनि.	ल.2, 3 (ब्राह्मणानां केवलम्)
17 जून	बुध	पुन.	ल.4 (रा.दा.)
22 जून	सोम	हस्त	मु.10:31 बाद।
24 जून	बुध	चित्रा	ल.4,(रा.दा.), 6
9 जुलाई	गुरु	अश्वि.	ल.4(रा.दा.),6 मु.10:38 से 14:56 तक।
			सन् 2027 ई०
15 जनवरी	शुक्र	रेव.	मु.8:57 बाद, ल.11, अभि., मु.14:14 तक।
22 जनवरी	शुक्र	पु./पु.	ल 11,अभि. (मु. 7:40 बाद) (पुष्यनक्षत्रे शुक्रवेधऽभावः)
28 जनवरी	गुरु	चित्रा	ल.11 अभिजित् (भद्रा-परिहार)
1 फरवरी	सोम	ज्ये.	ल.11 अभिजित् (भद्रा-परिहार)
2 फरवरी	मंगल	ज्ये.	मु.प्रातः 9:22 तक (क्षत्रियाणां)
8 फरवरी	सोम	शत्.	बुध युति परिहार,ल.11 अभि.।
11 फरवरी	गुरु	रेव.	ल.1 अभिजितत (चं.दा.)
16 फरवरी	मंगल	मृग.	मु.10:46 बाद, ल.1,2,अभि. (क्षत्रियाणां केवल)
18 फरवरी	गुरु	पुन.	ल.1 अभिजित्
19 फरवरी	शुक्र	पुष्य.	ल.1,2,अभिजित्
25 फरवरी	गुरु	चित्रा.	मु.प्रातः 9:33 तक
11 मार्च	गुरु	अश्वि	मु.11:20 बाद, ल.2 अभि.

शुभ विवाह मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
20 अप्रैल	सोम	दि.ल.2 (चं.शु.के.दान), 3(चं.शु.दा.), 4 (गु. दा.),गोधूलि, रा.ल. 8 (गु.रा.दा.) 9 (षष्ठस्थ चं.शु.परिहार व पूज्य),10(26:09 तक,गु.दा.),भद्रा परिहार(स्वर्गगते) भद्रा परिहार (स्वर्गगते), रा.ल.10 (26:09 बाद),
21 अप्रैल	मंगल	दि.ल.2(चं.शु.के.दा.),3(चं.शु.दा.),4(12:31 तक,12:31से 44:55 अतिगण्ड दोष गु.दा.), गोधूलि रा.ल.8 (गु.रा.दा.), 9 (23:59 तक, षष्ठस्थ शु. परिहार)
25 अप्रैल	शनि	केतु युति परिहार, रा.ल. 8 (गु.शु.दा.), 22:57 से 27:08 तक क्रान्तिसाम्य दोष
26 अप्रैल	रवि	केतुयुति परिहार, दि.ल. 2 (शु.दा.) 3(शु.दा.), 4(गु. दा.), गोधूलि
29 अप्रैल	बुध	24:28 तक वज्र-दोष, रा.ल. 10 (गु.दा.)
30 अप्रैल	गुरु	दि.ल. 2(शु.दा.),3 (गु.दा.), 4 (गु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 8, 9, (षष्ठस्थ शु.परिहार, शु.पूज्य),10(गु.दा.)-21:13 सि भद्रा-परिहार (पाताले)
5 मई	मंगल	गोधूलि,रा.ल. 8 (गु.पूज्य, रा.दा.),9 (षष्ठस्थ शुक्र परिहार, चं.शु. पूज्य), 10 (च.गु.दा.),[26:25 से अगले दिन प्रातः 9:09 तक गुरुपादवेध]
6 मई	बुध	प्रातः 9:09 तक गुरुपादवेध, दि.ल.3 (9:09 बाद, गु.दा.)
7 मई	गुरु	गोधूलि, रा.ल. 8 (गु.शु.रा.दा.), 9 (षष्ठस्थ शु.परिहार,चं. गु.शु.दा.), 10 (च.गु.दा.), (दग्धा तिथि परिहार)
8 मई	शुक्र	दि.ल. 2 (शु.के.दा.), 3 (अष्टमस्थ चं.परिहार), 4 (चं. गु.दा.)-दग्धातिथि परिहार। गोधूलि, रा.ल.8 (21:20 तक)-भद्रा परिहार (पाताले)
9 मई	शनि	18:55 से 23:53 तक क्रान्तिसाम्य दोष, रा.ल.10 (चं.दा.)
10 मई	रवि	दि.ल.2 (शु.दा.),3 (अष्टमस्थ चं.परिहार,चं.गु.पूज्य), 4 (चं.गु.दा.), गोधूलि, रा.ल.8 (गु.शु.दा.),9 (षष्ठस्थ शु.परिहार, शु.पूज्य),10 (24:50 तक, गु. पूज्य),
13 मई	बुध	मृत्युबाण दोष सायं 17:03 तक, रा.ल.10 (24:18 बाद, चं.गु.दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
19 जून	शुक्र	14:54 से 18:30 तक वज्र दोष, दि.ल. 8 (18:30 बाद,लग्नेश मं.अष्टमस्थ दोष परिहार, लग्नोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा,मं.दा.व पूज्य),गोधूलि,रा.ल.10(अष्टमस्थ चं.परिहार,चं.दा.),2(के.दा.),(केतुयुतिपरिहार),
20 जून	शनि	दि.ल.4 (9:26 तक, गु.शु.दा.)-(केतुयुति परिहार)
22 जून	सोम	10:31 तक व्यतीपात दोष, गोधूलि लग्न(दग्धा परिहार),रा.ल.10(गु.शु.दा.),1(शु.दा.),
23 जून	मंगल	दि.ल. 4 (गु.शु.दा.), 10:14 से 13:14 तक परिघ दोष। 13:14 तक परिघ दोष, गोधूलि, रा.ल.10 (गु.शु.दा.),1 (चं.श.दा.)
24 जून	बुध	दि.ल.4 (गु.शु.दा.)
26 जून	शुक्र	मृत्युबाण दोपहर 12:53 तक, रा.ल. 10 (बु.गु.शु.दा.), 1 (अष्टमस्थ चं.परिहार, चं.श. पूज्य)
27 जून	शनि	दि.ल. 4 (बु.गु.शु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 10 (22:11 तक, बु.गु.शु.दा.)
29 जून	सोम	प्रातः 7:53 तक बुधपादवेध, गोधूलि , रा.ल.10 (बु.गु.शु.दा.), 1 (श.दा.)-भद्रा परिहार
1 जुलाई	बुध	दि.ल. 4 (6:52 बाद, लग्नेश चं. षष्ठस्थ परिहार, चं.पूज्य), 7 (अष्टमस्थ मं.परिहार, लग्नेश शुक्र एकादशस्थ शुभप्रद), 16:05 से वैधृति दोष
3 जुलाई	शुक्र	11:47 से 18:16 तक शुक्रपादवेध, गोधूलि, रा.ल. 10 (अष्टमस्थ शुक्र परिहार, चं.शु.दा.), 1 (श.दा.),
4 जुलाई	शनि	दि.ल. 4 (लग्नेश चं. अष्टमस्थ परिहार, गुरु केन्द्रगते शुभप्रदाः, चं.गु. पूज्य)
6 जुलाई	सोम	13:48 से 25:37 तक भद्रादोष (भूलोके), रा.ल. 1 (25:37 बाद, श.दा.) अल्पकाले
7 जुलाई	मंगल	दि.ल. 4 (गु.दा.),14:31 से अतिगण्ड दोष
8 जुलाई	बुध	गोधूलि, रा.ल0. 10 (अष्टमस्थ शुक्र परिहार, गु.शु.दा.), 1 (चं.श.दा. व पूजा)

शुभ विवाह मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
9 जुलाई	गुरु	दि.ल. 4 (गु.दा.)
11 जुलाई	शनि	रा.ल. 10 (गु.दा. अष्टमस्थ शु. परिहार), 1 (श.दा.) (भौमयुति परिहार)
13 अगस्त	गुरु	दि.ल. 7 (12:17 तक शु.दा.), 12:17 से 15:17 तक परिघ दोष, रा.ल. 1 (षष्ठस्थ शु.परिहार, शु.श.दा.), 2 (के.दा.), (केतु युति परिहार)
18 अगस्त	मंगल	प्रातः 8:56 से 21:22 तक मृत्युबाण दोष, रा.ल. 1 (षष्ठस्थ शु.परिहार, शु.श. पूज्य), 2 (सू.के.दा.), 4 (बु.गु.शु.दा.),
20 अगस्त	गुरु	दि.ल. 7 (शु.दा.), 8 (लग्नेश में अष्टमस्थ परिहार, मं. पूज्य), 10 (बु.गु.दा.), रा.ल. 1 (षष्ठस्थ शुक्र व अष्टमस्थ चं. परिहार, चं.शु.श.दा.), 2 (चं.दा.), 4(28:26 तक), 28:26 से वैधृति दोष
22 अगस्त	शनि	दि.ल. 10 (बु.गु.दा.), रा.ल. 1 (षष्ठस्थ शु.परिहार, शु.श.दा.), 2 (अष्टमस्थ चं.परिहार),4 (बु.गु.दा.), (26:01 तक दग्धातिथि परिहार),
23 अगस्त	रवि	दि.ल. 7 (शु.दा.), 10 (चं.बु.गु.दा., 17:45 तक) (भद्रा परिहार-पाताले)
24 अगस्त	सोम	रा.ल. 1 (षष्ठस्थ शु.परिहार, शु.पूज्य), 2 (अष्टमस्थ चं.परिहार, चं.दा. व पूज्य) 4 (च.बु.गु.दा.)
25 अगस्त	मंगल	दि.ल. 7 (शु.दा.), 10 (गु.दा.), रा.ल. 1 (षष्ठस्थ शु. परिहार, शु. पूज्य)
29 अगस्त	शनि	रा.ल. 4 (27:43 बाद, गु.शु.दा.), 29:22 से शूलदोष
30 अगस्त	रवि	प्रातः 7:22 तक शूलदोष, दि.ल. 7 (चं.शु. पूज्य दान वा, षष्ठस्थ चं.परिहार), 10 (गु.दा.), गोधूलि, 21:15 से भद्रा विचार (भूलोके)
3 सितम्बर	गुरु	रा.ल. 4 (गु.दा.)
4 सितम्बर	शुक्र	दि.ल. 7 (अष्टमस्थ चं.परिहार, चं.शु.दा.), 15:44 से 19:20 तक वज्र दोष, रा.ल. 1 (शु.दा.), 2(23:05 तक, चं.के.दा.) रा.ल.2(23:05बाद,च.के.दा.),4(चं.गु.दा.),

शुभ विवाह मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
5 सितम्बर	शनि	दि.ल. 7(10:19 तक चं.अष्टमस्थ है, परन्तु उसका परिहार हो रहा है, तदुपरान्त 10:19 से नवमस्थ शुभ है, चं.शु.दा.), 10 (षष्ठस्थ च.परिहार, चं.गु.दा.), रा.ल. 1 (21:31 तक, श.दा.), मृत्युबाण 24:27 से है।
12 सितम्बर	शनि	प्रातः 10:03 से 13:47 तक क्रान्तिसाम्य दोष, दि.ल. 10 (गु.दा.), रा.ल. 1 (षष्ठस्थ चं. परिहार, शु.दा.), 2 (लग्नेश शु.षष्ठस्थ परिहार), 4(गु.दा.),
13 सितम्बर	रवि	दि.ल. 7 (चं.शु.दा.), 8 (लग्नेश मं. अष्टमस्थ परिहार, मं.पूज्य, मु. 13:07 तक)। दि.ल. 8 (13:07 बाद लग्नेश मं. अष्टमस्थ परिहार, मं.पूज्य), 10 (गु.दा.), रा.ल.1(श.दा.), (षष्ठस्थ चं.परिहार), 2 (के.दा.), 4 (गु.दा.)
14 सितम्बर	सोम	दि.ल. 7 (चं.शु.दा.), 8(लग्नेश मंगल अष्टमस्थ परिहार, मं.रा.दा.) दि.ल. 10 (गु.दा.), भद्रा परिहार-पाताले, रा.ल. 1(चं.शु.दा.), 2 (षष्ठस्थ चं.परिहार), 4 (गु.दा.)
21 सितम्बर	सोम	दि.ल.7 (शु.दा.), 8 (रा.ल.), 9 (अष्टमस्थ मं.परिहार, मं.गु.दा.), 16:06 से 18:30 तक अतिगण्ड दोष, रा.ल. 1 (शु.दा.), 2 (लग्नेश शु. षष्ठस्थ-परिहार), 3 (अष्टमस्थ चं.परिहार)
2 नवम्बर	सोम	क्रान्तिसाम्य दोष 24:35 तक, रा.ल.6 (27:47 बाद, चं.गु.दा.)-गुरु-केतु युति परिहार।
3 नवम्बर	मंगल	दि.ल. 8 (रा.के.दा.), 9 (अष्टमस्थ मंगल परिहार, मं.दा.), गोधूलि, रा.ल. 2 (लग्नेश शुक्र षष्ठस्थ परिहार, के.दा.), 3 (23:30 से भद्रा विचार-भूलोके)
10 नवम्बर	मंगल	दि.ल. 9 (चं.दान व पूज्य), 1 (षष्ठस्थ शु. परिहार, बु.शु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 3 (षष्ठस्थ चं.परिहार), 4 (शु.दा.)
11 नवम्बर	बुध	दि.ल. 8 (चं.दा.), 9 (11:39 तक, अष्टमस्थ मं. परिहार)
12 नवम्बर	गुरु	गोधूलि, रा.ल. 2 (के.दा.), 3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार)
13 नवम्बर	शुक्र	दि.ल. 8 (बु.दा.), 9 (चं. दान व पूज्य)-भद्रा परिहार (पाताले)

शुभ विवाह मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026–2027 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
21 नवम्बर	शनि	दि.ल. 9 (सू.गु.दा.), 1 (षष्ठस्थ शु. परिहार), गोधूलि, रा.ल.3,4 (26:31 से व्यतिपात दोष)-भीष्मपंचक विचार
22 नवम्बर	रवि	23:30 तक व्यतीपात दोष, रा.ल. 7 (चं.बु.शु.दा.), (भीष्मपंचक विचार)
24 नवम्बर	मंगल	रा.ल. 7 (अष्टमस्थ चंद्र परिहार, चं.बु.शु.दा.) (भीष्मपंचक विचार)
25 नवम्बर	बुध	दि.ल. 9 (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं.दा.), 1 (बु.शु.दा.), 3 (20:37 तक, चं.दा. व पूज्य)। रा.ल. 3 (20:37 बाद), 4, 7 (अष्टमस्थ चं.परिहार, चं.बु.शु.दा.)
26 नवम्बर	गुरु	दि.ल.9(चं.दा.),1(बु.शु.दा.)(17:26 से मृत्युबाण दोष)
2 दिसम्बर	बुध	दि.ल. 9 (8:56 बाद), 1 (षष्ठस्थ चं. परिहार, बु.शु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 3, 4 (सू.गु.दा.), 7 (चं.बु.शु.दा.)-दग्धातिथि परिहार
3 दिसम्बर	गुरु	दि.ल. 9 (9:24 तक केवल)-अल्पकाले
4 दिसम्बर	शुक्र	दि.ल. 1 (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं.शु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु. पूज्य), 4 (सू.दा.), 7 (चं.शु.दा.)
5 दिसम्बर	शनि	दि.ल. 9 दि.ल. 1 (चं.शु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु.दा.), 4 (22:32 तक, श.दा.), 24:53 से कृष्ण त्रयोदशी
11 दिसम्बर	शुक्र	रा.ल. 7 (27:05 बाद, शु.दा.)
12 दिसम्बर	शनि	दि.ल. 9 (चं.दा.), प्रातः 10:07 से 17:45 तक क्रान्तिसाम्य दोष, रा.ल. 3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु. पूज्य), 7 (शु.दा.)-भद्रा परिहार (पाताले)
15 जनवरी	शुक्र	प्रातः 8:57 तक सूर्य क्षीणांश, दि.ल. 1 (अष्टमस्थ शु.परिहार, लग्नोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, शु. पूज्य, के.दा.), 14:14 से भद्रा विचार (भूलोके)
18 जनवरी	सोम	रा.ल. 7 (अष्टमस्थ चं.परिहार, पूज्य), 8 (चं.शु.दा.), 9 (षष्ठस्थ चं.परिहार-स्वर्गगते)

शुभ विवाह मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2027 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
19 जनवरी	मंगल	दि.ल. 1 (अष्टमस्थ शु.परिहार, लग्नोऽपरि गु. दृष्टि शुभप्रदा, शु. पूज्य के.दा.), 2 (शु.दा.)-दग्धातिथि व भद्रा परिहार (स्वर्गगते)
23 जनवरी	शनि	रा.ल. 9 (28:54 बाद)
24 जनवरी	रवि	दि.ल. 1 (अष्टमस्थ शु.परिहार, लग्नोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, शु.पूज्य, के.दा.), 2 (शु.दा.)-16:58 से 28:48 तक मृत्युबाण-दोष, 16:59 से सूर्यवेध
25 जनवरी	सोम	22:54 से 25:18 तक अतिगण्ड दोष, रा.ल. 7 (25:18 बाद, रा.दा.), 8 (शु.दा.),
26 जनवरी	मंगल	दि.ल. 1 (अष्टमस्थ शु.परिहार, शु.दा. व पूज्य), 2 (शु.दा.)
27 जनवरी	बुध	रा.ल. 7 (चं.दा.), 8 (शु.दा.), (भद्रा परिहार-पाताले)
28 जनवरी	गुरु	दि.ल. 1 (12:09 तक षष्ठस्थ चं.परिहार, अष्टमस्थ शु.परिहार, शु.पूज्य, के.दा.), शूलदोष, 2, 3 (षष्ठस्थ शु.परिहार), भद्रा परिहार (पाताले), 16:58 से 18:58 तक रा.ल. 7 (24:33 तक, तुला लग्न अल्पकाले, चं.दा.)
31 जनवरी	रवि	दि.ल. 1 (के.दा.), 3 (शु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 7 (रा.दा.), 8, 9 (लग्नेश गु. अष्टमस्थ परिहार, गु.दा.),
2 फरवरी	मंगल	दि.ल. 1 (के.दा.), 13:36 से 25:24 तक मृत्युबाण दोष, रा.ल. 7 (25:24 बाद, रा.दा.), 8, 9 (लग्नेश गुरु अष्टमस्थ परिहार, गु.शु.दा.)-दग्धा परिहार
3 फरवरी	बुध	दि.ल. 1 (के.दा.), (मृत्युबाण परिहार)
9 फरवरी	मंगल	रा.ल. 9 (लग्नेश गु. अष्टमस्थ परिहार, शुक्र केन्द्रगते शुभप्रदा, गु. पूज्य)
10 फरवरी	बुध	दि.ल.(चं.पूज्य, के.दा.),2 (लग्नेश शु. अष्टमस्थ परिहार), 3 (14:43 तक, 14:43 से 27:05 तक भद्रा (भूलोके), रा.ल. 8 (27:05 से, वृश्चिक ल. अल्पकाले), 9 (लग्नेश गु.अष्टमस्थ परिहार)
15 फरवरी	सोम	दि.ल. 1 (के.दा.), 2 (12:33 तक), 12:33 से वैधृति दोष

शुभ विवाह मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2027 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
16 फरवरी	मंगल	प्रातः 10:46 तक वैधृ.-विष्कम्भ दोष, दि.ल. 1 (10:46 बाद, श.दा.), 2 (लग्नेश शु.अष्टमस्थ परिहार), 3, रा.ल. 7 (अष्टमस्थ चं.परिहार), 8 (चं.दा., वृश्चिक लग्न 25:38 तक)
20 फरवरी	शनि	भौमयुति परिहार, 18:28 तक भद्रा विचार (भूलोके)रा.ल. 7 (रा.दा.), 8, 9 (लग्नेश गु. अष्टमस्थ परिहार)
21 फरवरी	रवि	दि.ल. 1 (के.दा.), 2 (लग्नेश शु. अष्टमस्थ परिहार, शु. पूज्य दान वा), 3 (13:51 तक)
24 फरवरी	बुध	दि.ल. 1 (9:39 बाद, चं.के.दा., षष्ठस्थ चं.परिहार), 2(लग्नेश शु.अष्टमस्थ-परिहार),रा.ल.7(चं.रा.दा.), 8(चं.दा.),
27 फरवरी	शनि	दि.ल. 2 (11:40 बाद चं.दा.), रा.ल. 7 (रा.दा.)
28 फरवरी	रवि	दि.ल. 1 (चं.श.दा., अष्टमस्थ चं. परिहार), 2 (चं.दा.),
1 मार्च	सोम	रा.ल. 7 (रा.दा.), 8 (मं.दा.)
2 मार्च	मंगल	दि.ल. 1 (श.के.दा.), 2 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य दान वा)-भद्रा (पाताले)
3 मार्च	बुध	25:07 तक व्यतीपात दोष, रा.ल. 8 (25:07 बाद), 9 (लग्नेश गुरु अष्टमस्थ-परिहार, गु.दा.)
4 मार्च	गुरु	मृत्युबाण 7:01 से 19:59 तक, रा.ल. 7 (रा.दा.), 8 (25:36 तक)
9 मार्च	मंगल	दि.ल. 2 (सायं 18:10 से 22:07 तक क्रान्तिसाम्य दोष, रा.ल. 7 (2:07 बाद, चं.रा.दा.) (षष्ठस्थ चं. परिहार), 8 (गु.दा.), 9 (लग्नेश गु .व मं. अष्टमस्थ परिहार, मं.गु.दा.),
10 मार्च	बुध	दि.ल. 1 (चं.श.के. दान व पूज्य), 2 (10:53 तक)
11 मार्च	गुरु	दि.ल. 2 (11:20 बाद, बृष लग्न अल्पकाले), रा.ल. 7 (चं.रा.दा.), 8 (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं.मं.दा.), 9 (लग्नेश उच्चस्थ होने सो अष्टमस्थ गु. परिहार), भद्रा परिहार (स्वर्गगते)
12 मार्च	शुक्र	दि.ल. 1 (चं.श.दा.), 2 (11:23 तक, चं.दा. व पूज्य), भद्रा परिहार (स्वर्गगते)

शुभ विवाह मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2027 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
20 मार्च	शुक्र	ल. 1, 2, अभिजित्
28 मार्च	शनि	ल. 1, 2, 3
29 मार्च	रवि	मु. 7:47 बाद, ल. 1,2,3, अभि.
20 अप्रैल	सोम	मु. प्रातः 7:28 तक केवल
6 मई	बुध	ल. 1,2, (मु. 7:52 बाद)
17 जून	बुध	ल. 4, 6
19 जून	शुक्र	मु.10:07 तक
24 जून	बुध	ल. 4, मु. 13:59 तक
1 जुलाई	बुध	ल. 4, मु. 6:52 बाद
(सन् 2027 ई.)		
19 जन.	मंगल	ल. 11, 1 (क्षत्रियाणां केवल)
8 फरवरी	सोम	ल. 11, 1, अभिजित्
21 फरवरी	रवि	मु. 13:51 बाद, ल. 3
22 फरवरी	सोम	मु. 11:55 तक
25 फरवरी	गुरु	मु. 9:33 तक
10 मार्च	बुध	मु. 10:53 तक
11 मार्च	गुरु	मु. 11:20 बाद

गृहारम्भ मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026–2027 ई०

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	मुहूर्त्तविवरण
24 अप्रैल	शुक्र	पुष्य	मु.8:06 बाद, ल.2 ,3
8 मई	शुक्र	उ.षा.	ल.2,3, अभि., भद्रा परिहार
17 जून	बुध	पुन.	ल.4 (रा.दा.)
22 जून	सोम	हस्त.	मु. 12:25 बाद
1 जुलाई	बुध	उ.षा.	मु. 6:52 बाद, ल.4,6 (मु.16:05 तक)
4 जुलाई	शनि	धनि.	मु. 12:41 से 13:44 तक
9 जुलाई	गुरु	अश्वि.	ल. 4 (रा.दा.) 6, मु.10:38 से 14:56 तक
11 जुलाई	शनि	रोहि.	मु.11:04 बाद, अभिजित्
19 अगस्त	बुध	स्वा.	मु. प्रातः 6:47 तक
20 अगस्त	गुरु	अनु.	मु. 9:09 बाद
28 अगस्त	शुक्र	शत.	ल. 6,7
4 सितम्बर	शुक्र	रोहि.	ल. 6,7, अभिजित्
7 सितम्बर	सोम	पुन.	मु. 6:41 बाद, ल. 6,7, अभि.
11 नवम्बर	बुध	अनु.	मु. 11:39 तक
21 नवम्बर	शनि	रेव.	ल. 9, 10, अभि. (भीष्मपंचक विचार)
25 नवम्बर	बुध	रोहि.	ल. 9, 10
26 नवम्बर	गुरु	मृग.	ल. 9, 10, अभिजित्
28 नवम्बर	शनि	पुन.	मु. 12:51 तक, ल. 9, 10
3 दिसम्बर	गुरु	उ.फा.	मु. 9:24 तक
4 दिसम्बर	शुक्र	चित्रा	मु. 10:23 बाद
5 दिसम्बर	शनि	चि/स्वा	ल. 9, 11, अभिजित्
12 दिसम्बर	शनि	उ.षा.	ल. 9, मु. 10:07 तक
सन् 2027 ई०			
8 फरवरी	सोम	शत.	ल. 11, 1, अभिजित्
25 फरवरी	गुरु	चित्रा	मु.9:33 तक
4 मार्च	गुरु	उ.षा.	ल. 1,2, अभिजित्
10 मार्च	बुध	उ.भा.	ल. 1, 2
11 मार्च	गुरु	अश्वि.	मु. 11:20 बाद, अभिजित्

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026–2027 ई०

दिनाङ्क	वार	मुहूर्त्तविवरण
20 अप्रैल	सोम	मु.प्रातः7:28 तक
23 अप्रैल	गुरु	ल. 2, 3
24 अप्रैल	शुक्र	मु. 8:06 बाद, ल.2(8:06 बाद), 3
8 मई	शुक्र	ल.2,3,अभिजित्
17 जून	बुध	ल.4 ,(रा.दा.)
22 जून	सोम	मु.10:31 बाद
24 जून	बुध	ल.4(रा.दा.)6,अभि. (13:59 बाद)
27 जून	शनि	ल.4, 6, अभि.
1 जुलाई	बुध	मु.6:52 से 16:05 तक, ल.4 ,6
4 जुलाई	शनि	मु.12:41 से 13:44 तक केवल।
9 जुलाई	गुरु	ल.4, (रा.दा.) 6, मु.10:38 से 14:56
11 जुलाई	शनि	मु.11:04 बाद,अभि.
11 नवम्बर	बुध	मु.11:39 तक
21 नवम्बर	शनि	ल.9:10अभि. (भीष्मपंचक विचार)
25 नवम्बर	बुध	ल.9, 10
26 नवम्बर	गुरु	ल.9, 10, अभिजित्
28 नवम्बर	शनि	ल. 9, 10
3 दिसम्बर	गुरु	मु. 9:24 तक
4 दिसम्बर	शुक्र	मु. 10:23 बाद
5 दिसम्बर	शनि	ल. 9, 11, अभिजित्
12 दिसम्बर	शनि	ल. 9, (मु.10:07 तक)
सन् 2027 ई०		
15 जनवरी	शुक्र	मु.8:57 बाद, ल.11, 1 अभि.
22 जनवरी	शुक्र	मु.7:40 बाद, ल.11,1, अभि.
28 जनवरी	गुरु	ल.11, 1,अभि. (भद्रा-परिहार)
8 फरवरी	सोम	ल.11,1, अभिजित्
18 फरवरी	गुरु	ल.1,2, अभिजित्
19 फरवरी	शुक्र	मु.11:15 तक
25 फरवरी	गुरु	मु.9:33 तक
27 फरवरी	शनि	मु.11:40 बाद
4 मार्च	गुरु	ल.1,2, अभि. (मृत्युबाण परि.)
10 मार्च	बुध	मु.10:53 तक,ल.1,2
11 मार्च	गुरु	मु.11:20 बाद, अभि.

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी द्वारा बतलायें गये मुहूर्त्त पर नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति, नवगृह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, सवत्सा गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथाशक्ति भोजन-दानादि तथा कन्या पूजन, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल-गान सहित नव-गृह में प्रवेश करना चाहिये।

✲ राहु काल ✲

वार	समय
रवि	सायं 4:30 से 6:00 तक।
सोम	प्रातः 7:30 से 9:00 तक।
मङ्गल	सायं 3:00 से 4:30 तक।
बुध	दोपहर 12:00 से 1:30 तक।
गुरु	दोपहर 1:30 से 3:00 तक।
शुक्र	प्रातः 10:30 से 12:00 तक।
शनि	प्रातः 9:00 से 10:30 तक।

✲ यम काल ✲

वार	समय
रवि	दोपहर 12:00 से 1:30 तक।
सोम	प्रातः 10:30 से 12:00 तक।
मङ्गल	प्रातः 9:00 से 10:30 तक।
बुध	प्रातः 7:30 से 9:00 तक।
गुरु	प्रातः 6:00 से 7:30 तक।
शुक्र	दोपहर 3:00 से 4:30 तक।
शनि	दिन 1:30 से 3:00 तक।

राहु काल एवं यमकाल प्रतिदिन 1:30 घण्टे का होता हैं, जिसका प्रत्येक वार में निर्धारित समय सारणी में दिया गया है। राहु काल एवं यम काल में शुभ कार्य न करें।

✲ सर्वार्थ सिद्धि योग ✲

वार	नक्षत्र
रवि	पुष्य, अश्विनी, हस्त, मूल, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपदा, उत्तरफाल्गुनी।
सोम	श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा।
मङ्गल	अश्विनी, आश्लेषा, उ.भाद्रपदा, कृत्तिका।
बुध	रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा।
गुरु	रेवती, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य।
शुक्र	रेवती, अनुराधा,अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण।
शनि	श्रवण, रोहिणी, स्वाति।

अमृत सिद्धि योग

वार	नक्षत्र
रवि	हस्त
सोम	मृगशिरा
मङ्गल	अश्विनी
बुध	अनुराधा
गुरु	पुष्य
शुक्र	रेवती
शनि	रोहिणी

सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026 ई॰

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
20 मार्च	4:05	21 मार्च	सू.उ.	13 जून	25:17	14 जून	सू.उ.
23 मार्च	20:50	24 मार्च	सू.उ.	15 जून	सू.उ.	15 जून	19:09
25 मार्च	सू.उ.	25 मार्च	17:34	18 जून	सू.उ.	18 जून	11:33
26 मार्च	16:19	27 मार्च	15:24	21 जून	9:32	22 जून	सू.उ.
1 अप्रैल	16:18	2 अप्रैल	सू.उ.	26 जून	19:16	27 जून	सू.उ.
4 अप्रैल	सू.उ.	4 अप्रैल	21:36	28 जून	25:09	29 जून	सू.उ.
6 अप्रैल	सू.उ.	6 अप्रैल	26:57	3 जुला.	सू.उ.	3 जुला.	11:47
11 अप्रैल	13:40	12 अप्रैल	सू.उ.	7 जुला.	सू.उ.	7 जुला.	16:24
16 अप्रैल	13:59	18 अप्रैल	सू.उ.	9 जुला.	सू.उ.	9 जुला.	14:56
20 अप्रैल	सू.उ.	21 अप्रैल	सू.उ.	11 जुला.	11:04	12 जुला.	सू.उ.
23 अप्रैल	सू.उ.	24 अप्रैल	सू.उ.	13 जुला.	सू.उ.	13 जुला.	5:42
29 अप्रैल	सू.उ.	29 अप्रैल	24:17	19 जुला.	सू.उ.	19 जुला.	18:12
4 मई	सू.उ.	4 मई	9:58	23 जुला.	25:43	25 जुला.	4:37
8 मई	21:20	9 मई	23:25	26 जुला.	7:35	27 जुला.	सू.उ.
12 मई	25:18	13 मई	सू.उ.	2 अग.	21:37	3 अग.	सू.उ.
14 मई	सू.उ.	15 मई	20:15	4 अग.	21:54	5 अग.	सू.उ.
18 मई	सू.उ.	19 मई	सू.उ.	8 अग.	सू.उ.	8 अग.	16:52
21 मई	सू.उ.	21 मई	26:50	16 अग.	सू.उ.	16 अग.	27:51
24 मई	26:51	25 मई	सू.उ.	20 अग.	9:09	21 अग.	11:53
27 मई	सू.उ.	27 मई	5:57	23 अग.	सू.उ.	23 अग.	17:45
5 जून	सू.उ.	6 जून	6:04	30 अग.	सू.उ.	30 अग.	27:45
9 जून	9:40	10 जून	सू.उ.	1 सितं.	सू.उ.	1 सितं.	26:43
11 जून	सू.उ.	12 जून	6:29	2 सितं.	25:43	3 सितं.	सू.उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026 – 2027 ई॰

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
7 सितं.	18:14	8 सितं.	सू.उ.
13 सितं.	सू.उ.	13 सितं.	13:07
16 सितं.	17:23	17 सितं.	19:54
21 सितं.	4:35	21 सितं.	सू.उ.
27 सितं.	सू.उ.	27 सितं.	11:08
29 सितं.	सू.उ.	29 सितं.	9:04
30 सितं.	7:37	1 अक्टू.	सू.उ.
4 अक्टू.	24:14	5 अक्टू.	23:10
6 अक्टू.	सू.उ.	6 अक्टू.	22:18
14 अक्टू.	सू.उ.	14 अक्टू.	28:03
18 अक्टू.	12:49	19 अक्टू.	सू.उ.
19 अक्टू.	15:39	20 अक्टू.	सू.उ.
25 अक्टू.	19:22	26 अक्टू.	सू.उ.
27 अक्टू.	15:40	29 अक्टू.	सू.उ.
1 नवं.	सू.उ.	1 नवं.	28:31
8 नवं.	5:53	8 नवं.	सू.उ.
11 नवं.	सू.उ.	11 नवं.	11:39
15 नवं.	सू.उ.	15 नवं.	23:29
16 नवं.	सू.उ.	16 नवं.	26:17
21 नवं.	6:51	21 नवं.	सू.उ.
22 नवं.	सू.उ.	22 नवं.	28:16
24 नवं.	सु.उ.	24 नवं.	23:25
25 नवं.	सू.उ.	26 नवं.	सु.उ.

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
27 नवं.	15:09	28 नवं.	सु.उ.
29 नवं.	सु.उ.	29 नवं.	11:00
5 दिसं.	11:49	6 दिसं.	सु.उ.
7 दिसं.	15:48	8 दिसं.	सु.उ.
13 दिसं.	6:13	13 दिसं.	सु.उ.
14 दिसं.	सु.उ.	14 दिसं.	9:13
18 दिसं.	16:10	19 दिसं.	सु.उ.
20 दिसं.	सु.उ.	20 दिसं.	14:56
22 दिसं.	सु.उ.	22 दिसं.	10:46
23 दिसं.	सु.उ.	24 दिसं.	4:53
24 दिसं.	25:47	25 दिसं.	22:50
30 दिसं.	15:37	31 दिसं.	सु.उ.
(सन् 2027 ई. में)			
2 जन.	सू.उ.	2 जन.	19:20
4 जन.	सू.उ.	4 जन.	24:15
9 जन.	12:16	10 जन.	सू.उ.
14 जन.	23:19	16 जन.	सू.उ.
18 जन.	21:06	19 जन.	सू.उ.
20 जन.	सू.उ.	20 जन.	16:17
21 जन.	13:24	22 जन.	10:25
27 जन.	सू.उ.	27 जन.	23:57
5 फर.	18:33	6 फर.	21:20
9 फर.	27:41	10 फर.	सू.उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2027 ई०

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
11 फर.	सू.उ.	13 फर.	5:56	15 मार्च	सू.उ.	16 मार्च	सू.उ.
15 फर.	सू.उ.	16 फर.	सू.उ.	18 मार्च	सू.उ.	18 मार्च	27:21
18 फर.	सू.उ.	19 फर.	सू.उ.	21 मार्च	22:07	22 मार्च	सू.उ.
24 फर.	सू.उ.	24 फर.	9:39	26 मार्च	20:36	27 मार्च	सू.उ.
5 मार्च	सू.उ.	5 मार्च	28:21	28 मार्च	24:32	29 मार्च	सू.उ.
9 मार्च	9:59	10 मार्च	सू.उ.	2 अप्रैल	सू.उ.	2 अप्रैल	12:17
11 मार्च	सू.उ.	12 मार्च	11:23	6 अप्रैल	सू.उ.	6 अप्रैल	18:23

✲ गुप्त नवरात्रि ✲

आषाढ़ (जून - जुलाई) तथा माघ (जनवरी - फरवरी) मास की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाली नवरात्रि को गुप्त नवरात्रि अथवा गायत्री नवरात्रि भी कहते हैं। इसे मुख्य रूप से हिन्दीभाषी प्रान्त में मनाया जाता है। उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश की मातायें इन नवरात्रों में व्रत उपवास आदि का पालन करती हैं। सभी उपासकों में भी माँ वाराही के उपासकों के लिये इन नवरात्र का महत्व मुख्य रूप से विशेष ही होता है।

हिमाचल प्रदेश में इन्हें गुह्य नवरात्र के नाम से भी जाना जाता है। विशेष अनुष्ठान, जप, पूजन तथा काम्य प्रयोगों के लिये ये नवरात्र श्रेष्ठ माने गये हैं।

✲ कलंक चौथ चन्द्रदर्शन दोषनिवारक मन्त्र ✲

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक! मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥

हे सुंदर सलोने कुमार! इस मणि के लिये सिंह ने प्रसेन को मारा हैं और जाम्बवन्त ने उस सिंह का संहार किया हैं।अतः तुम रो मत। अब इस स्यमंतक मणि पर तुम्हारा ही अधिकार हैं।

अमृत सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2083, सन् 2026–2027 ई०

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
20 मार्च	सू.उ.	20 मार्च	26:28
17 अप्रैल	सू.उ.	17 अप्रैल	12:03
20 अप्रैल	26:09	21 अप्रैल	सू.उ.
23 अप्रैल	20:58	24 अप्रैल	सू.उ.
18 मई	11:32	19 मई	सू.उ.
21 मई	सू.उ.	21 मई	26:50
13 जून	25:17	14 जून	सू.उ.
15 जून	सू.उ.	15 जून	19:09
18 जून	सू.उ.	18 जून	11:33
11 जुला.	11:04	12 जुला.	सू.उ.
13 जुला.	सू.उ.	13 जुला.	5:42
19 जुला.	18:12	20 जुला.	सू.उ.
4 अग.	21:54	5 अग.	सू.उ.
8 अग.	सू.उ.	8 अग.	16:52
16 अग.	सू.उ.	16 अग.	27:51

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
1 सितं.	सू.उ	1 सितं.	26:43
13 सितं.	सू.उ.	13 सितं.	13:07
16 सितं.	17:23	17 सितं.	सू.उ.
29 सितं.	सू.उ.	29 सितं.	9:04
14 अक्टू.	सू.उ.	14 अक्टू.	28:03
11 नवं.	सू.उ.	11 नवं.	11:39
20 नवं.	30:51	21 नवं.	सू.उ.
18 दिसं.	16:10	19 दिसं.	सू.उ.
(सन् 2027 ई.)			
15 जन.	सू.उ.	15 जन.	23:51
15 फर.	27:26	16 फर.	सू.उ.
18 फर.	21:06	19 फर.	सू.उ.
15 मार्च	9:27	16 मार्च	सू.उ.
18 मार्च	सू.उ.	18 मार्च	27:21
20 फर.	20:08	21 फर.	सू.उ.

❊ अमृत सिद्धि योग ❊

कुछ विद्वानों के मतानुसार सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अमृत सिद्धि योग के संयोग से रविवार से शनिवार तक (क्रमशः) 5,6,7,8,9,10,11 तिथियाँ एवं प्रारम्भ की 6 घड़ियाँ विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई है।

ॐ

❊ गण्डमूल के नक्षत्र ❊

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती
पिता को भय	शान्ति से शुभ	माता को नेष्ट	बडे भ्राता को कष्ट	पितृ नाश	राज्य सम्मान
सुख ऐश्वर्य	धन नाश	पितृभय	छोटे भाई को कष्ट	मातृ नाश	मन्त्रित्व प्राप्ति
मन्त्री पद	मातृ नाश	सुख	मातृ नाश	धन नाश	धन सुख प्राप्ति
राज्य सम्मान	पितृ नाश	विद्या	सुख का नाश	शान्ति से शुभ	अनेक कष्ट

ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं तथा इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक माता, पिता कुल या अपने शरीर को नष्ट करता हैं। स्वयं का शरीर नष्ट न हो तो धन वैभव, ऐश्वर्य हाथी, घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का 27 दिन तक पिता मुख न देखें। प्रसूति स्नान के पश्चात् शुभ मुहूर्त में गौ, स्वर्ण दान आदि शान्ति के पश्चात् ही शुभ वेला में बालक का मुख देखें।

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल
वि.सं. 2083, 19 मार्च 2026 से 6 अप्रैल 2027 ई. तक

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
20 मार्च	4:05	21 मार्च	24:38
28 मार्च	14:51	30 मार्च	14:48
7 अप्रैल	2:57	9 अप्रैल	8:49
16 अप्रैल	13:59	18 अप्रैल	9:43
24 अप्रैल	20:15	26 अप्रैल	20:27
4 मई	9:58	6 मई	15:54
13 मई	24:18	15 मई	20:15
22 मई	2:50	24 मई	2:10
31 मई	16:12	2 जून	22:07
10 जून	9:22	12 जून	6:29
18 जून	11:33	20 जून	9:26
27 जून	22:11	30 जून	4:04
7 जुलाई	16 :24	09 जुलाई	14 :56

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
15 जुलाई	21 :47	17 जुलाई	18 :35
25 जुलाई	4 :37	27 जुलाई	10 :29
3 अगस्त	22 :01	5 अगस्त	21 :18
12 अगस्त	8 :00	14 अगस्त	4 :39
21 अगस्त	11 :53	23 अगस्त	17 :45
31 अगस्त	3 :45	2 सितम्बर	2 :43
8 सितम्बर	16 :40	10 सित.	14 :05
17 सितम्बर	19 :54	19 सित.	25 :43
27 सितम्बर	11 :08	29 सित.	9 :04
5 अक्टूबर	23:10	7 अक्टूबर	21:41
15 अक्टू.	4 :03	17 अक्टू	9 :47
24 अक्टू	20 :32	26 अक्टू	17 :42

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल
वि.सं. 2083, 19 मार्च 2026 से 6 अप्रैल 2027 ई. तक

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
2 नवंबर	4 :31	4 नवंबर	3 :27
11 नवंबर	11 :39	13 नवंबर	17 :18
21 नवंबर	6 :51	23 नवंबर	4 :16
29 नवंबर	11 :00	1 दिसंबर	9 :01
8 दिसंबर	18 :17	10 दिसंबर	23 :58
18 दिसंबर	16 :10	20 दिसंबर	14 :56
26 दिसंबर	20 :13	28 दिसंबर	16 :33
(सन् 2027 ई.)			
4 जनवरी	24 :15	7 जनवरी	6 :08

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
14 जनवरी	23 :19	16 जनवरी	23 :39
23 जनवरी	7 :32	24 जनवरी	26 :41
1 फरवरी	6 :28	3 फरवरी	12 :26
11 फरवरी	4 :56	13 फरवरी	5 :56
19 फरवरी	18:36	21 फरवरी	13:51
28 फरवरी	13:48	2 मार्च	19:28
10 मार्च	10 :53	12 मार्च	11 :23
19 मार्च	3 :21	20 मार्च	23 :45
27 मार्च	22 :15	30 मार्च	3 :18
6 अप्रैल	18:23	8 अप्रैल	18:00

शनि की साढ़ेसाती, ढ़ैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार वि.सं. 2083

गतवर्ष 29 मार्च, 2025 ई. से मीन राशि में संचरणशील शनि-देव आगामी **वि.सं. 2083 (20 मार्च, 2026 से 6 अप्रैल, 2027 तक)** की सम्पूर्ण कालावधि में **मीन राशि** में ही संचार करेंगे।

26 जुलाई, 2026 ई. की मीन राशि में ही वक्री होकर 10 दिसम्बर, 2026 ई. से मार्गी होकर संचार करेंगे। सम्पूर्ण वर्ष उ.भाद्रपदा तथा रेवती नक्षत्रों में ही संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह जब किसी राशि में गोचरवश वक्री होकर संचार करते हैं, तो और भी अधिक क्रूर एवं अशुभ फलदायक बन जाते हैं, जबकि गुरु, शुक्र आदि सौम्य ग्रह स्व/मित्र राशि में वक्री होने पर और भी अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं-

यदा क्रूर ग्रहो वक्री अतिचारी तु सौम्यकः ।
पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्यं विग्रहम्॥

फलस्वरूप शनि जब गोचरवश वक्री अवस्था में संचार करेंगे, तो जातक/जातिका को मानसिक व शारीरिक कष्ट, आर्थिक परेशानियाँ व उथल-पुथल, रोगादि प्रकट होने लगते हैं। समाज में भी कहीं राजनीतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महँगाई, राजनैतिक उलट-फेर, क्लिष्ट रोग-भय, उपद्रव, हिंसक घटनायें, अस्थिरता, असन्तोष,

बाढ़, दुर्भिष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनता हैं।

शनि संचार फल - शनि के राशि परिवर्तन होने पर मेषादि विभिन्न राशियों पर उसका प्रभाव अलग-अलग होता है, जिसका वर्णन नीचे दिया गया है।

✲ मीन राशि में शनि का गोचर फल – सं.2083 ✲

मेष (लौहपाद)(प्रारम्भिक अवस्था [सिर पर चढ़ती])-शनि **द्वादशस्थ** होने से **'शनि-साढ़ेसाती'** अशुभ प्रभाव रहेगा। रहे। व्यवसाय सम्बन्धी विघ्न बाधाएँ, निकट बन्धुओं से विरोध व मानसिक अशान्ति रहे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक जीवन में बड़ी उथल-पुथल वाली परिस्थितियां बनेंगी। इस राशि को पाया भी **लौह** रहने से किसी रोग विशेष के कारण शरीर-कष्ट, अचानक खर्चों में वृद्धि आदि अशुभ फल ही रहेंगे। 31 अक्टूबर से गुरु की दृष्टि रहने से समस्यायें हल होंगी।

वृष (सुवर्णपाद)- शनि **एकादश भावस्थ** होने से धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। सुख के साधन बढ़ेंगे। विद्या में सफलता, घर-परिवार में कोई शुभ कार्य सम्पन्न होगा। पाया **सुवर्ण** होने से कुछ घरेलु उलझनें, वृथा दौड़-धूप अधिक एवं मानसिक तनाव रहेगा।

मिथुन (ताम्रपाद)-**दशमस्थ** शनि शुभ है। मनोवांछित योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। उच्च प्रतिष्ठित लोगों तथा पुराने सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। सुख-साधन एवं आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। शनि का पाया भी **'ताम्र'** होने से गत बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, शुभ कार्यों की ओर रूचि तथा पदोन्नति के भी योग बनेंगे। व्यवसाय/कारोबार में भी वृद्धि होगी।

कर्क (रजतपाद)-शनि **नवमस्थ** होने से भाग्योन्नति में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी। अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् कार्यों में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। मानसिक तनाव व अशान्ति अधिक रहे। परन्तु शनि का पाया **'रजत'** होने से अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के अवसर बनेंगे।

सिंह (लौहपाद)- शनि की **ढैय्या** तथा पाया **लौह** होने से आय के साधन सीमित तथा खर्च अधिक रहेंगे। 5 दिसम्बर तक केतु संचार रहने से मन भ्रमित, आर्थिक परेशानियां, घरेलु कलह-क्लेश तथा दौड़-धूप अधिक रहे। वर्ष के उत्तरार्द्ध भाग में स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें। हड्डीयों, मांसपेशियों तथा त्वचा सम्बन्धी रोगों का भय रहेगा।

कन्या (ताम्रपाद)-शनि की **सप्तम** दृष्टि रहेगी। घरेलु एवं पारिवारिक वातावरण कुछ अशान्त रहेगा, जिस कारण दिमागी तनाव व उलझनें अधिक रहें। शनि का पाया **ताम्र** होने से उत्तरार्द्ध भाग में कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

तुला (सुवर्णपाद)-षष्ठभावस्थ शनि शुभ रहेगा। 1 जून तक गुरु की दृष्टि रहेगी। सम्यक विचारशीलता से सभी समस्याओं का निराकरण होगा। अचानक धन लाभ व पदोन्नति के अवसर मिलेंगे। अथवा विदेश यात्रा की योजना बनेगी। सुख-साधनों में वृद्धि होगी। शनि का पाया **सुवर्ण** होने से बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न होंगी। घरेलु उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। खर्च अधिक रहे।

वृश्चिक (रजतपाद)-शनि **पंचमस्थ** पूज्य रहेगा। स्त्री/पति का स्वास्थ्य खराब रहेगा, धनागमन के साधनों में भी विघ्न उत्पन्न होंगे अर्थात् किसी से पेमेंट आदि रुक सकती है। परन्तु शनि का पाया **रजत** (चाँदी) होने से संघर्ष एवं कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। उच्चाधिकारियों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे।

धनु (लौहपाद)-शनि **चतुर्थ** होने से शनि की **ढैय्या** का दुष्प्रभाव रहेगा। जिससे धन हानि, वृथा कलह क्लेश, खर्च आदि रहेंगे। शनि का पाया भी **'लौह'** होने से गुप्त चिन्ताएँ, अकारण क्रोध, शरीर कष्ट तथा निकट सम्बन्धियों से तनाव एवं अचानक खर्च होने के संकेत हैं।

मकर (ताम्रपाद)-तृतीयस्थ शनि शुभ है। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। धन लाभ एवं अन्य सुख-साधनों में विस्तार होगा। गृह में कोई मंगल कार्य सम्पन्न होगा। शुभ यात्रा के योग हैं। शनि का पाया भी **ताम्र** होने से भी नौकरी में पदोन्नति व कार्य-व्यवसाय में लाभ के अवसर बनते रहेंगे। शुभ कार्यों पर व्यय भी होंगे।

कुम्भ (रजतपाद)-द्वितीयस्थ शनि पूज्य रहेगा। **शनि-साढ़ेसाती** उतरती हुई अवस्था में अर्थात् **अन्तिम चरण** में होगी। लग्नस्थ राहु के कारण कठिन एवं संघर्षपूर्ण हालात बनेंगे। पारिवारिक तथा व्यवसाय में उथल-पुथल रहेगी। पैर में चोटादि लगने का भय है। शनि का पाया **रजत** (चाँदी) होने से रुकावटों के बावजूद कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा तथा निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

मीन (सुवर्णपाद)-शनि-साढ़ेसाती मध्य अवस्था में **(हृदय पर)** रहेगी तथा शनि का पाया **सुवर्ण** होने से घरेलु एवं आर्थिक उलझनें, धन का खर्च अधिक रहे। अत्यधिक संघर्ष के बावजूद बीच-बीच में धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। 1 जून से 31 अक्टूबर तक लग्नस्थ शनि पर गुरु की शुभ स्वगृही दृष्टि रहने से संघर्षमयी परिस्थितियों के उपरान्त भी बीच-बीच में धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

शनि के पाद (पाया) फल विचार

लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्॥

सुवर्ण पाया हो तो जातक को उस अवधि में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ता हैं। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें अधिक रहेंगी। शत्रु एवं रोग भय होता हैं।
रजत पाया हो तो जातक को गत किये गये प्रयासों में धीरे धीरे सफलता मिलती है। आकस्मिक धन-लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, स्त्री-सन्तान व भूमि वाहनादि सुख होता है।
ताम्र का पाया हो तो जातक को कार्य व्यवसाय में लाभ व उन्नति। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों का सम्पर्क होता है। उच्च-विद्या में सफलता मिलती है। विवाह एवं पारिवारिक सुख मिलता है।
लौह का पाया हो तो जातक को आर्थिक व पारिवारिक परेशानियाँ अधिक होती है। स्वास्थ्य में गड़बड़, तनाव एवं उलझनें बढ़ती हैं। दुर्घटना से चोटादि का भय रहता हैं।

❊ शनि शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय ❊

शनि कि साढ़ेसाती ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजादान, लौहपात्र में तैल दान, शनि स्तोत्र का पाठ करना भी श्रेयस्कर है।

शनि का बीज मन्त्र - "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।
वैदिक मन्त्र - "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये,
शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॐ"।

शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच

ॐ नमस्ते कोण-संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते॥1॥
नमस्ते रौद्र-देहाय, नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यम-संज्ञाय, नमस्ते सौरये विभो॥2॥
नमस्ते मन्द-संज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश, दीनाय प्रणताय च॥3॥

इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढ़ेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती।

❊ नामाक्षरानुसार नक्षत्र राशिज्ञान चक्र ❊

मेष	**अश्विनी** चू-चे-चो-ला	**भरणी** ली-लू-ले-लो	**कृत्तिका 1 पाद** अ-0-0-0
वृष	**कृत्तिका 3 पाद** 0-ई-उ-ए	**रोहिणी** ओ-वा-वी-वू	**मृगशिरा आधा** वे-वो-0-0
मिथुन	**मृगशिरा आधा** 0-0-क-की	**आर्द्रा** कु-घ-ङ-छ	**पुनर्वसु 3 पाद** के-को-ह-0
कर्क	**पुनर्वसु** 0-0-0-ही	**पुष्य** हू-हे-हो-डा	**आश्लेषा** डी-डू-डे-डो
सिंह	**मघा** मा-मी-मू-मे	**पूर्वफाल्गुनी** मो-टा-टी-टू	**उत्तरफाल्गुनी** टे-0-0-0
कन्या	**उत्तरफाल्गुनी** 0-टो-पा-पी	**हस्त** पू-ष-ण-ठ	**चित्रा** पे-पो-0-0
तुला	**चित्रा** 0-0-रा-री	**स्वाति** रू-रे-रो-ता	**विशाखा** ती-तू-ते-0
वृश्चिक	**विशाखा** 0-0-0-तो	**अनुराधा** ना-नी-नू-ने	**ज्येष्ठा** नो-या-यी-यू
धनु	**मूल** ये-यो-भा-भी	**पूर्वाषाढ़ा** भू-धा-फ-ढ	**उत्तराषाढ़ा** भे-0-0-0
मकर	**उत्तराषाढ़ा** 0-भो-जा-जी	**श्रवण** खी-खू-खे-खो	**धनिष्ठा** गा-गी-0-0
कुम्भ	**धनिष्ठा** 0-0-गू-गे	**शतभिषा** गो-सा-सी-सू	**पूर्वभाद्रपदा** से-सो-दा-0
मीन	**पूर्वभाद्रपदा** 0-0-0-दी	**उत्तरभाद्रपदा** दू-थ-झ-ञ	**रेवती** दो-दो-चा-ची

✲ यात्रा विचार प्रकरण ✲

दिक्शूल

दिशा	पूर्व	उत्तर	पश्चिम	दक्षिण	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय
निषिद्ध तिथि	1, 9	2, 10	6, 14	5, 13	8,30	7, 15	4, 3	3, 11
निषिद्ध वार	सोम शनि	मङ्गल गुरु	रवि शुक्र	गुरु	गुरु शनि	मङ्गल	शनि शुक्र	गुरु सोम
निषिद्ध नक्षत्र	श्रवण ज्येष्ठा	हस्त उत्तरा फाल्गुनी	रोहिणी पुण्य	धनि. शत. रेवती पू. भा. उ. भा. अश्विनी	-	-	-	-
निषिद्ध समय	उषा काल	अर्ध रात्रि	गोधूलि (संध्या-काल)	मध्याह्न	-	-	-	-

✲ राहु वास चक्र ✲

सूर्य संक्रान्ति	वृश्चिक धनु	मेष कुम्भ	वृष मिथुन	सिंह कन्या
मास	मकर	मीन	कर्क	तुला
राहु की वास दिशा	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चिम दिशा	उत्तर दिशा

✲ दिक्शूल परिहार ✲

1. यदि यात्रा मुहूर्त में विलम्ब अथवा समय का उलङ्घन हो तो ब्राह्मण-प्रस्थान समय में जनेऊ, माला; क्षत्रिय-अस्त्र, शस्त्र; वैश्य-मधु, घी, रुपया, पैसा; शूद्र-फल को अपने वस्त्र में बाँध किसी के घर या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रख दें, अथवा अपनी किसी प्रिय वस्तु को रख दें।

2. आवश्यकता पडने पर रविवार को दलिया, घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर व दूध पीकर, मङ्गलवार को गुड खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौ खाकर व दूध पीकर, शनिवार को अदरक या उडद खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

✲ यात्रा में चन्द्रमा विचार ✲

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
राशि (चन्द्रमा की)	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

✲ सूर्योदय से चौघड़िया दिन के प्रति अंश में यात्रा का फल ✲

घड़ी:वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
03:45	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
07:30	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
11:15	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
15:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
18:45	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
22:30	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
26:15	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
30:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

❊ सूर्यास्त से चौघड़िया रात्रि के प्रति अंश में यात्रा का फल ❊

घड़ी:वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
03:45	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
11:15	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
15:00	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
18:45	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
22:30	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
26:15	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
30:00	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

नियम - चौघड़िया ज्ञात करने के लिये उस दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को 8 भागों में विभाजित करें तथा प्रथम अंश को सूर्योदय के समय के साथ जोडने से पहले चौघड़िये का समय प्राप्त होगा। उसके बाद उस समय में दो अंश जोड़ने से दूसरे चौघड़िये का काल प्राप्त होगा।

उदाहरण - यदि रविवार को सूर्योदय से सूर्यास्त का समय 12 घण्टे का हैं। तो उसका 8वाँ अंश 1.5 घण्टे का होगा और सर्योदय प्रातः 6 बजे हो रहा हो तो प्रथम चौघड़िया "उद्वेग" प्रातः 6 बजे से 7.30 बजे तक होगा। उसी में दूसरा अंश जोडने से 7.30 बजे से 9 बजे तक का दूसरा चौघड़िया "चर" होगा। ऐसे ही रात के चौघड़िये के लिये सूर्यास्त के गणना समझनी चाहिये।

पाठकों की सुविधार्थ यहाँ प्रत्येक चौघड़िये की घड़ी में भी गणना दी गयी हैं।

4 श्वास (24 सेकण्ड) - 1 पल
60 पल (24 मिनट) - 1 घड़ी
2.5 घड़ी - 1 घण्टा
60 घड़ी (24 घण्टे) - 1 दिवस

इस तरह प्रत्येक दिन और रात मिलाकर 60 घड़ी के होते हैं।

❊ भद्रा लोक वास ❊

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा स्वर्ग लोक में; कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से पाताल में; कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन का चन्द्रमा होने से मर्त्यलोक में निवास करती है।

"स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं, पाताले च धनागम:
मृत्युलोके यदा भद्रा, कार्यसिद्धिस्तदा नहि॥"

अतः मृत्युलोक की भद्रा ही अशुभ होती है।

शुक्लपक्षे वृश्चिकाभद्रा, कृष्णपक्षे भुजङ्गमा।

शुक्लपक्ष की भद्रा का नाम वृश्चिकी है, कृष्णपक्ष की भद्रा का नाम सर्पिणी है।
मतान्तर से दिन की भद्रा सर्पिणी, रात्रि की भद्रा वृश्चिकी है। वृश्चिकी भद्रा का पुच्छ भाग, सर्पिणी भद्रा का मुख भाग नहीं लेना चाहिए।

दिवा भद्रा रात्रौ, रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाऽविष्टिकृतो दोषो न भवेत्सर्व सौख्यदः॥

यदि दिन की भद्रा रात्रि में समाप्त हो, रात्रि की भद्रा दिन में समाप्त हो, तो भद्रा दोषकारक न होकर सौख्यकारक होती है।

(स्व.) = स्वर्गलोक	(पा.) = पाताललोक	(मृ.) = मृत्युलोक

❊ भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (2026) ❊

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
22 मार्च (स्व.)	10:36	22 मार्च	21:16	27 अप्रैल (मृ.)	6:07	27 अप्रैल	18:15
25 मार्च (स्व.)	13:50	26 मार्च	00:47	30 अप्रैल (पा.)	21:12	1 मई	10:00
28 मार्च (मृ.)	20:13	29 मार्च	7:46	4 मई (स्व.)	16:12	5 मई	5:24
1 अप्रैल (पा.)	7:06	1 अप्रैल	19:20	8 मई (पा.)	12:21	9 मई	1:16
4 अप्रैल (पा.)	23:01	5 अप्रैल	11:59	11 मई (मृ.)	3:14	12 मई	14:52
8 अप्रैल (पा.)	19:01	9 अप्रैल	8:12	15 मई (स्व.)	8:31	15 मई	18:54
12 अप्रैल (पा.)	13:02	13 अप्रैल	1:16	19 मई (स्व.)	00:39	20 मई	11:06
15 अप्रैल (मृ.)	22:31	16 अप्रैल	9:25	22 मई (मृ.)	5:04	23 मई	16:40
20 अप्रैल (स्व.)	17:49	20 अप्रैल	4:14	26 मई (पा.)	17:42	27 मई	6:21
23 अप्रैल (मृ.)	20:49	25 अप्रैल	8:01	30 मई (स्व.)	11:57	31 मई	1:05

❊ भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (2026) ❊

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
3 जून (पा.)	8:12	3 जून	21:21	6 सितं. (स्व.)	8:41	6 सितम्बर	19:25
6 जून (मृ.)	2:40	7 जून	15:07	9 सितं. (मृ.)	12:30	9 सितम्बर	23:29
10 जून (मृ.)	13:52	11 जून	00:57	14 सितं. (पा.)	19:20	15 सितम्बर	7:44
13 जून (स्व.)	16:07	14 जून	2:15	18 सितं. (स्व.)	13:00	18 सितम्बर	22:44
18 जून (मृ.)	8:13	18 जून	18:58	22 सितं. (पा.)	8:55	22 सितम्बर	21:43
21 जून (मृ.)	15:20	22 जून	3:40	25 सितं. (मृ.)	23:06	26 सितम्बर	10:16
25 जून (पा.)	7:08	25 जून	20:09	29 सितं. (स्व.)	6:13	29 सितम्बर	17:09
28 जून (पा.)	3:06	29 जून	16:16	2 अक्टू. (स्व.)	10:15	2 अक्टूबर	21:06
2 जुलाई (पा.)	22:31	3 जुलाई	11:20	5 अक्टू. (मृ.)	14:58	6 अक्टूबर	2:07
6 जुलाई (मृ.)	13:47	7 जुलाई	1:41	8 अक्टू. (मृ.)	22:15	9 अक्टूबर	3:18
9 जुलाई (स्व.)	21:31	10 जुलाई	8:16	9 अक्टू. (पा.)	3:18	9 अक्टूबर	9:52
12 जुलाई (स्व.)	22:29	13 जुलाई	8:39	14 अक्टू.(स्व.)	12:16	15 अक्टूबर	1:13
17 जुलाई (मृ.)	17:29	18 जुलाई	4:42	18 अक्टू. (पा.)	8:27	18 अक्टूबर	21:42
20 जुलाई (पा.)	4:02	21 जुलाई	16:43	21 अक्टू. (मृ.)	2:35	22 अक्टूबर	14:47
24 जुलाई(स्व.)	22:22	25 जुलाई	11:34	25 अक्टू.(मृ.)	11:55	25 अक्टूबर	19:22
28 जुलाई (पा.)	18:18	29 जुलाई	7:14	28 अक्टू.(स्व.)	14:36	29 अक्टूबर	1:06
1 अगस्त (मृ.)	10:52	1 अगस्त	23:07	31 अक्टू.(स्व.)	16:57	1 नवम्बर	00:00
4 अगस्त (स्व.)	22:03	5 अगस्त	9:26	3 नवं. (मृ.)	23:25	4 नवम्बर	11:03
7 अगस्त (स्व.)	3:20	8 अगस्त	13:59	7 नवं. (पा.)	10:47	7 नवम्बर	23:04
10 अगस्त (मृ.)	4:54	11 अगस्त	15:22	13 नवं. (पा.)	7:24	13 नवम्बर	20:42
15 अगस्त (पा.)	5:05	16 अगस्त	16:52	16 नवं. (पा.)	4:19	17 नवंबर	15:30
19 अगस्त (पा.)	19:19	20 अगस्त	8:15	20 नवं. (मृ.)	19:00	20 नवंबर	6:31
23 अगस्त(पा.)	15:10	24 अगस्त	4:18	23 नवं. (स्व.)	23:42	24 नवंबर	10:05
27 अगस्त(पा.)	9:08	27 अगस्त	13:35	26 नवं. (स्व.)	23:30	27 नवंबर	9:48
30 अगस्त(मृ.)	21:17	31 अगस्त	8:50	29 नवं. (मृ.)	1:46	30 नवंबर	12:54
2 सितं. (स्व.)	4:25	3 सितम्बर	15:27	3 दिसं. (पा.)	10:53	3 दिसम्बर	23:03

✲ भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (2026–2027) ✲

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
6 दिसं. (पा.)	2:22	7 दिसम्बर	9:14
12 दिसं. (पा.)	3:27	13 दिसम्बर	16:47
16 दिसं. (मृ.)	22:45	17 दिसम्बर	11:12
20 दिसं. (स्व.)	9:17	20 दिसम्बर	20:14
23 दिसं. (स्व.)	10:46	23 दिसम्बर	20:53
26 दिसं. (मृ.)	9:42	26 दिसम्बर	20:04
29 दिसं. (मृ.)	13:24	29 दिसम्बर	21:37
सन् 2027 प्रारम्भ			
1 जन. (पा.)	1:42	2 जनवरी	14:24
5 जन. (स्व.)	20:39	6 जनवरी	9:55
11 जन. (मृ.)	22:31	12 जनवरी	11:29
15 जन. (मृ.)	14:32	15 जनवरी	23:51
18 जन. (स्व.)	21:12	19 जनवरी	7:49
21 जन. (स्व.)	21:29	22 जनवरी	5:09
22 जन. (मृ.)	5:09	22 जनवरी	7:37
24 जन. (मृ.)	21:29	25 जनवरी	8:10
27 जन. (पा.)	3:53	28 जनवरी	15:52
31 जन. (स्व.)	19:34	1 फरवरी	8:41

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
4 फर. (पा.)	16:31	5 फरवरी	5:49
10 फर. (मृ.)	14:45	11 फरवरी	3:04
13 फर. (स्व.)	2:06	14 फरवरी	13:27
17 फर.(स्व.)	6:57	17 फरवरी	17:31
20 फर. (मृ.)	7:59	20 फरवरी	18:24
23 फर. (पा.)	10:39	23 फरवरी	21:48
26 फर. (पा.)	20:42	27 फरवरी	5:14
27 फर. (स्व.)	5:14	27 फरवरी	9:13
2 मार्च (पा.)	15:24	3 मार्च	4:44
6 मार्च (पा.)	12:03	6 मार्च	17:34
11 मार्च (स्व.)	3:20	12 मार्च	14:57
15 मार्च (स्व.)	10:50	15 मार्च	21:54
18 मार्च (मृ.)	15:06	19 मार्च	1:51
21 मार्च (मृ.)	18:21	22 मार्च	3:44
24 मार्च (पा.)	00:50	25 मार्च	12:37
28 मार्च (स्व.)	15:04	29 मार्च	00:31
1 अप्रैल (पा.)	11:32	2 अप्रैल	00:45
4 अप्रैल (मृ.)	5:स23	5 अप्रैल	17:36

✲ यज्ञोपवीत धारण करने एवं त्यागने का मन्त्र ✲

✲ यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र ✲

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं परस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवितं बलमस्तु तेजः॥

✲ जीर्ण यज्ञोपवीत त्यागने का मन्त्र ✲

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्॥

❊ पञ्चक नक्षत्र विचार ❊

वासवोत्तर-दलादि पंचके याम्यदिग्गमनं गृहगोपनम्।
प्रेतदाह-तृण-काष-संचयं शय्यका-वितरणं च वर्जयेत्॥

पञ्चक नक्षत्रों में काष्ठ छेदन (लकड़ी तोड़ना), तिनके तोड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतादि दाहसंस्कार, स्तम्भारोपन, तृण, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि का संचय, दुकान, मकान या झोपड़ी आदि की छत डालना, चारपाई, खाट, चटाई आदि बुनना, बैठक की गद्दियों का निर्माण करना त्याज्य माना गया है। पञ्चकों मे हानि, लाभ एवं व्याधि आदि पाँच गुणा, त्रिपुष्कर में त्रिगुणा तथा द्विपुष्कर में दुगुना लाभ या हानि की सम्भावना होती है। विधिवत् नक्षत्र पूजा, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शुभप्रद होता है। प्रेतदाह अथवा किसी अन्य कारण से हानि की आशंका हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान् ब्राह्मण से पञ्चक शान्ति करवाने का विधान है।

ध्यान रहे, मुहूर्त ग्रन्थों में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू प्रवेश, उपनयन आदि तथा रक्षाबन्धन, भैय्यादूज आदि पर्वों में पञ्चक नक्षत्रों के निषेध के बारे में कहीं भी विचार नहीं किया जाता।

बृहद ज्योतिषानुसार तो धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपदा व रेवती नक्षत्र सभी कार्यों में सिद्धि प्रदायक एवं शुभ माने जाते हैं, जबकि पूर्वभाद्रपदा एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धिकारक माने गये हैं।

❊ पञ्चकारम्भ एवं समाप्तिकाल–संवत् 2083 ❊

(19 मार्च 2026 से 6 अप्रैल 2027 ई. तक)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
13 अप्रैल	3 :45	17 अप्रैल	12 :03
10 मई	12 :13	14 मई	22 :34
6 जून	19 :04	11 जून	8 :17
3 जुलाई	24 :49	8 जुलाई	16 :00
31 जुला.	6:38	4 अगस्त	21:54
27 अग.	13 :36	31 अग.	27 :24
23 सितं.	21 :57	28 सितं.	10 :17

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
21 अक्टू.	7 :01	25 अक्टू.	19 :22
17 नवं.	15 :31	22 नवं.	5 :55
14 दिसं.	22 :36	19 दिसं.	15 :58
(सन् 2027 ई.)			
11 जन.	4:35	15 जन.	23:51
7 फर.	10:37	12 फर.	5:42
6 मार्च	17:35	11 मार्च	11:20
2 अप्रैल	25:33	7 अप्रैल	18:26

❊ दीपावली (श्री महालक्ष्मी पूजन) 8 नवम्बर 2026 ई. ❊

श्री महालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या में प्रदोषकाल एवं अर्द्धरात्रि-व्यापिनी हो तो विशेष रूप से शुभ होती है।

कार्तिकस्यासिते पक्षे लक्ष्मीर्निदां विमुञ्चति।
स च दीपावली प्रोक्ताः सर्वकल्याणरूपिणी॥

भविष्यपुराण में भी लक्ष्मीपूजन, के लिये प्रदोषकाल विशेषतया प्रशस्त माना गया है -

कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशावर्धके।
तस्यां सम्पूज्येत् देवी भोगमोक्ष प्रदायिनीम्॥

इस वर्ष कार्तिक अमावस्या 8 नवम्बर, 2026 ई. को प्रातः 11:29 बाद प्रदोष, निशीथ तथा महानिशीथ व्यापिनी होगी। अतः **'दीपावली पर्व' 8 नवम्बर, रविवार, 2026 ई. के दिन ही होगा। सायं दीपावली पर्व स्वाती नक्षत्र, आयुष्मान् योग, तुला राशिस्थ चन्द्र तथा अर्धरात्रि व्यापिनी अमावस्यायुक्त होने से विशेषतः प्रशस्त एवं श्लाघ्य रहेगा।**
विशेष कृत्य - इस दिन प्रातः ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर दैनिक कृत्यों से निवृत हो पितृगण तथा देवताओं का पूजन करना चाहिये। सम्भव हो तो दूध, दही और घृत से पितरों का पार्वण-श्राद्ध करना चाहिये। यदि सम्भव हो तो दिन भर उपवास कर गोधूलि वेला में अथवा कुम्भ, वृष, सिंह, आदि स्थिर लग्न में श्रीगणेश, कलश, षोडशमातृका एवं ग्रहपूजनपूर्वक भगवती लक्ष्मी का षोडशोपचार-पूजन करना चाहिये। इसके अनन्तर **महाकाली** का दवात के रूप में, **महासरस्वती** का कलम, बही आदि के रूप में तथा **कुबेर** का तुला के रूप में सविधि पूजन करना चाहिये। इसी समय दीपपूजन कर यमराज तथा पितृगणों के निमित्त संकल्प दीपदान करना चाहिये। तदोपरान्त यथोपलब्ध निशीथादि शुभ मुहूर्त्तों में मन्त्र-जप, यन्त्र-सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिये।

दीपावली वास्तव में पाँच पर्वों का महोत्सव माना जाता है, जिसकी व्याप्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) से लेकर कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भाई-दूज) तक रहती है। निर्दिष्ट शुभ कालों में किसी स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर आटा, हल्दी, अक्षत एवं पुष्पादि से अष्टदल कमल बनाकर श्रीलक्ष्मी का आवाहन एवं स्थापना करके देवी की विधिवत् पूजार्चना करनी चाहिए।

आवाहन मन्त्र-

'कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्। (श्रीसूक्तम्)

पूजा मन्त्र-ॐ गं गणपतये नमः॥ लक्ष्म्यै नमः॥ नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरेः प्रिया। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्॥' से लक्ष्मी की, **'एरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मा इन्द्राय ते नमः।'** मन्त्र से इन्द्र की और कुबेर की निम्न मन्त्र से पूजा करें-

कुबेराय नमः, 'धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च। भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादि सम्पदः॥' पूजन सामग्री में विभिन्न प्रकार की मिठाई, फल-पुष्पाक्षत, धूप, दीपादि सुगन्धित वस्तुएँ सम्मिलित करनी चाहिए। दीपावली पूजन में प्रदोष, निशीथ एवं महानिशीथ काल के अतिरिक्त चौघड़ियाँ मुहूर्त्त भी पूजन, बहि-खाता पूजन, कुबेर पूजा, जपादि अनुष्ठान की दृष्टि से विशेष प्रशस्त एवं शुभ माने जाते हैं-

प्रदोष काल-8 नवम्बर, 2026 ई. को सूर्यास्त (17:21) से लेकर 20:02 (रात्रि 8:02) तक **प्रदोष-काल** व्याप्त रहेगा।

सायं 17:48 से 19:43 तक स्थिर लग्न **'वृष' विशेषतया शुभ रहेगा**। प्रदोषकाल 17:21 से ही **'शुभ'** की चौघड़ियाँ 19:00 तक रहेगी। तदुपरान्त 19:00 से 20:39 तक **'अमृत'** चौघड़ियाँ भी शुभ हैं। अतएव 17:21 से ही श्रीगणेश-लक्ष्मी पूजन आरम्भ कर लेना चाहिये। इसी काल में दीपदान, महालक्ष्मी, गणेश-कुबेर पूजन, बही-खाता पूजन आदि सम्पूर्ण दीपावली पूजन आरम्भ कर लेना चाहिये। इसी काल धर्म एवं गृहस्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बाँटना शुभ होगा।

निशीथ काल-8 नवम्बर, 2026 ई. को निशीथकाल रात्रि 20:02 से 22:44 तक रहेगा। निशीथकाल में 21:55 तक **'मिथुन'** लग्न, फिर 21:55 से 24:19 तक **'कर्क'** लग्न भी प्रशस्त है।

अतः इस बार **'प्रदोषकाल'** से आरम्भ होकर 22:19 तक का समय अत्यन्त शुभ एवं सिद्धिकारक रहेगा। धर्मनिष्ठ लोगों को इस समय तक अपने पूजन कार्य समाप्ति की ओर बढ़ाने चाहिये। इस अवधि में श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र तथा लक्ष्मी-स्तोत्रादि मन्त्रों का पाठ करना चाहिये। **ध्यान रहें-**22:19 से **'रोग'** की चौघड़ियाँ आरम्भ हो जायेगी।

महानिशीथ काल-रात्रि 22:44 से अर्धरात्रि 25:26 तक महानिशीथ काल रहेगा। इस समयावधि में **'रोग'** तथा **'काल'** की चौघडियां इतनी शुभ नहीं है। अतएव कोई भी स्तोत्र, पाठ आदि प्रदोष/निशीथकाल में आरम्भ कर लेना चाहिये। इस अवधि में काली-उपासना, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि की क्रियाएं, विशेष काम्य प्रयोग, तन्त्र-अनुष्ठान, साधानायें एवं यज्ञादि किए जाते हैं।

अथ संक्षिप्त–सन्ध्योपासना–विधिः

आचमन मन्त्र

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।
ॐ हृषीकेशाय नमः कहकर हस्त प्रक्षालन कर लेवें।

शरीरशुद्धि मन्त्र

ॐ अपवित्रःपवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

आसनशुद्धि का विनियोग

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।

मन्त्र

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

सन्ध्या का संकल्प

ॐ श्री विष्णुर्विष्णुर्विष्णुर्नमः परमात्मने तत्सत् श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वतन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माऽहं ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सन्ध्योपासनं करिष्ये।

अघमर्षणमन्त्रः

ॐ ऋतञ्च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

प्राणायाममन्त्रः

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

पापक्षयार्थमन्त्रः

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्यां पापमकर्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना। रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद् दुरितं मयि इदमहममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

मार्जनमन्त्रः

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः, ॐ ता न ऊर्जे दधातन, ॐ महेरणाय चक्षसे, ॐ यो वः शिवतमो रसः, ॐ तस्य भाजते ह नः, ॐ उशतीरिव मातरः, ॐ तस्मा अरङ्गमाम वः, ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ, ॐ आपो जनयथा च नः।

सूर्योपस्थानमन्त्रः

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्। ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतं भूयश्च शतात्॥

गायत्रीमन्त्रः

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

दैनिकतर्पणम्

देवतर्पणम्

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्	ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्
ॐ विष्णुस्तृप्यताम्	ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्
ॐ रूद्रस्तृप्यताम्	ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्
ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्	ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्
ॐ देवास्तृप्यन्ताम्	ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्

ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्	ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्
ॐ संवत्सराः सावयवास्तृप्यन्ताम्	ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्
ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्	ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्
ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्	ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्
ॐ नागास्तृप्यन्ताम्	ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्
ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्	ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्
ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्	ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्
ॐ सरितास्तृप्यन्ताम्	ॐ भूतग्रामाश्चतुर्विधास्तृप्यन्ताम्
ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्	
ॐ यज्ञास्तृप्यन्ताम्	

दिव्यमनुष्यतर्पणम्

ॐ सनकस्तृप्यताम्	ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्
ॐ सनातनस्तृप्यताम्	ॐ कपिलस्तृप्यताम्
ॐ आसुरिस्तृप्यताम्	ॐ बोढुस्तृप्यताम्
ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्	

मरीच्यादितर्पणम्

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्	ॐ अत्रिस्तृप्यताम्
ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्	ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्
ॐ पुलहस्तृप्यताम्	ॐ क्रतुस्तृप्यताम्
ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्	ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्
ॐ भृगुस्तृप्यताम्	ॐ नारदस्तृप्यताम्

पितृतर्पणम्

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् ॐ सोमस्तृप्यताम् ॐ यमस्तृप्यताम् ॐ अर्यमातृप्यताम्	ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम्
ॐ वसुरूपः पिता तृप्यताम् ॐ रुद्ररूपः पितामहस्तृप्यताम् ॐ आदित्यरूपः प्रपितामहस्तृप्यताम्	ॐ गायत्रीरूपा माता तृप्यताम् ॐ सावित्रीरूपा पितामही तृप्यताम् ॐ सरस्वतीरूपा प्रपितामही तृप्यताम्
ॐ मातामहस्तृप्यताम् ॐ प्रमातामहस्तृप्यताम् ॐ वृद्धप्रमातामहस्तृप्यताम्	

ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः।

सूर्यार्घ्यमन्त्रः

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥
अनेन तर्पणाख्येन कर्मणा श्रीशङ्करः प्रीयतां न मम॥

❊ देवपूजा सम्बन्ध में कुछ शास्त्रोक्त बातें ❊

एका मूर्तिर्न सम्पूज्या गृहिणा स्वेष्टमिच्छता।
अनेकमूर्तिसम्पन्नः सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥

कल्याण चाहने वाले गृहस्थी एक मूर्ति की पूजा न करें, अपितु अनेक देवमूर्ति की पूजा करें, इससे कामना पूर्ण होती है।

किन्तु -

गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्यं गणेशत्रितयं तथा।
शङ्खद्वयं तथा सूर्यो नार्च्यं शक्तित्रयं तथा॥
द्वे चक्रे द्वारकायास्तु शालग्रामशिलाद्वयम्।
तेषां तु पूजनेनैव उद्वेगं प्राप्नुयाद् गृहि॥ (पद्मपुराण)

घर में दो शिवलिङ्ग, तीन गणेश, दो शङ्ख, दो सूर्य, तीन दुर्गामूर्ति, दो गोमती चक्र और दो शालिग्राम की पूजा करने से गृहस्थ को अशान्ति मिलती हैं।

सम शालिग्राम (4,6,8 आदि) का पूजन करें, किन्तु सम में 2 शालिग्राम का पूजन तथा विषम शालिग्राम का पूजन निषिद्ध हैं। विषम में 1 शालिग्राम का पूजन कर सकते है।

प्रतिमा के प्रकार

शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती।
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टाविधा स्मृता॥ (श्रीमद्भागवत्)

शिला, लकड़ी, लोहा, लेप्य (पुती हुई), लेख्य (चित्रित) सिकता (रेती) मनोमयी (मानसिक कल्पित प्रतिमा) तथा माणिकी ये आठ प्रतिमाओं का प्रकार कहा है। निर्णय सिन्धुकार ने सुवर्ण, रजत, ताम्र, मृत्तिका, पाषाण, धातुयुक्त पीतल, कांसा और शुद्ध काष्ठ की प्रतिमा पूजा में उत्तम कही गयी है।

अङ्गुष्टपर्वादाराभ्य वितस्तिं यावदेव तु।
गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शास्यते बुधैः॥ (निर्णयसिन्धु)

अंगुठे के पर्व से आरम्भ कर वितस्ति (प्रादेशमात्र - 12 अंगुल) परिमाण तक घर में प्रतिमा करें। उससे अधिक न करें, ऐसा शास्त्रकारों ने कहा है।

देवीपुराण में सात अंगुल से प्रारम्भ कर बारह अंगुल तक घरों में पूजा करने को कहा है।

प्रयोग पारिजात में व्यास जी ने कहा है कि प्रतिमा और रेशमी वस्त्रादि में लिखित यन्त्रों

को नित्य स्नान न करावें।

नाक्षतैरर्चयेत् विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम्।
न दुर्वया यजेद्देवीं बिल्वपत्रैश्च भास्करम्॥

अक्षत (चावल) से विष्णु का पूजन तथा तुलसी से गणेश, दुर्वा से दुर्गा तथा बिल्वपत्र से सूर्य का पूजन करना निषिद्ध है।

एकं गणाधिपे दद्याद्द्वे सूर्ये त्रीणि शङ्करे।
चत्वारि केशवे दद्यात्सप्तमाश्वत्थे प्रदक्षिणाः॥

गणेश की एक, सूर्य की दो, शिव की तीन, विष्णु की चार, पीपल वृक्ष की सात प्रदक्षिणा करनी चाहिए। शिव प्रदक्षिणा में सोमसूत्र (जलहरी) को नहीं लांघना चाहिए।

तृणैः काष्ठैस्तथा पर्णैः पाषाणैर्लोष्टकादिभिः।
अन्तर्धानं पुनः कृत्वा सोमसूत्रं तु लङ्घयेत्॥

तृण, काष्ठ, घास, पत्थरों तथा किसी भी तरह से ढका हो तो सोम सूत्र को लांघ सकते हैं।

गणेश तथा दुर्गा को छोड़कर, अन्य देवी देवताओं की एक प्रदक्षिणा नहीं करनी चाहिए।

नाङ्गुष्ठैर्मर्दयेद्देवं नाधः पुष्पैः समर्चयेत्।
कुशाग्रैर्न क्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत्॥

अङ्गुठे से देव प्रतिमा का मर्दन नही करना चाहिये। नीचे भूमि पर गिरे हुये पुष्प से देव पूजा नही करनी चाहिये। कुश के अग्रभाग से पानी नही छिड़कना चाहिये। यह सारे कार्य वज्रपात दोष के समान हैं।

देवताओं को तीन बार एवं पितरों को एकबार धोकर अक्षत चढ़ायें।

प्रदक्षिणा करने के नियम-

पदान्तरे पदं न्यस्य करौ चलनवर्जितौ।
स्तुतिर्वाचि हृदि ध्यानं चतुरङ्गं प्रदक्षिणम्॥

धीरे-धीरे पांव रखते हुए हाथ को चलन रहित कर, वाचिक स्तुति करते हुए हृदय में ध्यान से युक्त होकर चतुरङ्ग प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

स्थानभेद में जप की श्रेष्ठता -

गृहे चैकगुणः प्रोक्तो गोष्ठे शतगुणः स्मृतः।

पुण्यारण्ये तथा तीर्थे सहस्रगुणमुच्यते।
अयुतः पर्वते पुण्यं नद्यां लक्षगुणो जपे।
कोटिर्देवालये प्राप्ते चानन्तः शिवसन्निधौ॥

घर में जप करने से एक गुना, गौशाला में सौ गुना, पुण्यमय वन में तथा तीर्थस्थल में हजार गुना, पर्वत पर दस हजार, नदी तट पर लाख गुना, देवालय में करोड़ गुना तथा शिवालय मे अनन्त गुना पुण्य प्राप्त होता है।

घर में स्नान करते समय इस मन्त्र का प्रयोग करें

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
कुरुक्षेत्र गया गङ्गा प्रभास पुष्कराणि च।
एतानि पुण्यतीर्थानि स्नानकाले भवन्त्विह॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी सारी नदियाँ इस जल में समाहित हुई है, कुरुक्षेत्र, गया, गङ्गा, प्रभास, पुष्करादि तीर्थ यहाँ उपस्थित है। ऐसी भावना करते हुये स्नान करना चाहिये।

स्नान काल में गङ्गाजी की प्रार्थना-

विष्णु पादाब्द सम्भूते! गङ्गे त्रिपथगामिनि।
धर्म्मद्रवेति विख्याते! पापं मे हर जाह्नवि॥

तुलसी स्तुति-

देवैस्त्वं निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनिश्वरैः।
नमो नमस्ते तुलसि पापं हर हरिप्रिये॥

हे माँ तुलसी! देवताओं के द्वारा आपका निर्माण किया गया हैं। पूर्व में ऋषि-मुनियों द्वारा आपकी पूजा-अर्चना हुई है। आपको बार बार नमन हैं तथा हे हरिप्रिया आप हमारे सारे पाप हर लो।

तुलसी तोड़ने का मन्त्र-

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।
केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने॥

हे माँ तुलसी! आप अमृतजन्मा हो और सदा श्री हरि की प्रिया हो। मैं आपको श्री केशव वासुदेव के लिये तोड़ रहा हूँ, आप सदा मुझ पर प्रसन्न रहें।

तुलसी को जल देने का मन्त्र-

(1) **त्वदङ्गसंभवेन त्वां पूजयामि यथा हरिम्।**
तथा नाशय विघ्नं मे ततोयान्ति परां गतिम्॥

आपके बिना श्री हरि की पूजा संभव नही हैं अतः आपकी पूजा भी श्री हरि की पूजा के समान ही श्रेय प्रदान करने वाली हैं इसलिये हे मातः! आप हमारे सारे पापों का नाश कीजिये जिससे हमें परा गति की प्राप्ति हो।

(2) **महाप्रसाद जननी सर्वसौभाग्यवर्धिनी।**
आधि व्याधि जरा मुक्तं तुलसी त्वां नमोस्तुते॥

हे भक्ति का प्रसाद देने वाली माँ! सौभाग्य बढ़ाने वाली, मन के दुःख, और शरीर के रोग दूर करने वाली तुलसी माता को हम प्रणाम करते हैं।

अष्टनाम स्तव (पद्मपुराण से तुलसी के आठ नाम)-

वृन्दावनी, वृन्दा, विश्वपूजिता, पुष्पसारा, नन्दिनी, कृष्णजीवनी, विश्वपावनी, तुलसी।

पीपल पूजन का मन्त्र-

अश्वत्थ हुत भुग्वाम गोविन्दस्य सदाप्रिय।
अशेषं हर मे पापं वृक्षराज नमोऽस्तुते॥

हे गोविन्द के सदा प्रिय अश्वत्थ! हमारे सारे पापों को आप हर लो। हे वृक्षराज आपको हमारा नमन हो।

(पूजा में उपयोगी ऐसे दीपक, घण्टा एवं शङ्ख पूजन के मन्त्र)

दीपक पूजन का मन्त्र-

भो दीप! देव अपरस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

घण्टा पूजन-

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु राक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयते्॥

शङ्ख पूजन-

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोस्तुते॥

❊ ॥ विविध द्रव्यों द्वारा शिवपूजन से अभीष्ट प्राप्ति ॥ ❊

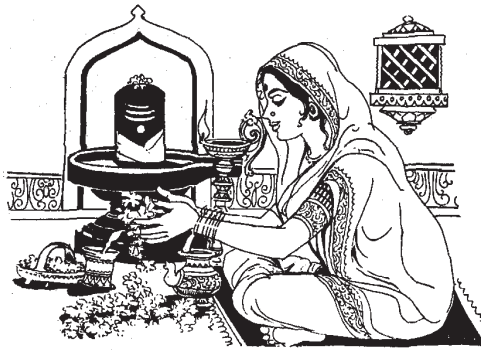

(1) **लक्ष्मी वृद्धि के लिए** – महादेव जी का चावलों से पूजन (चढ़ाने से) करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है। **तंडुलारोपणे नृणां लक्ष्मी वृद्धिः प्रजायते॥**

विशेष रूप से चावल चढ़ाने की विधि इस प्रकार है – चावल अखण्डित (अक्षत) होने चाहिए। इन्हें उत्तम भक्तिभाव से चढ़ाना चाहिए। रुद्रपूजा के विधान अनुसार **रुद्र प्रधान मन्त्र** से पूजा करके भगवान् शिव के ऊपर बहुत सुन्दर वस्त्र चढ़ायें और उसी पर चावल रखकर समर्पित करें। भगवान् शिव के ऊपर एक श्रीफल, गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि निवेदन करने से पूजा का पूरा-पूरा फल प्राप्त होता है। वहां शिव के समीप बारह ब्राह्मणों को भोजन कराने से मन्त्रपूर्वक साङ्गोपाङ्ग पूजा सम्पन्न होती है। जहाँ सौ मन्त्र जपने की विधि हो, वहाँ पर 108 मन्त्र जपने का विधान है। लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

(2) **संतान प्राप्ति** – गेहूँ के बने हुए पकवान से भगवान् शंकर की पूजा निश्चय ही बहुत उत्तम मानी गई है। एक लाख बार पूजन करने से संतान सुख में वृद्धि होती है।

(3) **धर्म-अर्थ-काम-भोग की वृद्धि** – इसके लिए प्रियंगु (कंगनी) द्वारा सर्वाध्यक्ष परमात्मा शिव का पूजन करने से सिद्धि होती है। उपासक को समस्त सुखों को देने वाली होती है।

(4) **रोग शान्ति के लिए** – उड़द की पूजा रोग शान्ति के लिए कही गई है। इसके साथ ही विधिपूर्वक पूजन करना भी शुभ होता है। इसके अतिरिक्त भक्तिभाव से विधिपूर्वक श्री शिवपूजन करके जलधारा समर्पित करनी चाहिए। ज्वर के कोप की शान्ति के लिए भी जलधारा विशेष शुभ होती है।

(5) **सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि के लिए** – शतरुद्रिय मन्त्र से, रुद्री के ग्यारह पाठों से, रुद्रमन्त्रों के जप से, पुरुष सूक्त से, छः ऋचावाले रुद्रसूक्त से, महामृत्युंजय मन्त्र से, गायत्री मन्त्र से अथवा शिव के शास्त्रोक्त नामों के आदि में प्रणव और अन्त में **नमः** पद

जोड़कर बने हुए मन्त्रों द्वारा जलधारा अर्पित करनी चाहिए। जैसे – **ॐ नमः शिवाय**। उत्तम भस्म धारण करके उपासक को प्रेमपूर्वक नाना प्रकार के शुभ एवं दिव्य द्रव्यों द्वारा शिवलिङ्ग की पूजा करनी चाहिए और शिव पर उनके सहस्रनाम मन्त्रों से घी की धारा चढ़ानी चाहिए। ऐसा करने से **वंश का विस्तार** होता है, इसमें संशय नहीं है।

(6) **प्रमेह आदि रोग की शान्ति के लिये** केवल दुग्ध की धारा शिवजी पर विशेषतः करनी चाहिए।

(7) **बुद्धि-उज्जवल करने के लिए** – भगवान् शंकर को शक्कर मिश्रित दुग्ध की धारा चढ़ाने से तथा दस हज़ार मन्त्रों का जप (पंचाक्षरी मन्त्र) करने से बृहस्पति के समान उत्तम बुद्धि प्राप्त हो जाती है।

विशेष रूप से गङ्गाजल की धारा तो भोग और मोक्ष दोनों फलों को देने वाली है। सभी प्रकार की धारा चढ़ाने के समय मृत्युञ्जय मन्त्र पढ़ते हुए चढ़ानी चाहिए। दस हज़ार जप का विधान है और ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

उपरोक्त विधि से शिवपूजन एवं पार्थिव लिङ्ग की पूजा करने से उपासक को तीन मास में सिद्धि हो जाती है।

नव ग्रहों के जपार्थ वैदिक मन्त्र

सूर्यः ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवोयानि भुवनानि पश्यन्॥

चन्द्रः ॐ इमं देवा असपत्नं सुवद्धं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जान
राज्यायेन्द्रस्येन्द्रिस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी
राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा॥

मंगलः ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्।
अपां रेतां सिजिन्वति॥

बुधः ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेसं सृजेथामयश्च।
अस्मिनंत्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत॥

गुरुः ॐ बृहस्पतेऽतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

शुक्रः ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः।
ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु॥

शनिः ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः॥

राहुः ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठयावृता॥

केतुः ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्याऽपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

✻ ॥ 51 शक्तिपीठ ॥ ✻

शक्तिपीठों की संख्या इक्यावन कही गई है। ये भारतीय उपमहाद्वीप में विस्तृत हैं। "शक्ति" अर्थात देवी दुर्गा, जिन्हें दाक्षायनी या पार्वती रूप में भी पूजा जाता है। "भैरव" अर्थात शिव के अवतार, जो देवी के स्वांगी हैं। "अंग या आभूषण" अर्थात, सती के शरीर का कोई अंग या आभूषण, जो श्री विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र से काटे जाने पर पृथ्वी के विभिन्न स्थानों पर गिरा, आज वह स्थान पूज्य है, और शक्तिपीठ कहलाता है।

क्रम	शक्ति	अंग या आभूषण	भैरव	स्थान
1	कोट्टरी	ब्रह्मरंध्र (सिर का ऊपरी भाग)	भीमलोचन	हिंगुल या हिंगलाज, कराँची, पाकिस्तान से लगभग 125 कि.मी. उत्तर-पूर्व में
2	महिषमर्दिनी	आँख	क्रोधीश	शर्करे, कराची पाकिस्तान के सुक्कर स्टेशन के निकट, इसके अलावा नैनादेवी मंदिर, बिलासपुर, हि.प्र. भी बताया जाता है।
3	सुनंदा	नासिका	त्र्यंबक	सुगंध, बांग्लादेश में शिकारपुर, बरिसल से 20 कि.मी. दूर सोंध नदी तीरे
4	महामाया	गला	त्रिसंध्येश्वर	अमरनाथ, पहलगाँव, काश्मीर
5	सिद्धिदा (अंबिका)	जीभ	उन्मत्त भैरव	ज्वाला जी, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
6	त्रिपुरमालिनी	बांया वक्ष	भीषण	जालंधर, पंजाब में छावनी स्टेशन निकट देवी तलाब
7	जय दुर्गा	हृदय	बैद्यनाथ	बैद्यनाथधाम, देवघर, झारखंड

8	महाशिरा	दोनों घुटने	कपाली	गुजयेश्वरी मंदिर, नेपाल, निकट पशुपतिनाथ मंदिर
9	दाक्षायनी	दायां हाथ	अमर	मानस, कैलास पर्वत, मानसरोवर, तिब्बत के निकट एक पाषाण शिला
10	विमला	नाभि	जगन्नाथ	बिराज, उत्कल, उड़ीसा
11	गंडकी चंडी	मस्तक	चक्रपाणि	गंडकी नदी के तट पर, पोखरा, नेपाल में मुक्तिनाथ मंदिर
12	देवी बाहुला	बायां हाथ	भीरुक	बाहुल, अजेय नदी तट, केतुग्राम, कटुआ, वर्धमान जिला, पश्चिम बंगाल से 8 कि.मी.
13	मंगलचंद्रिका	दायीं कलाई	कपिलांबर	उज्जनि, गुस्कुर स्टेशन से वर्धमान जिला, पश्चिम बंगाल 16 कि.मी.
14	त्रिपुरसुंदरी	दायां पैर	त्रिपुरेश	माताबाढ़ी पर्वत शिखर, निकट राधाकिशोरपुर गाँव, उदरपुर, त्रिपुरा
15	भवानी	दांयी भुजा	चंद्रशेखर	छत्राल, चंद्रनाथ पर्वत शिखर, निकट सीताकुण्ड स्टेशन, चिट्टागौंग जिला, बांग्लादेश
16	भ्रामरी	बायां पैर	अंबर	त्रिस्त्रोत, सालबाढ़ी गाँव, बोडा मंडल, जलपाइगुड़ी जिला, पश्चिम बंगाल
17	कामाख्या	योनि	उमानंद	कामगिरि, कामाख्या, नीलांचल पर्वत, गुवाहाटी, असम
18	जुगाड्या	दायें पैर का बड़ा अंगूठा	क्षीर खंडक	जुगाड्या, खीरग्राम, वर्धमान जिला, पश्चिम बंगाल

19	कालिका	दायें पैर का अंगूठा	नकुलीश	कालीपीठ, कालीघाट, कोलकाता
20	ललिता	हाथ की अंगुली	भव	प्रयाग, संगम, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
21	जयंती	बायीं जंघा	क्रमादीश्वर	जयंती, कालाजोर भोरभोग गांव, खासी पर्वत, जयंतिया परगना, सिल्हैट जिला, बांग्लादेश
22	विमला	मुकुट	सांवर्त	किरीट, किरीटकोण ग्राम, लालबाग कोर्ट रोड स्टेशन, मुर्शीदाबाद जिला, पश्चिम बंगाल से 3 कि.मी. दूर
23	विशालाक्षी एवं मणिकर्णी	मणिकर्णिका	कालभैरव	मणिकर्णिका घाट, काशी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
24	श्रवणी	पीठ	निमिष	कन्याश्रम, भद्रकाली मंदिर, कुमारी मंदिर, तमिल नाडु
25	सावित्री	एड़ी	स्थनु	कुरुक्षेत्र, हरियाणा
26	गायत्री	दो पहुंचियां	सर्वानंद	मणिबंध, गायत्री पर्वत, निकट पुष्कर, अजमेर, राजस्थान
27	महालक्ष्मी	गला	शंभरानंद	श्री शैल, जैनपुर गाँव, 3 कि.मी. उत्तर-पूर्व सिल्हैट टाउन, बांग्लादेश
28	देवगर्भ	अस्थि	रुरु	कांची, कोपई नदी तट पर, 4 कि.मी. उत्तर-पूर्व बोलापुर स्टेशन, बीरभुम जिला, पश्चिम बंगाल
29	काली	बायां नितंब	असितांग	कमलाधव, शोन नदी तट पर एक गुफा में, अमरकंटक, मध्य प्रदेश
30	नर्मदा	दायां नितंब	भद्रसेन	शोन्देश, अमरकंटक, नर्मदा के उद्गम पर, मध्य प्रदेश

31	शिवानी	दायां वक्ष	चंदा	रामगिरि, चित्रकूट, झांसी-माणिकपुर रेलवे लाइन पर, उत्तर प्रदेश
32	उमा	केश गुच्छ: चूड़ामणि	भूतेश	वृंदावन, भूतेश्वर महादेव मंदिर, निकट मथुरा, उत्तर प्रदेश
33	नारायणी	ऊपरी दाड़	संहार	शुचि, शुचितीर्थम शिव मंदिर, 11 कि.मी. कन्याकुमारी-तिरुवनंतपुरम मार्ग, तमिल नाडु
34	वाराही	निचला दाड़	महारुद्र	पंचसागर, धरान, विजयपुर, नेपाल
35	अर्पण	बायां पायल	वामन	करतोयतत, भवानीपुर गांव, 28 कि.मी. शेरपुर से, बागुरा स्टेशन, बांग्लादेश
36	श्री सुंदरी	दायां पायल	सुंदरानंद	श्री पर्वत, लद्दाख, कश्मीर, अन्य मान्यता: श्रीशैलम, कुर्नूल जिला आंध्र प्रदेश
37	कपालिनी (भीमरूप)	बायीं एड़ी	शर्वानंद	विभाष, तामलुक, पूर्व मेदिनीपुर जिला, पश्चिम बंगाल
38	चंद्रभागा	आमाशय	वक्रतुंड	प्रभास, 4 कि.मी. वेरावल स्टेशन, निकट सोमनाथ मंदिर, जूनागढ़ जिला, गुजरात
39	अवंति	ऊपरी ओष्ठ	लंबकर्ण	भैरवपर्वत, भैरव पर्वत, क्षिप्रा नदी तट, उज्जयिनी, मध्य प्रदेश
40	भ्रामरी	ठोड़ी	विकृताक्ष	जनस्थान, गोदावरी नदी घाटी, नासिक, महाराष्ट्र
41	राकिनी: विश्वेश्वरी	गाल	वत्सनाभ: दंडपाणि	सर्वशैल:गोदावरीतीर, कोटिलिंगेश्वर मंदिर, गोदावरी नदी तीरे, राजमहेंद्री, आंध्र प्रदेश

42	अंबिका	बायें पैर की अंगुली	अमृतेश्वर	बनासकाँठा, गुजरात।
43	कुमारी	दायां स्कंध	शिवा	रत्नावली, रत्नाकर नदी तीरे, खानाकुल-कृष्णानगर, हुगली जिला पश्चिम बंगाल
44	उमा	बायां स्कंध	महोदर	मिथिला, जनकपुर रेलवे स्टेशन के निकट, भारत-नेपाल सीमा पर
45	कलिका देवी	पैर की हड्डी	योगेश	नलहाटी, नलहाटि स्टेशन के निकट, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
46	जयदुर्गा	दोनों कान	अभिरु	कर्नाट, अज्ञात
47	महिषमर्दिनी	भ्रूमध्य	वक्रनाथ	वक्रेश्वर, पापहर नदी तीरे, 7 कि.मी. दुबराजपुर स्टेशन, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
48	यशोरेश्वरी	हाथ एवं पैर	चंदा	यशोर, ईश्वरीपुर, खुलना जिला, बांग्लादेश
49	फुल्लरा	ओष्ठ	विश्वेश	अट्टहास, 2 कि.मी. लाभपुर स्टेशन, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
50	नंदिनी	गले का हार	नंदिकेश्वर	नंदीपुर, चारदीवारी में बरगद वृक्ष, सैंथिया रेलवे स्टेशन, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
51	इंद्रक्षी	पायल	राक्षसेश्वर	लंका, स्थान अज्ञात, (एक मतानुसार, मंदिर ट्रिंकोमाली में है, पर पुर्तगली बमबारी में ध्वस्त हो चुका है। एक स्तंभ शेष है। यह प्रसिद्ध त्रिकोणेश्वर मंदिर के निकट है)

❊ ॥ 18 पुराण (एक परिचय) ॥ ❊

क्रम	नाम
1	ब्रह्म पुराण
2	पद्म पुराण
3	विष्णु पुराण
4	शिव पुराण
5	भागवत पुराण
6	नारद पुराण
7	मार्कण्डेय पुराण
8	अग्नि पुराण
9	भविष्य पुराण

क्रम	नाम
10	ब्रह्मवैवर्त पुराण
11	लिङ्ग पुराण
12	मत्स्य पुराण
13	कर्म पुराण
14	स्कन्द पुराण
15	गरुड पुराण
16	नृसिंह पुराण
17	वराह पुराण
18	विष्णु-धर्मोत्तर पुराण

॥ 84 लाख योनियाँ ॥

क्रम	विवरण
1	20 लाख वृक्षादि
2	9 लाख जलचर
3	11 लाख कृमि
4	10 लाख पक्षी
5	30 लाख पशु
6	4 लाख वानर
7	1 मानव योनि

॥ भारत के चार धाम ॥

1	बद्रिकाश्रम (सतयुग)
2	रामेश्वर (त्रेतायुग)
3	द्वारिका (द्वापरयुग)
4	जगन्नाथ पुरी (कलयुग)

॥ उत्तराखण्ड के चार धाम ॥

1	यमुनोत्री	3	केदारनाथ
2	गङ्गोत्री	4	बदरीनाथ

❊ ॥ 14 लोक ॥ ❊

क्रम	नाम
ऊपर	
1	भूः
2	भुवः
3	स्वः
4	महः
5	जनः
6	तपः
7	सत्यम् (ब्रह्मलोक)

क्रम	नाम
नीचे	
1	अतल
2	वितल
3	सुतल
4	तलातल
5	महातल
6	रसातल
7	पाताल

❊ ॥ सप्तर्षि ॥ ❊

क्रम	ऋषियों के नाम
1	गौतम
2	भारद्वाज
3	विश्वामित्र
4	कश्यप
5	जमदग्नि
6	वशिष्ठ
7	अत्रि

❊❊❊❊❊

❊ ॥ दशावतार ॥ ❊

क्रम	अवतारों के नाम
1	श्री मत्स्य अवतार
2	श्री कूर्म अवतार
3	श्री वाराह अवतार
4	श्री नरसिंह अवतार
5	श्री वामन अवतार
6	श्री परशुराम अवतार
7	श्री राम अवतार
8	श्री बलदेव अवतार
9	श्री कृष्ण अवतार
10	श्री कल्कि अवतार

❊ षोडश संस्कार (एक संक्षिप्त परिचय)❊

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादि द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रत्ये चेह च॥

सब मनुष्यों को उचित है कि वेदात्म पुण्यरूप कर्मों से ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य अपने सन्तानों का षोडश संस्कार करें जिससे शरीर एवं मन की शुद्धि होती है तथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष रूपी चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति के योग्य बनें। मनुस्मृति के अनुसार यह 16 संस्कार इस प्रकार हैं-

1. **गर्भाधान संस्कार-**गृहाश्रमी होने पर संतान प्राप्ति के लिये वीर्य निषेचन द्वारा गर्भस्थापन करना।
2. **पुंसवन-**स्त्री के गर्भाधान के चिह्न प्रकट होने पर दूसरे या तीसरे मास में पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से यज्ञपूर्वक की जानेवाली विधि।
3. **सीमन्तोन्नयन-**गर्भ के चतुर्थमास में गर्भ स्थिरता पुष्टि एवं स्त्री के आरोग्य हेतु विधि।
4. **जातकर्म-**शिशु जन्म के समय किया जाने वाला संस्कार जिसमें सोने की शलाका से नवजात को थोड़ा सा मधु एवं घृत चटाया जाता हैं।
5. **नामकरण-**जन्म से 11, 12वें या किसी भी सुखमय दिन में बालक का नाम रखना।
6. **निष्क्रमण-**बालक को चतुर्थमास में घर से बाहर भ्रमण कराने ले जाना।
7. **अन्नप्राशन-**लगभग छठे मास में बालक को अन्न आदि सुपाच्य पौष्टिक भोजन देना।
8. **मुण्डन(चूड़ाकर्म)-**1 या 3 वर्ष बाद बालक का प्रथम बार मुण्डन कराना।
9. **उपनयन-**बालक का यज्ञोपवीत करना एवं वेदाध्ययन के लिये गुरु समीप निवास।
10. **वेदारम्भ-**गुरु के समीप रहकर वेदाध्ययन करना।
11. **केशांत-**युवावस्था के प्रारम्भ में केशकर्तन करना।
12. **समावर्तन-**स्नातक होकर शिक्षा समाप्त कर गुरुकुल छोड़ना।
13. **विवाह-**गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना एवं धर्मपूर्वक सन्तानोत्पत्ति में प्रवृत्त होना।
14. **वानप्रस्थ-**सन्तानों के स्वावलम्बी होने पर 50 वर्ष की आयु पश्चात् घर को त्याग, वन में तपस्या एवं ईश्वर चिन्तन करना।
15. **संन्यास-**सांसारिक भोग आदि की भावनाओं का त्याग कर परोपकरार्थ विचरण की दीक्षा लेना तथा ब्रह्म में लीन रहकर आत्मज्ञान व मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रयत्न करना।
16. **अन्त्येष्टि-**प्राणवियोग होने पर शरीर का दाहकर्म करना।

❊ आध्यात्मिक जीवन में गुरु का महत्त्व ❊

वैसे तो कोई भी शिक्षा गुरु के बिना अधूरी है किन्तु आध्यात्मिक जीवन में गुरु के बिना तो एक भी डग चलना अति दुष्कर है। गुरु साक्षात् इष्ट का स्वरूप होता हैं तथा गुरु को शिव तथा शिव को गुरु कहा गया हैं। विद्या के आकार में "योगेश्वर" शिव ही गुरु बनकर विराजमान है। जैसे शिव, वैसी विद्या तथा जैसी विद्या वैसे गुरु, इन सभी में अभेद दृष्टि रखनी चाहिये तथा शिव, विद्या तथा गुरु के पूजन से समान फल मिलता हैं।

जो गुरु तत्त्ववेत्ता, गुणवान्, विद्वान, परमानन्द प्रकाशक तथा ईश्वरभक्त हैं वही आनन्द का साक्षात्कार करा सकता है तथा ज्ञानरहित नाममात्रका गुरु ऐसा नही कर सकता।

जन्मानेकशतैः सदादरयुजा भक्त्या समाराधितो
भक्तैर्वैदिकलक्षणेन विधिना सन्तुष्ट ईशः स्वयम्।
साक्षात् श्रीगुरुरूपमेत्य कृपया दृग्गोचरः सन् प्रभुः
तत्त्वं साधु विबोध्य तारयति तान् संसारदुःखार्णवात्॥

❊ गुरु से मन्त्र ग्रहण तथा जप विधि (संक्षिप्त) ❊

आज्ञाहीन, क्रियाहीन, श्रद्धाहीन तथा विधिहीन जप निष्फल होता हैं अतः तदर्थ जिज्ञासु के लिये योग्य गुरु से मन्त्र की दीक्षा लेकर ही उसका जप करना श्रेयस्कर तथा महान फलदायी होता है।

जिज्ञासु को चाहिये कि वह पहले तत्त्ववेत्ता, जपशील, सद्गुणसम्पन्न, ध्यानयोगपरायण गुरु की शरण में जाकर शुद्ध मन से प्रयत्नपूर्वक उन्हें संतुष्ट करें। निश्छल भाव से गुरु की विधिवत् पूजा करके मन्त्र एवं ज्ञान का उपदेश क्रमशः प्राप्त करें।

शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र एवं सर्वदोष रहित शुभ योग में एकान्त स्थान में अत्यन्त प्रसन्नचित्त से उच्चस्वर में भलीभाँति उच्चारण कराकर गुरु शिष्य को सभी प्रकार से आशीर्वादपूर्वक मन्त्र प्रदान करें। इस प्रकार गुरुसे प्राप्त मन्त्र का नित्य प्रति अनन्यचित्त होकर यथाशक्ति जप करना चाहिये।

जिज्ञासु को स्नान करके शुद्ध स्थान में स्वच्छ आसन बिछाकर पूर्वाभिमुख बैठकर हृदय स्थान में गुरु तथा शिव का ध्यान करके जप में प्रवृत्त होना चाहिये। जप से पहले न्यासादि कर, तदनन्तर जप में प्रवृत्त होना चाहिये। **सभी जपों में मानस जप श्रेष्ठ है।**

❊ होमादि में अग्निवास ❊

किसी भी अनुष्ठान के पश्चात् हवन करने का शास्त्रीय विधान है और हवन करने हेतु भी कुछ नियम बताये गए हैं जिसका अनुसरण करना अति आवश्यक है, अन्यथा अनुष्ठान का दुष्परिणाम भी आपको झेलना पड़ सकता है । इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात है हवन के दिन 'अग्नि के वास' का पता करना ताकि हवन का शुभ फल आपको प्राप्त हो सके ।

तिथि की संख्या में 1 जोडें तथा वार की संख्या जोड़कर उसे 4 से भाग दें।

वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए।

उदाहरणार्थ-कृष्ण पक्ष की द्वितीया को मङ्गलवार को अग्निवास देखना हो तो हमें (कृष्ण पक्ष द्वितीया->17+1+3<-मङ्गलवार)=21:4, इस उदाहरण में जवाब को 4 से विभाजित करने पर 1 बचा जिससे हमें जानना चाहिये कि उस दिन अग्नि का वास आकाश में है तथा यज्ञ हानिकारक हो सकता है।

यदि शेष शून्य (0) अथवा 3 बचे, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होगा और इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है ।

यदि शेष 2 बचे तो अग्नि का वास पाताल में होता है और इस दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है ।

यदि शेष 1 बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है ।

अतः यह आवश्यक है की होम में अग्नि के वास का पता करने के बाद ही हवन करें ।

तदुपरांत गृह के 'मुख-आहुति-चक्र' का विचार करना चाहिए इसके लिए अपने परिचित ज्योतिषी से परामर्श कर लें।

नोट-नित्य प्रतिदिन हवन करने वालों के लिये यह नियम लागू नही होता।

अग्निवास का परिहार -

विवाहयात्रा-व्रत-गोचरेषु चूड़ोपनीति ग्रहणे युगादौ।
दुर्गाविधाने सुतप्रसूते नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्॥

अर्थात् नित्य नैमित्तिक कार्य, जन्म व मृत्यु के समय, विवाह में, यात्रा आरम्भ या यात्राकाल में, व्रतोद्यापन में ग्रहों की अनिष्ट गोचर स्थिति में मुण्डन, उपनयनादि संस्कार में, ग्रहण शान्ति, रोग-पीड़ा की शान्ति, नवरात्र-दुर्गा-पूजा, पुत्रादि सन्तान जन्मकाल में अग्निवास का विचार नही किया जाता।

❊ होमादि में शिववास ❊

शिव से सम्बन्धित होमादि अनुष्ठान यज्ञ करने के लिये शिव वास का विचार करना चाहिये। इसकी विधि निम्न प्रकार से है-

तिथि की संख्या को दोगुना करके उसमें 5 जोडें तथा उसे 7 से भाग दें।

तिथि की गणना शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए।

उदाहरणार्थ-कृष्ण पक्ष की द्वितीया को मङ्गलवार को शिववास देखना हो तो हमें कृष्ण पक्ष द्वितीया->(17x2)+5=39:7, इस उदाहरण में जवाब को 7 से विभाजित करने पर 4 बचा जिससे हमें जानना चाहिये कि उस दिन शिव का वास सभा में है तथा यज्ञ सन्तापकारक हो सकता है।

कैलासे लभते सौख्या, गौर्या सह सुखसम्पदा, वृषभे अभीष्ट सिद्धि स्यात्।
सभासन्तापकारिणी, भोजने च भवेत्पीडा, क्रीडायां कष्टमेव च, श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेव विचिन्तयेत्॥

शिव का वास एवं शेष बचे हुये अंको का फल -

बचे हुये अंक	शिव का वास	फल
1	कैलास	सुखदायी
2	गौरी के साथ	सुखसम्पदा
3	नन्दी पर सवार	कार्यसिद्धि
4	सभा में	सन्तापकारी
5	भोजन में	पीडादायी
6	क्रीडा करते हुये	कष्टदायी
0	श्मशान में	अनिष्ट (मृत्यु)

❊ चतुर्युगों की व्यवस्था का वर्णन वि.सं. 2083 ❊

सतयुग – इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी (अक्षय-नवमी) बुधवार को हुई। इसकी आयु 1728000 वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म्म, वराह, नृसिंह – ये चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, वराह जी ने जलोद्धार किया, कूर्म जी ने पृथ्वी की रक्षा की और उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी। समय पर वर्षा थी, फसलें अच्छी होती थी। स्त्रियां पद्मिनी थीं, गौवें दूध अधिक देती थीं। पुण्य 20 विश्वे पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण 20000 चन्द्र ग्रहण 2000 थे।

त्रेतायुग – वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय-तृतीया), सोमवार को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 1296000 वर्ष थी। इस युग से तीन अवतार वामन, परशुराम, श्री रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समग्र पृथ्वी को 3 पैर में नाप कर राजा बली को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का 21 बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। पुण्य 15 विश्वे, पाप 5 विश्वे था। ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ट त्यागी थे। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रणी पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का था। सूर्य ग्रहण 20000 और चन्द्र ग्रहण 30000 थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग – माघ कृष्ण 30 (मौनी अमावस्या) शुक्रवार को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 7,64,000 वर्ष थी। इसमें 2 अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य 10 विश्वे थां। सूर्य ग्रहण 24000, चन्द्र ग्रहण 36000 थे। स्त्रियां शांखिनी एवं शीलयुक्ता होती थी।

कलियुग – भाद्रपद कृष्ण 13, रविवार आधी रात को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 432000 वर्ष है, इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार है, उनका काम धर्मका उद्धार करना है। पुण्य 5 विश्वे, पाप 15 विश्वे हैं, गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण 46000 होंगे। कलियुग के अन्त में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारिणी स्त्रियां अपने को सति कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ ब्राह्मण की हत्या से भी भय नहीं करेंगे। सन्तान का माता-पिता के साथ स्वार्थ के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। श्रीगंगा मुख्य तीर्थ होगी। शासन प्रबन्ध में धर्म का स्थान नगण्य होगा। स्त्रियों शाखिनी होंगी।

आपको किस दिन क्या करना शुभ है

	रविवार	सोमवार	मङ्गलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी	लेखनादि कार्य, मेडिकल शिक्षा सौन्दर्य प्रसाधन औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी	बिजली (इलैक्ट्रॉनिक), सर्जरी, शिक्षा, शास्त्र विद्या, अग्नि स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दन्त चिकित्सा	गणित, लेखनादि बौद्धिक कार्य, बैंक, वकालत, तकनीकी, ज्योतिष, वाहनादि चलाना, सीखना	दर्शन शास्त्र धर्म मंत्र, ज्योतिष, संस्कृत विद्यारम्भ, वकालत, उच्च पद, प्रशासनिक शिक्षा	नृत्य, गायन, कला, संगीत, एक्टिंग, गीत, काव्य, सौन्दर्य सम्बन्धी	तकनीकी शिल्प कला, मशीनरी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासन कार्य सेनाधिकारी, ज्वैलरी, औषधि, शास्त्र, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि, मेडिकल, मंत्रानुष्ठान	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी, डेयरी, फार्म, शंख, मोती, औषधि, स्त्री, धन, सम्पदा, सौन्दर्य प्रसाधन, सुगन्धि, विदेश पत्राचार	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बन्धित कार्य, बेकरी, लोहा तांबा, भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय शेयरों का क्रय, पुस्तक लेखन, शिक्षण, वकालत, शिल्प, सम्पादन कार्य	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि वाहनादि का क्रय विक्रय, विदेश गमन	संगीत, सिनेमा, विदेश यात्रा, टेलीविजन, श्रृंगारिक वस्तु, रुई, कपड़ा चाँदी, रसायन, सुगन्धि	मशीनरी, लोहा, चमड़ा, लकड़ी, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, ठेकेदारी शास्त्रों का क्रय विक्रय, आपरेशन, कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी

अन्य विविध मुहूर्त

नाम मुहूर्त	शुभ ग्रह्य तिथि	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चों को स्कूल में डालना (विद्यारम्भ)	2, 3, 5, 7, 10, 11, 12	उत्तरायण, भाद्र 5 वें वर्ष रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र	अश्विनी, पुनर्वसु, अश्लेषा, रेवती, अनुराधा, आर्द्रा, स्वाति, चित्रा
दुकान:बहीखाता शुरु	1 (कृ), 3, 5, 7, 10, 11, 13 शुक्ल पक्ष में	रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन	रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढा, उ०फाल्गुनी, उ०भाद्रपदा, हस्त, अश्विनी, रोहिणी, पुष्य
नौकरी करना	2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 15	रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र उत्तरायण में	अश्विनी, मृगशिरा, चित्रा, हस्त, पुष्य, अनुराधा, रेवती
स्कूटर, कार, सवारी खरीदना	1 (कृ), 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12, 13, शुक्ल पक्ष में	सोम, बुध, गुरु, शुक्र वारों में	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, हस्त, चित्रा, रेवती
गृहारम्भ (मकान बनाना)	2, 3, 6, 7, 10, 11, 12, 13, शुक्ल पक्ष में	सोम, बुध, गुरु, शुक्र, वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन	उत्तराषाढा, उ०फाल्गुनी, रोहिणी, उ०भाद्रपदा, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, अनुराधा, चित्रा, स्वाति, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती
शिलान्यास (नींव डालना)	गृहारम्भ वाली तिथियाँ	गृहारम्भ वाले वार मास, प्रविष्टा 15, 7, 9, 10, 21, 24, त्याज्य	गृहारम्भ वाले नक्षत्र (अश्विनी, श्रवण त्याज्य)
नव घर में प्रवेश	2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15 शुक्ल पक्ष में	वैशाख, ज्येष्ठ, मार्ग, माघ, फाल्गुन	मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, स्वाति, धनिष्ठा, श्रवण, मूल, उत्तराषाढा, उ०फाल्गुनी, उ०भाद्रपदा, रोहिणी, हस्त
भूमि खरीदने के लिए	1 (कृ), 5, 6, 10, 11, 15 शुक्ल पक्ष में	मंगल, गुरु, शुक्र	मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, मूल, रेवति, रोहिणी
ऑपरेशन कराने के लिए	2, 3, 5, 6, 7, 10, 12, 13	रवि, मंगल, गुरु	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, पुष्य, हस्त

अन्य विविध मुहूर्त							
नाम वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण करना	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	अति शुभ	अशुभ	शुभ	अति शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

नोटः प्रतिदिन क्षौरकर्म (दाढ़ी) करने वालों के लिए शुभाशुभ गौण है।

अलंकार धारण विचारः

चित्रा, विशाखा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा,अश्विनी, हस्ता, रेवती, नक्षत्रों में रवि, शुक्र, वृहस्पति, बुधवार के दिन स्त्री के लिए सुवर्णादि अलंकार (जेवर) धारण करना शुभ होता है।

ग्रह राशि सम्बन्धी रत्न विचार

ग्रह	राशि	रत्न	रत्ती मात्रा	धातु	वार	नक्षत्र	किस उंगली में पहने
सूर्य	सिंह	माणिक्य	5	सोना तांबा	रवि	उत्तराषाढा, उ.फा., कृत्तिका	अनामिका
चन्द्र	कर्क	मोती	4, 6, 11	चांदी	सोम	रोहिणी, हस्त	अनामिका
मङ्गल	मेष वृश्चिक	मूंगा	6, 8, 12	तांबा	मङ्गल	मृगशिरा, चित्रा	अनामिका
बुध	मिथुन कन्या	पन्ना	3, 6, 7	सोना	बुध	ज्येष्ठा, अश्लेषा, रेवती	कनिष्ठिका
गुरु	धनु मीन	पुखराज	3, 5, 9, 12	सोना	गुरु	पुष्य, पुनर्वसु, विशाखा	तर्जनी
शुक्र	तुला वृष	हीरा	1, 3	चांदी	शुक्र	पुष्य, भरणी, पू.फा.	मध्यमा
शनि	मकर कुम्भ	नीलम	5, 7, 9, 12	लोहा	शनि	उ.भा., पुष्य, चित्रा	मध्यमा
राहु	कन्या	गोमेद	5, 7, 9	सीसा, पञ्च धातु	शनि	शतभिषा, स्वाति, आर्द्रा	मध्यमा
केतु	मीन	लह-सूनिया	6, 8, 12	सीसा, पञ्च धातु	शनि	शतभिषा, स्वाति, आर्द्रा	अनामिका

ग्रह कृत अनिष्ट फल निवारण हेतु सूर्यादि ग्रहों के दानादि पदार्थ

ग्रह	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
धातु	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण
उपधातु	ताम्र	चाँदी	ताम्र	काँस्य	काँस्य	चाँदी	लोहा	सीसा	सीसा
रत्न	माणिक	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसूनिया
धान्य	गेहूँ	चावल	मसूर	मूंग	चना	श्याम मूंग, चावल	तिल	उड़द	उड़द
पशु	रक्त धेनु	श्वेत वृष	रक्त वृष	हाथी	अश्व	श्वेत अश्व	भैस	घोड़ा	अजा
रस	गुड़	घृत	गुड़	घृत	शक्कर	घृत	तेल	तेल	तेल
वस्त्र	केशरी वस्त्र	श्वेत वस्त्र	रक्त वस्त्र	नील वस्त्र	पीत वस्त्र	चित्र वस्त्र	कृष्ण वस्त्र	नील वस्त्र	कृष्ण वस्त्र
पुष्प	रक्त कमल	श्वेत पुष्प	रक्त कमल	सर्व पुष्प	पीत पुष्प	श्वेत पुष्प	कृष्ण पुष्प	कृष्ण पुष्प	धुम्र पुष्प
जप संख्या	7 हजार	11 हजार	10 हजार	9 हजार	19 हजार	16 हजार	23 हजार	18 हजार	17 हजार
समिधा	आक्	पलाश	कदिर	अपामार्ग	अश्वत्थ	उदुम्बर	शमी	दूर्वा	कुश
देवता	शिव	दुर्गा	गणेश	विष्णु	कुलदेवता	इन्द्राणि	देवी	भैरव	भैरव

ग्रह दोष निवारण हेतु बीज मंत्र

ग्रह	जपनीय बीजमन्त्राः	जपकाल	जप संख्या	हवन समिधा
सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सूर्योदय	7000	आक् काष्ठ
चन्द्र	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्याकाल	11000	पलाश
मंगल	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	सूर्योदय से 54 मिनट	10000	खैर
बुध	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	सूर्योदय से 2 घण्टे	9000	अपामार्ग
गुरु	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्याकाल	19000	पीपल
शुक्र	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	16000	गूलर
शनि	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्याकाल	23000	शमी
राहु	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	18000	दूर्वा
केतु	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	17000	कुशा

॥ नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्॥

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे रविः॥1॥

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः॥2॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा।
वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः॥3॥

उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः॥4॥

देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः॥5॥

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडा हरतु मे भृगुः॥6॥

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥7॥

महाशिराः महाक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी॥8॥

अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः॥9॥

॥ इति ब्रह्माण्डपुराणोक्तं
नवग्रहपीडाहरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ नवग्रहस्तोत्रम्॥

सूर्य -

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

चन्द्रमा -

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥

भौम -

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥

बुध -

प्रियंगुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

गुरु -

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां तं नमामि बृहस्पतिम्॥

शुक्र -

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

शनि -

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

राहु -

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥

केतु -

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

अथ वास्तु प्रकरण

गृह निर्माण में वास्तु दिग्दर्शन

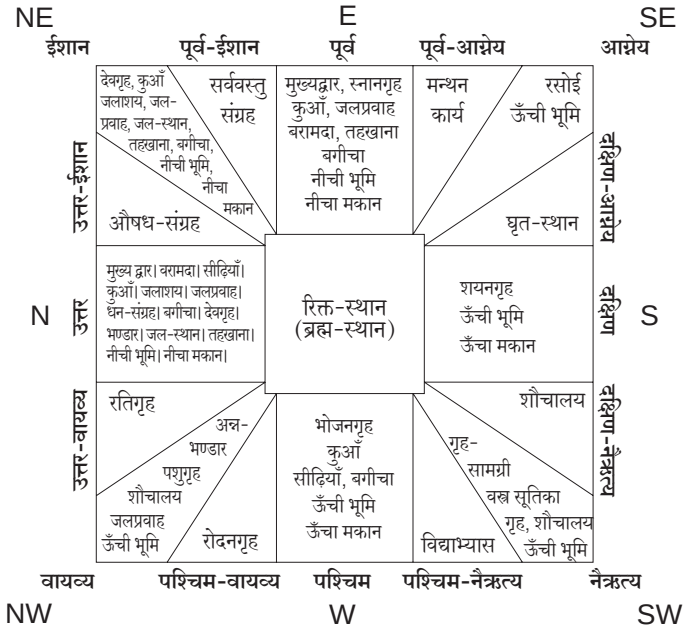

गृह निर्माण तथा वास्तु सम्बन्धी आवश्यक बातें

मकान पूर्व व उत्तर में नीचा और पश्चिम व दक्षिण में ऊँचा होना चाहिए। ऐसा होने से गृह स्वामि की उन्नति होती है।

1. मत्स्य पुराण में आया है कि दक्षिण दिशा में ऊँचा घर मनुष्य की सब कामनाओं को पूर्ण करता है।
2. जिस घर, देवालय, मठ आदि में सूर्य की किरणें और वायु प्रवेश नहीं करती वह शुभ नहीं होता।
3. किसी मार्ग या गली का अन्तिम मकान (जहाँ आगे मार्ग न हो) अशुभ है। ऐसा मकान कष्ट देने वाला है।
4. घर में टूटे-फूटे आसन (कुर्सी आदि) शयनिका और वाहन का होना भी अशुभ है।
5. गृहारम्भ और गृह प्रवेश के समय कुल देवता, गणेश, छत्रपाल और दिग्पति की विधिवत पूजा करें। आचार्य, द्विज और शिल्पी को विधिवत सन्तुष्ट करें। शिल्पी को वस्त्र और अलंकार दें। ऐसा करने से घर में सदा सुख रहता है।

वास्तु दोष दूर करने के लिए अद्भुत अनुभुत उपाय

यदि आपका भवन या निवास स्थान वास्तु सिद्धान्त के विपरीत हो तो कुछ निम्न दैनिक दिनचर्या में परिवर्तन कर आप शुभ फल प्राप्त तथा अनिष्ट प्रभाव से बच सकते है।

1. उत्तर-पूर्व की ओर अपना मुख रखकर पानी पीयें।
2. दक्षिण-पूर्व की ओर थाली रखें और पूर्वाभिमुख होकर भोजन करें।
3. दक्षिण-पश्चिम कोण में सोने से दक्षिण की ओर सिर कर के सोने से नींद गहरी और अच्छी आती है।
4. उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर मुख करके पूजा करने बैठें।
5. द्वार के उपर लक्ष्मी, गणेश, कुबेर, स्वस्तिक, ॐ आदि मांगलिक चिन्ह स्थापित करें।
6. यदि घर में कोई पूजास्थाल नहीं है तो उसे उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में रखें।
7. दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम कोण में कुआँ या ट्यूबवैल है तो उसे भरवाकर उत्तर-पूर्व कोण में कुआँ या ट्यूबवैल खुदवायें। अन्य दिशा में कुएँ को भरवा न सकें तो उसे प्रयोग में लाना बन्द करें अथवा उत्तर-पूर्व में एक और ट्यूबवैल या कुआँ लगवायें जिससे वास्तु का सन्तुलन हो सके।

8. दक्षिण-पश्चिम दिशा में अधिक दरवाजे और खिड़कियाँ हो तो उन्हें बन्द करके उनकी संख्या कम कर दें।
9. रसोई घर गलत स्थान पर हो तो अग्निकोण में एक बल्ब लगा दें।
10. दुकान की समृद्धि बढ़ाने के लिए प्रवेश द्वार के दोनों ओर गणपति की मूर्ति या स्टिकर लगायें। एक गणपति की दृष्टि दुकान पर पड़ेगी, दूसरे गणपति की बाहर की ओर।
11. द्वार दोष और वेध दोष को दूर करने के लिए शंख, सीप, समुद्र झाग, कौड़ी, ताम्बे या सोने की तुश लाल कपड़े में या मौली में बाँधकर दरवाजे पर लटकायें।
12. यदि मकान में चोरी होती हो या आग लगती हो तो भौम यन्त्र की स्थापना करें। यह यन्त्र पूर्वोत्तर कोण या पूर्व दिशा में, फर्श के नीचे दो फीट गहरा गड्ढा खोदकर स्थापित किया जाता है।
13. घर के सभी प्रकार के वास्तु दोष दूर करने के लिए मुख्य द्वार पर एक ओर केले का वृक्ष, दूसरी ओर तुलसी का पौधा गमले में लगायें।
14. यदि किसी व्यक्ति को प्रयत्न करने पर भी निवास के लिए भूमि अथवा मकान न मिल रहा हो तो भगवान वराह के निम्न मन्त्र का जप करें -

॥ ॐ नमः श्री वराहाय धरन्युद्धारणाय स्वाहा॥

15. घर में वास्तु दोष होने पर उचित यही है कि यथा सम्भव वास्तु शास्त्र के अनुसार ठीक करें। जहाँ तक हो सके तो निर्मित मकान में तोड़-फोड़ नहीं करनी चाहिए। तोड़-फोड़ करने से वास्तु-भंग दोष लगता है। यदि घर पुराना होने पर या अन्य किसी कारण से घर में पुनर्निर्माण या तोड़-फोड़ करना आवश्यक हो तो सोने से बने हुए नागदन्त (हाँथी दाँत) अथवा गाय के सींग से वास्तु पूजन करके गिरवाने से वास्तुभंग का दोष नहीं लगता।
16. घर में अखण्ड श्री राम चरित मानस पाठ या भगवन्नाम कीर्तन करने से वास्तु जनित दोष दूर हो जाता है।
17. मुख्य द्वार के उपर सिन्दुर से स्वस्तिक का चिन्ह बनायें। यह चिन्ह नौ अङ्गुल लम्बा तथा नौ अङ्गुल चौड़ा होना चाहिए। घर में जहाँ-जहाँ वास्तु दोष हो, वहाँ-वहाँ यह चिन्ह बनाया जा सकता है।

वास्तुदोष शान्ति के लिये उपयोगी मन्त्र

ॐ नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वदोष हर भव सुखं देहि। शान्ति देहि। सर्वकामान् प्रयच्छ मे। ॐ वास्तुपुरुषाय नमः॥

मकान निर्माण हेतु पृथ्वी की शुभाऽशुभ परीक्षा

1. मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दिखने लगे या दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें। खोदते समय जमीन से पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो, अगर गुठली निकले तो धन नाश हो और अगर हड्डी, राख एवं बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा होती है।

2. एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उस में पानी भर दें। पानी भर कर उत्तर दिशा की और सौ कदम चलें। लौटने पर देखें। यदि गड्ढे में पानी उतना ही रहे तो वह श्रेष्ठ भूमि है। यदि पानी कुछ कम (आधा) रहे तो वह मध्यम भूमि है। यदि पानी बहुत कम रह जाय तो वह अधम भूमि है।

भूमि शयन ज्ञान

संक्रान्ति मिति दिन पाँचवें सप्तम नवम जोय।
10:21:24 में षड् दिन पृथ्वी सोय॥

संक्रान्ति के 5, 6, 7, 9, 10, 21 और 24वें दिन भूमि का शयन होता है। अतः इन दिनों भूमि पूजन वर्जित है।

खातारम्भ (नींव खोदना) दिशा निर्णय

नीचे विभिन्न राशियों में सूर्य की स्थिति के आधार पर राहु मुख की दिशा दी गयी है। घर की नींव राहु-मुख दिशा के पृष्ठ भाग में खोदना (आरम्भ करना) शुभ होता है। उदाहरण के लिए सौर वैशाख मास में सूर्य मेष राशि में होता है, उस समय राहु मुख नैऋत्य कोण में होता है। अतः नींव वायव्य कोण (पश्चिमोत्तर) से खोदना आरम्भ करना चाहिए।

राहु मुख की दिशा	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय
सूर्य की राशि	5, 6, 7	8, 9, 10	11, 12, 1	2, 3, 4
नींव खोदने की दिशा	आग्नेय	ईशान	वायव्य	नैऋत्य

❊ प्राकृतिक उपचार ❊

बच्चों के लिए

1. जब बच्चों के दांत निकल रहे हों तो भुना हुआ सुहागा, शहद, मुलैठी, प्रत्येक 2 ग्राम बारीक करके बच्चों के मसूड़ों पर एक सप्ताह मलने से दांत बिना कष्ट के निकल आते हैं।
2. तुलसी और अदरक का रस समान भाग लेकर थोड़ा सा गुनगुना करके पिलाने से बच्चों के पेट का दर्द ठीक हो जाता है।
3. बच्चों के पेट फूलना, अफरा, तथा खुलकर दस्त न लगने पर तुलसी और पान का रस समान मात्रा में थोड़ा सा गुनगुना कर के पिला दें, अफरा आदि तुरन्त ठीक हो जाएगा।
4. तुलसी के पत्तों का रस 5 या 10 बूँद नित्य थोड़े से पानी में डालकर पिलाने से बच्चों की मांसपेशियां व हड्डियां मजबूत बनती हैं।
5. बच्चों के कान में दर्द होने पर तुलसी के पत्तों का रस थोड़ा सा सहने योग्य गर्म कर कान में डालने से तुरन्त कान का दर्द शान्त हो जाता है।
6. बच्चों का श्वास रोग तुलसी के पत्तों का रस शहद में मिलाकर पीने से दूर होता है।

कब्ज सारी बीमारियों की जड़ हैं। इससे बचाव के लिए निम्नलिखित उपाय करें :-

1. सवेरे शौच से पूर्व, रात को तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी पीना चाहिये।
2. खाने में बेसन का प्रयोग करें।
3. भुने हुए छिलके वाले चने खूब चबाकर खाएं।
4. भोजन के साथ साथ या अलग कच्ची सब्जियां जैसे गाजर, मूली, पालक, खीरा, टमाटर, गोभी आदि का सेवन करें।
5. भोजन के बाद फलों का सेवन करें।
6. 1 या 2 केले कब्ज करते है जबकि अधिक केले खाने से कब्ज दूर होती है।

7. नीम के ताजा 10 पत्ते सुबह-सुबह 15 दिनों तक खाते रहने से रक्त विकार सम्बन्धी रोग जैसे खुजली, फोड़ा, फुनसी आदि में लाभ होता है।
8. रात के भोजन और सोने में कम से कम दो घन्टे का अंतर होना चाहिये।
9. भोजन के बाद 10 मिनट के भीतर लघुशङ्का जाने से गुर्दे का दर्द नहीं होता।

सर्दी जुकाम के लिए

अदरक का रस एक तोला (10 ग्राम), शहद एक तोला (10 ग्राम) गर्म करके दिन में 2 बार पिएं।

मूंह के छालों के लिए

1. एक केला गाय के दही के साथ सेवन करने से कुछ दिनों में छाले ठीक हो जाते हैं।
2. तुलसी के पत्ते तथा चमेली के पत्ते चबाने से मुँह के छालो में राहत मिलती हैं।
3. तुलसी के 6 पत्ते नित्य प्रतिदिन सुबह शाम खाकर ऊपर से पानी पीने से मुंह के छाले व दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

सिर चकराना

1. पेट की गैस से सिर चकराता हो, दौरा पड़ता हो, तो एक प्याली गर्म पानी में नीम्बू निचोड़कर आठ दिन तक पियें।
2. थोड़ी चीनी मिलाकर तुलसी के पत्तों का रस पीने से चक्कर आना दूर होता है।

कान दर्द

1. गर्म राख में प्याज भूनकर उसका पानी निचोड़ कर कान में डालने से दर्द से आराम मिलता है।
2. लहसुन पीसकर, तिल के तेल में मिलाकर कान में डालने से दर्द में आराम मिलता है।
3. तुलसी के पत्ते और मंजरी को पीसकर उसके रस की 4-5 बूँद सूजन वाले कान में डालने से तुरन्त आराम मिलता है।

दिल की धड़कन के लिए

1. दो केले, 1 तोला (10 ग्राम) शहद में मिलाकर खाने से दिल के दर्द से आराम मिलता है।
2. सवेरे 15 दिनों तक 50 ग्राम सेब का मुरब्बा, चांदी के वर्क में लगाकर सेवन करने से दिल की कमजोरी और दिल का बैठना ठीक हो जाता है।
3. यदि दिल बहुत धड़कता हो या घबराता हो तो 50 ग्राम आँवले के मुरब्बे पर दो चाँदी के वर्क लगाकर सुबह निहार मुँह (कुछ भी खाने से पूर्व) 15 दिन खाने से आराम मिलता है।

लू के लिए

1. राख में दो कच्चे आम भूनकर उसका गूदा निचोड़ कर 250 ग्राम पानी में थोड़ी बर्फ और चीनी मिलाकर दो बार पियें।
2. यदि लू लग गई हो तो तुलसी के पत्तों का रस चीनी में मिलाकर पीने से आराम मिलता है।

हैजा

1. दो तोले (20 ग्राम) आम के गर्म-गर्म पत्ते मसलकर आधा कीलो पानी में डुबाकर उबाल लें, जब पानी आधा रह जाए तो छान कर गर्मागर्म दो बार पियें।

2. काली मिर्च के साथ तुलसी के पत्ते पीस कर गोली बनाकर सेवन करने से हैजा दूर होता है।

पीलिया

मूली का तथा मूली के पत्तों का रस 125 ग्राम, 25 ग्राम शक्कर में मिलाकर सुबह के वक्त 15-20 दिनों तक पीने से पीलिया ठीक हो जाता है। खटाई का परहेज करें।

मुँहांसे

12 ग्राम मलाई में चौथाई नींबू निचोड़ कर रोज चेहरे पर मलें।

उल्टी (वमन) के लिए

1. 50 ग्राम पानी में आधे नींबू का रस, एक ग्राम जीरा, एक ग्राम छोटी इलायची के दाने पीसकर मिलाकर दो-दो घन्टे में पिलाने से उल्टी बन्द हो जायेगी।
2. अदरक और प्याज का रस दो चम्मच पिलाने से उल्टी बन्द हो जाती है।
3. तुलसी के पत्तों का रस, छोटी इलायची का चूर्ण थोड़ी सी चीनी में मिलाकर खाने से उल्टी बन्द हो जाती है।

पेट दर्द के लिए

1. नमक, अजवायन, जीरा, चीनी सब दो-दो ग्राम बारीक करके नींबू निचोड़ कर गर्म पानी से खाने से पेट दर्द ठीक हो जाएगा।
2. तुलसी व अदरक का रस गर्म करके पीने से पेट दर्द ठीक हो जाता है।

दांत दर्द के लिए

1. डी.सी लौंग पीस कर नींबू निचोड़ कर दांत पर मलें।
2. खाने वाला सोडा दांत पर मलें।
3. तुलसी के पत्ते तथा काली मिर्च पीस कर गोली बना लें। इस गोली को दर्द वाले दांत के नीचे दबाने से तुरन्त लाभ होगा।

पेट की गैस

1. एक मीठा सेब लेकर उसमें 10 ग्राम लौंग चुभो दें। एक घन्टे बाद लौंग निकाल कर 3 लौंग प्रतिदिन चाय के साथ लें। चावल, प्याज आदि से परहेज करें।
2. लहसुन की 6-7 पोथियां छीलकर प्रतिदिन सुबह शाम जल से सेवन करें, वायु के दर्दों में लाभ होगा।

प्यास के लिए

प्यास अधिक लगती हो तो 40 ग्राम सेब का रस, 40 ग्राम पानी में मिलाकर दिन में एक बार एक सप्ताह तक पियें।

सिर दर्द के लिए

1. गाजर के पत्तों का पानी गर्म करके नाक और कान में डालें, आधा सिर दर्द बन्द हो जाएगा।
2. यदि सिर दर्द पुराना हो तो 15 दिन तक रोज एक मीठे सेब को काटकर नमक लगाकर 5 मिनट बाद खूब चबाकर खायें।
3. तुलसी के पत्तों और नींबू का रस, बराबर मात्रा में पीने से सर दर्द ठीक होता है।
4. सुबह शाम तुलसी के पत्तों का चूर्ण शहद के साथ लेने से आधा सिर दर्द ठीक होता है।

खाँसी के लिए

1. 5 ग्राम अनार का छिलका, थोड़े दूध में मिलाकर पीने से काली खाँसी से आराम मिलता है।
2. अदरक का रस (10 ग्राम), शहद (10 ग्राम) गर्म करके दिन में 2 बार, आठ दिन तक पियें। परहेज – खटाई, दही, लस्सी आदि।
3. तुलसी की मंजरी का चूर्ण बनाकर शहद के साथ लेने से खाँसी दूर होगी।

दमा व खाँसी में पीपल के पत्तों का प्रयोग

1. पीपल के सूखे पत्तों को खूब कूटें। जब चूर्ण बन जाये तब उसे कपड़े से छान लें। एक माह तक रोज सुबह लगभग आधा तोला (6 ग्राम) चूर्ण में शहद मिलाकर चाटने से दमा व खाँसी में स्पष्ट लाभ होता है।

पेट के कीड़े

1. दो सप्ताह रोज खाली पेट 125 ग्राम गाजर का रस पीने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं। बड़े आदमी को गर्म करके पिलाएं।
2. रात को दो मीठे सेब खाने से पेट के कीड़े मरकर निकल जाते हैं।

बाल-झड़ की समस्या

1. पके केले के गुदे में नीम्बु का रस मिलाकर सिर के उस भाग पर लगायें जहाँ पर बाल उड़ गये हो, कुछ ही दिन में बाल आने लगेंगे।

उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रेशर)

1. एक महीने तक रोज सवेरे खाली पेट कड़वे नीम के पके दो फल (निंबोली) पानी के साथ निगलने से उच्च रक्तचाप में लाभ होता हैं।
2. 8-10 किशमिश रात को पानी में भिगोकर सवेरे खाली पेट, चबाकर खाने से इस बिमारी में राहत होती हैं।

3. उच्च रक्तचाप में केवल गाजर का रस पीने से रक्तचाप शीघ्र ही संतुलित हो जाता है।
4. सर्पगंधा को कूट-पीसकर सुरक्षित रख लें। इस चूर्ण को प्रातः व सायं 2-2 ग्राम की मात्रा में खाने से बढ़ा हुआ रक्तचाप सामान्य हो जाता हैं।

खूनी बवासीर के लिये

1. सूखे आंवले को पीसकर 1 चाय का चम्मच-भर, सुबह शाम 2 बार छाछ या गाय के दूध से लेने से खूनी बवासीर में लाभ होता हैं।
2. अनार के छिलके का चूर्ण 8-10 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम ताजे पानी के साथ सेवन करने से रक्त गिरने की शिकायत दूर होती है।
3. रक्तस्रावी बवासीर में इमली के पत्तों का रस पीना लाभकारी होता है।
4. खूनी बवासीर, अजीर्ण और कब्ज में पका हुआ पपीता खाना परम लाभकारी है।

❊ मेथी के गुणकारी लाभ ❊

कितनी ही बीमारियाँ कब्ज के कारण ही होती हैं, जिस पर हम गौर नहीं करते और रोगों के चंगुल में फँस जाते हैं। कब्ज के कारण आँतों में जमा हुआ मल सडने लगता है। शरीर के विभिन्न अंगों में भी मल (सूक्ष्म-मल-क्लेद) जमा होने पर सड़ने लगता है। जिससे शरीर के वे अंग रोगग्रस्त होने लगते हैं। मधुमेह (डायबिटीज) में यह खासकर देखा जाता है, जिससे शरीर में से दुर्गंध आती है तथा खुजली होने लगती है। मेथी इस सूक्ष्म मल को भी निकालकर शरीर के विभिन्न अंगो को साफ कर देती है। इसलिये मधुमेह के रोगियों के लिये यह वरदानस्वरूप है।

मेथी के दानों के साथ मेथी की सब्जी, वह भी कच्ची सब्जी जरूर खानी चाहिये।

सुबह खाली पेट, दोपहर में तथा रात को भोजन के बाद आधा चम्मच (2 से 3 ग्राम) मेथी पानी के साथ फाँकने से जोड़ों में मजबूती आती है। जो व्यक्ति हर रोज नियमित रूप से पानी के साथ मेथी फाँकते हैं, उनके घुटने तथा शरीर के अन्य जोड़ मजबूत रहते हैं। उन्हें गठिया, लकवा, मधुमेह, कब्ज, पेट के विकार, निम्न रक्तचाप, उच्च रक्तचाप आदि नहीं होते। इस प्रयोग से कितनी भी भयंकर कब्ज दूर हो जाती है और सभी प्रकार के वात-विकारों में राहत मिलती है।

कै. उद्धव श्याम पाटील

जन्मः सन् 13 जून 1940 ई.

प्रस्थानः 12 अप्रैल 2024 ई.

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

इनकी याद में

पाडळदा, तालुका. शहादा,
जिला नंदुरबार, महाराष्ट्र निवासी
श्रीमती उर्मिला उद्धव पाटील
राजेंद्र उद्धव पाटील,
जितेंद्र उद्धव पाटील,
सौ. ज्योती जितेंद्र पाटील,
भूषण जितेंद्र पाटील,
सौ. काजल भूषण पाटील,
मंदार भूषण पाटील.
ने समाज के लाभार्थ यह सेवा
गुरुचरणों में समर्पित की हैं।

***